निवेदन.

अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी. श्रीमद् बुद्धिसागर ग्रन्थमाळाना ६० मणका तरीके पूजा संग्रह ग्रन्थ के जेना रचयिता, शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी छे ते सं. १९७९ नी सालमां प्रारंभमां बहार पड्यो छे. तेनी किंमत रु. १-०-० राखवामां आवी छे. सूरिजी महाराज साहेबनी रचेली पूजाओ अपूर्व भाव रसवाळी अने अध्यात्मज्ञानभक्तिरसथी भरपूर छे. आ ग्रन्थ छपाववामां सद्गृहस्थ जैनो तरफथी भेट मळवाथी किंमत जूज राखवामां आवी छे, आ मंडळ तरफथी सस्ती किंमते पुस्तको वेचाय छे, तेम जैन कोम सारी रीते जाणे छे. मंडळ तरफथी अनेक पुस्तको छपावीने बहार पाडवानी इच्छा थाय छे पण धन-वंतोनी मदद विना ते कार्य बनी शके तेम नथी. मंडळनी पासे सघन फंड नथी. छतां ते सहायकारकोनी मददथी उत्तम पुस्तको बहार पाडया करे छे. जे जे गृहस्थोए आ पुस्तक छपाववामां धननी मदद करी छे तेओनां सुवारक नामोने अत्र धन्यवाद पत्रमां छप-ववामां आव्यां छे, तथा तेओए केटला रुपियानी मदद करी छे ते पण धन्यवाद पत्रमां जणाव्युं छे. अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफ-

धन्यवाद.

आ पूजासंग्रह ग्रन्थ गुरुराजथी शास्त्रविशारद् जैनाचार्य योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरजी महाराज ज्यारे संवत १९७७नी सालेनुं चोमासुं श्री संघना आग्रहथी साणंदमां बिराजता हता, त्यारे महेता त्रिभुवनदास तथा चुनीलाल उमेद वगेरेए पोताना भाइना स्मरणार्थे प्रसिद्ध करवा सहाय आपवानुं जणाव्याथी तेमनी विनंतिथी गुरुमहाराजे रच्यो छे. केटलोक भाग साणंदमां, केटलोक भाग महेसाणामां अने केटलोक भाग गुरुराजश्रीए पोतानी जन्मभूमि विजापुर शहेरमां बनावेल छे. आ उपयोगी ग्रन्थना प्रकटार्थे नीचे जणावेल बंधुओ तरफथी द्रव्य सहाय मळी छे माटे ते आपनार अने अपावनार अने अपावनानी अनुमोदना करनार सर्वने धन्यवाद आपवामां आवे छे तथा द्रव्य सहायकोनी नोंध लेवामां आवे छे. सद्ज्ञानना प्रचारार्थे द्रव्य सहाय सर्वे करतां अति उत्तम अने प्रशंसनीय छे, अने तेनुं फळ अनहद छे. ते दानवीरो जाणवाज हशे.

३००–०–० महेता गोविंदजी उमेदभाइना स्मरणार्थे महेता त्रिभुवनदास तथा चुनीलाल तथा तेमना पुत्र दलसुखभाइए आप्या. मु. साणंद

१००–०–० महेता रायचंदभाइ रवचंदभाइए पोताना पुत्र त्रिभुवनना स्मरणार्थे मु. साणंद

१२५-०-० बाइ मंची महेता रायचंद करमनभाइनी पत्नीए आप्या. मु. माणंद

१८०-०-० गांधी वर्धीलाल रायचंदनी व्हेन हरकोरे संवत् १९३८ ना कारतक वदि ६ ना रोज गोधावीनो संघ काढ्या त्यारे आप्या ते. मु. माणंद

५०-०-० एक गृहस्थ. मु. साणंद

१५० ०-० शेठ छगनलाल गीगाभाइ. मु. माणंद

२५० ०-० शेठ भोगीलालभाइ वीरचंदभाइ जे. पी. गोधावी हाल अमदावाद तथा मुंबइ.

[illegible]

उपरना विगते आ ग्रन्थमा मदद मळी छे. संवत १९३८ ना कारतक वदि ६ ना रोज वाडीलाल रायचंदना गोधावीनो संघ काढ्यो हतो ते संघमा पुस्तकोथी [illegible] हतां ते वखते गोधावीमां साणंदथी [illegible] आव्युं हतुं. अत्र शेठ मगनलाल करमचंदजीनी सम्मतिथी पुस्तक प्रसिद्ध करवामां रू. [illegible] नी मदद मळी हती. जे पैकी रु. २५०) नी नोंध आ ग्रन्थमा लेवामां आवी छे. साणंदमा श्रीसागरगच्छमा [illegible] वखतथी एक उपाश्रयनी खामी हती ते दूर करवा महेता रायचंद कर-

सनभाइनी विचवार रु. १००००) दसहजारनी मदद आपवाथी वाकीना रुपीया श्रीसागर संघना काढी एक भव्य धर्मशाला (उपाश्रय) बंधावेल छे. आ प्रमाणे आ पुस्तकना प्रसिद्ध करवा अर्थे जे जे बंधुओए सहाय आपी छे ते सर्वेनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवामां आवे छे. भविष्यमां आवा अनेक ग्रन्थो प्रगट करवामां तेओ सहायक बनो, एम अंतःकरणनी ऊंडी लागणीथी इच्छवामां आवे छे.

लि. अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ तरफथी.
वकील शा. मोहनलाल हिमचंदभाइ.
मु. पादरा.

संवत १९७२
कार्तिक पूर्णिमा.

अने सद्गुरु चरणोपासक
किंकर. शा. आत्माराम खेमचंद.
मु. साणंद.



निंवार्क, वल्लभाचार्य, स्वामीनारायण वगेरे परमेश्वरने साकार माने छे अने भक्तोना उद्धार माटे परमेश्वर वारंवार जन्म अवतार ले छे एम माने छे. रामानुज वल्लभाचार्य मतवादीओ परमेश्वर सदा साकाररूपी रहे छे एम माने छे. शंकराचार्यवाळा वस्तुतः परमात्माने निराकार माने छे अने विवर्तवादनी दृष्टिए परमेश्वरनां अमुक प्रतीको कल्पीने तेने साकार इश्वर तरीके माने छे. नैयायिको अने वैशेषिको परमेश्वरने निराकार माने छे. पतंजलिए पातंजलयोगदर्शनमां परमात्माने निराकार मान्यो छे. आर्य समाजीओ परमेश्वरने निराकार माने छे. खीस्तिओ परमेश्वरने साकार माने छे. बौद्धो परमेश्वरने साकार तथा निराकार माने छे. जैनो परमेश्वरने साकार तथा निराकार माने छे. हिंदुओ, मुसलमानो, खिस्तिओ, जैनो, बौद्धो अनेक दृष्टिबिंदुओनी अपेक्षाए परमेश्वरनी द्रव्यपूजा तथा भावपूजाने माने छे. द्रव्य ते भावनुं कारण छे. साधनथी साध्यनी प्राप्ति थाय छे. ज्यां सुधी केवलज्ञानी परमात्माओ अघाती कर्मना योगे शरीरमां रहेला होय छे त्यां सुधी ते साकार परमेश्वरो छे, अने सर्व कर्मथी रहित थै सिद्धबुद्ध परमात्मा थाय छे त्यारे ते निराकार परमेश्वर तरीके गणाय छे. साकार परमेश्वरमां अरिहंत, जिन, आचार्य, उपाध्याय अने मुनि गुरुनो समावेश थाय छे. अष्टकर्म रहित सर्व शुद्धात्माओनो निराकार परमेश्वरमां समावेश थाय छे. आत्माना असंख्य प्रदेशो अने तेमां रहेल अनंतज्ञान ज्योतिने अनंत नूर तेज सागर कहेवामां आवे छे. श्रद्धाप्रीति ज्यां छे त्यां अवश्य प्रतिमा

रागीओ गुरुनी पूजा भक्ति करे तेथी तेओना आत्मानी शुद्धि थाय छे. श्री घंटाकर्ण महावीर ए जैनशासन देव छे. शांतिस्नात्रमां अष्टोत्तरी स्नात्रमां अने प्रतिष्ठा विधिमां श्री घंटाकर्ण वीरनी स्थाली यंत्रवाळी मंत्रीने वेदिका उपर स्थापवामां आवे छे. श्री सकलचंद्रजी उपाध्यायजीए प्रतिष्ठा विधिनी संस्कारित योजना करी छे. शांतिस्नात्र अने अष्टोत्तरी स्नात्र विधिनी योजना पण तेमना वखतमां तथा जगद्गुरु तपागच्छ गगनभानु समान श्री हीरविजयजीना वखतमां थएली छे अने ते वखते आचार्योए जैनशासन देवता तरीके श्री घंटाकर्ण महावीरनी प्रसिद्धि करी छे अने ते परंपरा आज सुधी तपागच्छमां चाली आवे छे. श्री महुडी (मधुपुरी) गाममां शासन यक्ष तरीके श्री पद्मप्रभु जिनेश्वर देवनी आगळ एक देरी करी श्री घंटाकर्ण महावीरनी मूर्तिनी अमोए प्रतिष्ठा करी छे. ते शासनयक्षनो चमत्कार प्रभावक सर्वत्र विस्तार पाम्यो छे. घंटाकर्ण कल्प वाचवाथी तेमनो प्रभाव समजाशे. जेटला शासन देवो अने देवीओ छे तेओ समकित धारी छे तेओ साधर्मिक बंधु तरीके छे. गृहस्थ श्रावको जैनो तेमनी शासन प्रभावक साधर्मिक तरीके सेवा भक्ति करे छे अने तेथी शासनपक्ष देवो, गृहस्थ जैनोने धर्म साधतां संकट पडे छे ते काले सहाय करे छे. अमोए गृहस्थ जैनोने साधर्मिक देव तरीके तेमनी पूजा भणाववानो तेमनी मूर्त्ति आगळ अधिकार छे एवुं जाणी तेओ माटे पूजा रची छे के जेथी जैनो पोते, मिथ्यात्वी देवो अने देवी-

करे, प्रभु वीतरागना गुणोनुं बहु मान करे अने आनंदथी गायतो पूजा भक्तिनुं वातावरण एवुं उभराइ जायके जेथी तद्धेतु अनुष्ठान अने अमृत अनुष्ठाननो आनंद रस प्रगटे. जिन मंदिरमां पूजा भणावती वखते सर्व श्रावकोए नियमसर बेसवुं. पूजा भणाववामां विधिनो ख्याल करवो अने आशातनाना दोषो टाळवा. वेठनी पेठे पूजा न भणाववी. मोक्ष माटे पूजा भणाववी. शुद्ध भक्त स्नात्रीयाओ करवा. पतासांनी लालचेज पूजामां सामेल थवुं ते विषानुष्ठान छे, माटे पूजा भणाववामां, गावामां अने पूजा श्रवण करवामां साध्य लक्ष्य राखवुं. गातां आवडे, सारुं गानारा गवैयाओ गाय, वाजिंत्रनी सारी धामधूम देखाय, तेटला माटेज पूजामां जवुं एवुं न धारवुं. परंतु सारी रीते गावुं. पूजाओ गातां तेना अर्थनो विचार करवो, आत्मामां प्रभु भक्तिनो हर्षोल्लास प्रगटाववो अने प्रभुवीतरागना गुणोने प्रगटाववा खास लक्ष्य राखी सर्व पूजानी साधन सामग्री सेववी अने साध्य लक्ष्यनो केन्द्रसमान उपयोग भूली न जवो. श्रीमद् देवचंदजी महाराजे कह्युं छे के.

स्वामी गुण ओळखी स्वामीने जे भजे,
दर्शन शुद्धता तेह पामे;
ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी,
कर्म जीपी वासे मुक्ति धामे, तार० ॥

प्रभु महावीर देवना गुणोनो प्रथम जाणी अने पछी प्रभु महा- [illegible] देवनी जे पूजा सेवा करे छे ते आत्माना सम्यग् दर्शननी [illegible] प्राप्त करे छे. सम्यग् दर्शननी शुद्धताना पछे ज्ञान चारित्र [illegible] गुणना उल्लासने प्रगटावीने ते आत्माना शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र गुणने पामीने तथा अष्ट कर्मनो क्षय करीने मुक्ति धाममां [illegible] प्रथम ज्ञान प्राप्त करीने पश्चात् पूजा वगेरेनी क्रिया करवी. [illegible] त्याग करी प्रथम पूजाओनुं सारी रीते ज्ञान [illegible] साधु गुरु अने दक्ष श्रावक पासेथी पूजाओना अर्थ [illegible] पूजाना गीतोद्वारा प्रभुनी पूजा करवाथी श्रावको [illegible], त्यागी मुनियो प्रभुनी आगळ भावनाथी पूजाओ [illegible] पुजा करता नथी. कारण के तेओए द्रव्य [illegible] छे. पूजा भणावतां आत्मोल्लासथी अनेक क- [illegible] थाय छे.

[illegible] पूजाओ [illegible] प्रगास कर्यो छे. सम्यक्त्व दृष्टि- [illegible] तेमांथी गुण मात्र ग्रहण करशे अने [illegible] शोधी लेशे. गुणानुरागी जे भक्तो हशे [illegible] ग्रहण करशे.

[illegible] अष्ट प्रकारी पूजा [illegible] देरासरमां भणावी हती. [illegible] [illegible] पुनः [illegible]. डा. [illegible] अनुसार, [illegible]. नवुभार

नाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिकृत पूजा संग्रह.

विषयानुक्रमणिका.

पूजासंग्रहनुं अशुद्धि शुद्धि पत्रक,

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
७	३	घूनो	धूनो
१०	१५	घोदकर्या	गंधोदकर्या
१६	१४	लइ	लहे
१७	७	स्नात्रया	स्नात्रीया
१९	६	भावरे	भावेरे
३२	४	जइजो	जेइजो
३९	१४	अनंत	अनंता
४६	१०	बासना	वासना
४८	१७	उँ हूँ	ॐ ह्रीं
६७	१२	पुन्य	पुन्ये
७४		तप पूजाना होरीना रागमां बीजा पदने अंते रे अने तप एम बे सुधारीने वांचवुं.	
७६	२	कीधुं	दीधुं
७९	७	आस्रवने	आस्रव
९३	१६	लब्धि	लब्धि
१०३		ज्यां ज्यां ग्रस होय त्यां ग्रस्र वांचवुं.	
१०६		मैत्री भावनानी आरणिकवस्त्री देशी पूजानां बीजा अने चोथा पदने अंते रे उमेरवो.	

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
११५	६	करवा	करवां
१४५	२	शुद्रो	शुद्धो
१४७	५	गुण न	गुण ने
१४७	६	शक्तियां	शक्तियो
१४९	१३	उपदशने	उपदेशने
१५२	३	नानार	नरनार
१५२	१३	भवोदर्ि	भवोदधि
१५३	१३	तमारंजो	तमोरजो
	१४	सेघनारे	सेवनारे
१५६	११	कथ्यां। र	कथ्यांसार
१५८	२	वादीए	वांदीए
१५९	१०	आखमां	आंखमां
१६०	२	जथी	जेथी
	१२	विकामरे	विकासेरे
१६४	३	लाभार्य	लाभार्थ
१८२	५	परपुद्गल	परपुद्गल
१९०	८	पूर्जा	पूजा
१९१	१२	भवोदधिमा	भवोदधिमां
२२४	११	बाधे	धाधेरे

पृष्ठ	लींटी	अशुद्धि	शुद्धि
२३३	३	मनमा	मनमां
२३६	७	दीजीए	दीजीए
”	९	द्रव्यार्थिकमये	द्रव्यार्थिक
२४०	१४	शाश्वता	शाश्वतां
२४२	१८	समकितदा	समकितदा
२६१	४	गुणरंगी	गुणरंगो
२६३	७	सवळा	सवळा
२८३	१५	कया	कयां
२९१	११	कलश छे तेमांनो एक कलश भणाववो.	
३०६	४	पूजता	पूजतां
३१६	१०	मारी	सारी
३२५	१	पुष्पं	पुष्पं
३३६	८	टाळेरे	टाळे
३३९	१४	माहि	मांहि
३४४	१२	ग्राम	ग्राम
३५२	१५	नैवेद्यं	नैवेद्य. ॥
३५९	१३	निम	निम
३५९	१५	आरते	आरते.
		नमो	नमो ॥

ज्यारे 'सौधर्मेन्द्रे पंच रूप करी' ए पद पूरुं बोल
त्यारे जळनो प्रभुने अभिषेक करे. पछी ते ढाळ
थया पछी भगवानने सिंहासनमांथी बहार लइ
पाणीथी न्हवण करावी अंगलूहणां त्रण करी च
पूजा करे. पछी आरति मंगल दीवो करवो.

आ विधि सामान्य प्रकारे लखी छे. परंतु
नामावडी लखी छे त्यां उत्तम वस्त्रोनो उपयोग
वा उत्तम उत्तम द्रव्यनो उपयोग शक्ति प्रमाणे
तो ते उत्तम छे.

"अथ जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिकृत"

अथ स्नात्रपूजा प्रारंभ:

दुहा

सर्वातिशये शोभता, प्रभु महावीर जिनेश,
शासन नायक जगपति, प्रणमुं हुं विश्वेश. ॥ १ ॥
प्रभु स्नात्रनी भावना, करतां शान्ति थाय; रोग
शोक दूरे टळे, स्नात्रपूजा महिमाय. ॥ २ ॥

॥ ४ ॥ सिद्धारथराजाना हूकमे, जोषीओ त्यां आ-
व्या, पुर बाहिर सुरम्य सभामां, अर्थ विचारे फाव्या,
ज्योतिषिओ भेगा थइने, बोले साची वाणी; तीर्थंकर
वा चक्रवर्ती तुज, पुत्र थशे गुणखाणी. ॥५॥ राजा
राणी अति हरखायां, ज्योतिषी संतोष्या; दानादि-
कथी धार्मि लोको, याचकने संतोष्या; भारतमां सहु
घरघर लोको, जाणी आनन्द पाया, त्रिशलामाता
गर्भने पोषे, धरे निरोगी काया. ॥ ६ ॥ चैत्र शुदि
तेरशना दिवसे, मध्यरात्रि थइ जातां; सर्व दिशाओ
उज्वलशान्ति, आनन्दवाळी सुहातां; नव महिनाने
साडा सातज, दिवस उपरे थातां; त्रिशलामाताए
प्रभु जनम्या, त्रिलोके थइ शाता. ॥७॥ भारतदेशे
घरघर मंगल, घरघर हर्ष वधाइ, सिद्धारथ राजा
मन आनन्द, प्रगट्यो लोक न माय. ॥ ८ ॥ शुभ
लग्ने जनम्या प्रभु, त्रणभुवन उद्योत; नारकी पण
आनन्दीयां, जेनी अनंत ज्योत. ॥ ९ ॥

श्री अरिहंत पद गाइए, ध्याइजे सुखकारेरे; अरिहंत जेवा थाइए, दोष रहे न लगाररे. श्री अरिहंत० ॥१॥ नमण ठवण द्रव्य भावथी, अरिहंत गातां ध्यातांरे; आतम अरिहंत पद वरे, कर्म सकल दूर जातांरे. श्री अरिहंत० ॥ २ ॥ वीश स्थानकने सेवतां. द्रव्य भावथी भावरे; तीर्थंकर कर्म बंध ए, पूर्व त्रीजा भव थावेरे. श्री अरिहंत० ॥ ३ ॥ वीश स्थानमय आतमा, भावथी हर्षोल्लासेरे; उज्ज्वल शुभ परिणामथी, अर्हत् पदवी प्रकाशेरे. श्री अरिहंत० ॥ ४ ॥ अरिहंत नामना जापथी, स्थापनामां प्रभु ध्यावेरे, द्रव्य भाव बे भेदथी, आतम जिनवर थावेरे. श्री अरिहंत० ॥ ५ ॥ तीर्थंकर नाम कर्मने, आतम ज्यारथी बांधेरे, द्रव्य तीर्थंकर त्यारथी, क्षीण मोही गुण साधेरे. श्री अरिहंत० ॥६॥ जन्म-थकी त्रण ज्ञान छे, मति श्रुत अवधि प्रमाणेरे; चोथुं दीक्षा ग्रहे थके, मन पर्यव दिल जाणेरे. श्री अरिहंत० ॥ ७ ॥ गुण स्थानक चोथा थकी, बारसा

संसारी जीवोना जेओ, अनंत नागे सुहायारे. भविका. सिद्ध० ॥ ४ ॥ क्षायिक भावे सिद्ध थया जे, पुद्गल संगथी न्यारा; परिणामिक भावे जीवनता, जेहने नहीं आकारारे. भविका. सिद्ध० ॥ ५ ॥ वर्ण गंध रस स्पर्श रहित जे, आप स्वरूपे रुपी; पुद्गल रूपे जेह अरूपी, वर्ते रूपारूपीरे. भविका. सिद्ध० ॥६॥ आठे कर्मनो नाश करीने, आठ गुणे जे शोभे; व्यतिरेकी एकत्रिंश गुणी जे, भविजननां मन थोभेरे. भविका. सिद्ध० ॥ ७ ॥ अनंत गुण पर्याये जेओ, आविर्भावे सुहावे; प्रणमु गावुं ध्यावुं सिद्धो, मोह टळे सुख थावेरे. भविका. सिद्ध० ॥ ८ ॥ अनंत सिद्धनी ज्योतिर्मांही, अनंत सिद्धो उद्योते; त्रण काळमां नित्य छे जेओ, जीवे भावोद्योतेरे. भविका, सिद्ध० ॥ ९ ॥ सिद्ध स्वरूपी आतम भावी, सिद्धानंदने पामे; एक समयमां ऊर्ध्वगतिथी, सिद्ध स्थानमां जामेरे. भाविका. सिद्ध० ॥ १० ॥ आत्मिक शुद्ध समाधि प्रकटे, मुक्तिनुं सुख प्रगटे; निर्विकल्प समाधि ज्ञाने, सर्वावरणो विघटेरे. भविका. सिद्ध० ॥ ११

तृतीया आचार्यपद पूजा.

छत्रीशी छत्रीशी गुण वर्के, सूरिपद सुखकार;
गातां पूजतां ध्यावतां, सूरिपणुं निर्धार. ॥ १ ॥
द्रव्य क्षेत्रने कालथी, भावथी सूरि महंत; तीर्थेश्वर
पाछळ प्रभु, राजा शोभे संत. ॥ २ ॥ जिन शासन
साम्राज्यमां, संघ चतुर्विध भूप; वर्तमानमां संघना,
प्रभु जे धर्म स्वरूप. ॥ ३ ॥

धन्य धन्य संप्रति साचो राजा. ए राग.

प्रेमे प्रणमुं श्री सूरीश्वर, जैनधर्मना धोरीरे;
चार प्रकारे संघोन्नतिनी, जेना हाथमां दोरीरे. प्रेमे.
॥ १ ॥ सूरि मंत्रनो जाप करेने, धर्माचार प्रचारेरे;
पंचाचारने पाळे पळावे, संघनुं श्रेय विचारेरे, प्रेमे.
॥ २ ॥ द्रव्यादिक अनुसारे वर्ते, संघने जे वर्तावेरे;
बत्रीश उपमा जेने छाजे, धर्मने रक्षे भावेरे. प्रेमे.
॥ ३ ॥ गौणने मुख्यपणे सहु आशय, सर्व धर्म
समजावेरे; सर्वनयोनी सापेक्षाए, स्वाधिकार जणा-
वेरे प्रेमे० ॥ ४ ॥ द्रव्यभावथी सर्व संघनी, प्रगतिने

व्यय जे मानेरे. प्रेम० ॥ १२ ॥ निश्चयने व्यवहारे वर्ते, संघना श्चेक्यने साधेरे; एवा आचोरोने विचारो, आपी गुणोथी वाधेरे, प्रेम० ॥ १३ ॥ सारण वारण चोयणने जे, पडिचोयण गुणधारीरे; जे श्रुत केवली स्वपर समयना, ज्ञाता गुणगण धारीरे. प्रेम० ॥१४॥ तीर्थंकर सम सूरि करे ते, क्षेत्रने कल्पानुसारेरे; धर्माचारमां जेह सुधारो, करता स्वाधिकारेरे, प्रेम० ॥ १५ ॥ पढया पढंता क्षुद्र प्रभेदो, टाळे उदार विचारेरे; चातुरराज्यसम धर्मराज्यना, उन्नति हेतु धारेरे, प्रेम० ॥ १६ ॥ चार निक्षेपे सूरिवर पूजो, वंदो गावो ध्यावोरे, बुद्धिसागर परम प्रभुता, परमानंदने पावोरे, प्रेम० ॥ १७ ॥

आतम ते आचार्य छे, उपादान स्वभावेरे, क्षयोपशमने उपशमे, क्षायिक गुणगणदावेरे. आतम० ॥ १८ ॥ पूजो वंदो नादथी, गावोने मन ध्यावोरे, आतमस्वभावे सहजथी, शुद्धोपयोगे सुहावोरे, ज्ञानम० ॥ १९ ॥ आत—

षष्ठी दर्शनपद पूजा.

शुद्धातम दर्शन थतुं, निश्चय दर्शन तेह; देव गुरुने धर्मनी, श्रद्धा दर्शन एह. ॥ १ ॥ दर्शन छे व्यवहारथी, निश्चयथी सुखकार; सम्मसठ बोले अलंकर्युं, धारो नरने नार. ॥ ३ ॥ दर्शन पाम्यो आतमा, निश्चय मुंक्ति जाय; जडचेतन सम्यक्पणे, जाणी नहि मुंझाय. ॥ ४ ॥

ए गुण वीरतणो न विसारु. ए राग.

सम्यग् दर्शन जग जयकारी, सर्व जीव हित-कारीरे; प्रभु महावीर जिन उपदेशे, पामो नरने नारीरे. सम्यग्० ॥ १ ॥ द्रव्यजाव वे जेदे दर्शन, निश्चपने व्यवहारेरे; देव गुरुने धर्मनी श्रद्धा, जेदे प्रण्य प्रकारेरे. सम्यग्० ॥ २ ॥ आतम ते निश्च-यथी देवज, आतम ते गुरु जाणोरे; आतममांही सत्य धर्म छे, निश्चय दर्शन मानोरे. सम्यग्० ॥ ३ मुनिभावे छे निश्चय समकित, रत्नत्रयी अजेदेरे; सापेक्षाए जाणी पामो, रहो न आतम खेदेरे. सम्य॰

सांजळशो मुनि संयमरागे, ए राग.

निश्चयथी दर्शन ते आतम, उपशमने क्षयोपशमेरे; क्षायिक दर्शनरूपी आतम, पडो न मिथ्या जर्मेरे. नि० ॥ १२ ॥ आत्मप्रतीति अनुभव आवे, जलपंकजवत् न्यारोरे; निर्लेपी आतम गुण खेले, आनंद अपरंपारोरे. नि० ॥ १३ ॥ निकाचित जे कर्मना भोगो, त्यां नहीं शोकने प्रीतिरे; निर्जरतो कर्मोने जोगे, आतम सुख प्रतीतिरे. नि० ॥ १४ ॥ पंचवार उपशम घट प्रगटे, क्षायोपशमी असंख्यरे; एकवार क्षायिक समकितनी, प्राप्ति थतां निःशंकरे; नि० ॥ १५ ॥ चार निक्षेपे सात नयोथी, सम्यगदर्शन समजोरे; बुद्धिसागर आत्मस्वभावे; श्रद्धा प्रेमे रमजोरे; नि० ॥ १६ ॥

सकृदपि प्रतिपत्तिरह्रो नृणां ।
भवति यस्य भवस्थिति मापिका ॥
शिवसुखं प्रतिकन्दलतां दधत् ।
नमत तद्गुरु दर्शनमादरात् ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परम.

सप्तमी ज्ञानपद पूजा.

ज्ञान ते आत्मस्वरूप छे, चेतन गुण छे ज्ञान; ज्ञान विना नहीं मुक्तिछे, वीर कहे भगवान्. ॥१॥ ज्ञानथी आनंद उपजे, ज्ञानथी विश्व प्रकाश; ज्ञान विना जगजीवडा, पग पग दुःखी दास. ॥२॥ ज्ञानीने पूजो भवी, सेवो नरने नार; ज्ञानावरणना नाशथी; व्यक्त ज्ञान सुखकार. ॥३॥

ध्यान क्रिया मनमां आणीजे. ए राग

ज्ञानने सेवो ज्ञानीने सेवो, ज्ञान जणोने जणावीरे; ज्ञानाभ्यासीने स्हाय करो भवी, शास्त्रो लखावो छपावीरे. ज्ञान० ॥१॥ जैनधर्म जगमां फेलावो, ज्ञानीओ प्रगटावीरे; ज्ञान विना नहि शासन चाले, ज्ञानछे मुक्तिनी चावीरे. ज्ञान० ॥२॥ श्रुत केवली केवली सम जाणो, ज्ञानथी धर्म प्रचारोरे; जयवंता तीर्थो ज्ञानीओ, जैनधर्म आधारोरे. ज्ञान० ॥३॥ ज्ञान विनानुं जीवन जड छे, आतमजीवन छे ज्ञानेरे;

ज्ञानी ध्यान समाधि पामे, वर्ते शुद्धातम तानेरे; ज्ञान० ॥४॥ ज्ञानीनो जे विनय न सेवे, तेने छे अतिचाररे; ज्ञानीनी आशातना टाळो, सफळ करो अवताररे. ज्ञान० ॥ ५ ॥ ज्ञानु आगळ तम नहि रहेतुं, ज्ञानी आगळ अज्ञानरे; ज्ञानी घटमां दोष रहे नहीं, ज्ञान स्वतंत्र प्रमाणरे. ज्ञान० ॥ ६ ॥ ज्ञानथी चारित्र प्रगटे साचुं, ज्ञान छे श्रेष्ठ पवित्ररे; स्वपर प्रकाशक ज्ञान छे सुंदर, तेथी वशमां छे चित्तरे. ज्ञान० ॥७॥ ज्ञानीनी आज्ञाए द्राखादूल, पीतां मुक्ति थातीरे; अज्ञानी वचने अमृतने, पीतां न शांति सुहातीरे. ज्ञान० ॥८॥ पिंडस्थादिक ध्यानने ध्यावे, धर्म शुक्ल घे ध्यावेरे; ज्ञानी ध्याननी सूक्ष्म क्रियाथी, क्षणमां मुक्ति पावेरे. ज्ञान० ॥९॥ ज्ञाननी दासी सर्व क्रिया छे, ज्ञानी पासे किरियारे; ज्ञाने जगमां अनंत जन्यो, भवसागरने तरियारे. ज्ञान० ॥ १० ॥ असंख्य योग छे मुक्तिना हेतु, ज्ञानयोग सहु मोटोरे; ज्ञानीनी सेवा भक्तिथी, रहे न कोई तोटोरे. ज्ञान० ॥ ११ ॥ ज्ञानीने पूजो ज्ञानी ने वंदो, ज्ञानी छे अप्रमादीरे;

शुष्कज्ञानी एकांतवादी, क्रियाजड़ी उन्मादीरे. ज्ञान० ॥१२॥ परोक्ष प्रत्यक्ष ज्ञान बे भेदे, श्रुत स्व-पर उपकारी रे; बुद्धिसागर सद्‌गुरु संगे, रहेशो नरने नारी रे. ज्ञान० ॥१३॥

वीर जिनेश्वर उपदिशे, ज्ञान सकल उपकारी रे; चार निक्षेपे ज्ञानने, समजो नर अने नारी रे. वीर० ॥१४॥ मति अट्ठावीश भेदे छे, श्रुत छे चउदश भेदे रे; अवधि असंख्य प्रकार छे, रूपी वस्तु वेदे रे. वीर० ॥१५॥ मन पर्यव बे भेदे छे, मननां पुद्‌गल जाणे रे; केवल रूपारूपीना, सहु पर्याय पिछाने रे. वीर० ॥१६॥ अध्यातमज्ञाने भवी, केवलज्ञानने पामे रे, बुद्धि-सागर आतमा, परम प्रभु थै जामे रे. वीर० ॥१७॥

सकल वस्तुसमूहविभासनं ।
प्रचितकर्मविनाशनकर्मठम् ॥
गुणगणावगमं मतिमुख्यकं ।
किमिदं रमिदं प्रणिदध्महे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री परम.

चारित्ररे; बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, आतम पूर्ण पवित्र. आतम० ॥ १६ ॥

रमणतात्मगुणेषु हि यत्रच ।
विगतनूतनकर्मपथं च यत् ॥
जगति जीवसमूहसुवल्लभं ।
सुललितं चरणं हृदि धारये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीं परम.

नवमी तपपद पूजा.

द्रव्यभावथी तप तपे, सकल विघ्न दूर जाय; पचाश लब्धि उपजे, जय जय तप महिमाय. ॥ १॥ तप तपतां कष्टो टळे, दुःखो दूरे जाय; सर्व कर्म दूरे टळे, पग पग मंगल थाय. ॥ २ ॥ तपना भेद अनेक छे, तपना बार प्रकार; पुजो वंदो तपस्वीने, तप तपशो नरनार. ॥ ३ ॥

नमोरे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर.

पूजो वंदो तप गुण धारी, तप तपशो जयकारे; तप तपतां अट्ठावीश पचाश, लब्धि प्रगटे सा-

रे. पू० ॥ १ ॥ सर्व शुभाशुभ इच्छा रोधक, तपथी शक्ति प्रकाशेरे; निष्कामी थै कार्यो करतां, तप छे जाणो पासेरे. पू० ॥ २ ॥ देव गुरुने संघनी सेवा, भक्ति तप छे वेशरे; धार्मिक कर्म करतां संकट–सहवां दुःखो कलेशरे.पू०॥३॥आत्मार्थे परमार्थे प्रवृत्ति,करतां भय नहि खेदरे; द्वेष न प्रगटे तप ए तपतां, नासे मोहना भेदरे. पू० ॥ ४ ॥ मन वाणी कायानी शुद्धि, धरवी तप जयकाररे; सर्व शुभाशुभ फलनी इच्छा-त्यागथी तप छे उदाररे. पू० ॥ ५ ॥ तीर्थंकर त्रिज्ञानी पण जे, ते भव मुक्ति जाणरे; तप तपता जाणीने भव्यो, तप तपशो गुण खाणरे. पू० ॥ ६ ॥ मरण जीवनपर नहीं आसक्ति, सर्व समर्पण थायरे; परमार्थे जीवननी करणी, शुद्धोपयोगे सुहायरे. पू० ॥ ७ ॥ सर्व जीवोना हितने माटे, काया मननी प्रवृत्तिरे; जैनधर्मनी सेवा भक्ति, करवानी छे रीतिरे. पू० ॥ ८ ॥ सर्व लोकनां दुःखो हणवा, सहेजे समर्पाइ जायरे; सुख दुःख आवे हर्षे न शोचे, साक्षी

भाव सुहायरे. पू० ॥ ९ ॥ नामने रूपमां मोह रहे नहीं, कर्तव्योज करायरे; ज्ञानाग्निमां मोहने होमी, मुक्ति क्षणमां पायरे. पू० ॥ १० ॥ मान पूजानी होय न वृत्ति, धार्मिक होय प्रवृत्तिरे; बाह्याभ्यंतर तपने तपतां, प्रगटे अनंती शक्तिरे. पू० ॥ ११ ॥ आतमने परमातम करवा, तप छे साधन सत्यरे; बुद्धिसागर मंगल पामो, तपथी करी शुभ कृत्यरे. पूजो० ॥ १२ ॥

धीरकुमरनी वातडी कोने करीए. ए राग.

वासनारोधक तप तपो नरनारी, मनथी इच्छाओ निवारी करो आत्म शुद्धि जयकारी, शुभाशुभ परिणति वारी, रहो आत्म मगन्न, वासना. ॥ १३ ॥ निश्चय तप क्षण मात्रमां शिव आपे, शुद्ध केवल ज्ञाने थापे; पूर्ण आनंद घटमां व्यापे, रहो तपथी प्रसन्न. वास० ॥ १४ ॥ कामादिक मोह वृत्तियो सहु टाळो, शुद्ध आतम स्वरूप निहाळो; भेदभावनी [illegible] बाळो, राखो निर्मल मन. वास० ॥ १५ ॥

आत्मज्ञानने ध्यानथी जे समाधि, टळे आधि व्याधि उपाधि; लहो मुक्ति तप आराधी, बनो जीवन्मुक्त. वास० ॥ १६ ॥ निश्चय तप पुरुषार्थथी भवी पामो, बनी निर्विषयी दुःख वामो; परब्रह्म बनी ठरो ठामे; बुद्धिसागर वेश. वास० ॥ १७ ॥

गीत,

गायां गायांरे एम नवपद भावथी गायां; प्रभु महावीर देवे प्रकाश्यां, ते में भावथी ध्यायांरे. एम. चार निक्षेपे सातनयेजे, नवपदनुं करे ज्ञान; सिद्ध चक्र आराधी ध्याई, पोते बने भगवानरे. एम० ॥ १ ॥ आंबिल ओळी आदितपथी, नवपदने आराधे. पद-पद मंगल ऋद्धिसिद्धि, मुक्तिने ते साधेरे. एम० ॥ २॥ गुरुगम यंत्रने मंत्र ग्रहीने, जप जपतां एकताने. जे जे भावे आराधे ते ते, चावे फळे ठे ज्ञानेरे. एम० ॥ ३ ॥ संवत् ओगणिश सत्तोत्तरनी, साले आश्विन मासे, विजया दशमी चढता पहोरे, पूजा रची उल्ला-

पंचाचारपूजा प्रारंभ.

मङ्गलम्.

प्रभु महावीर जिनवरा, तीर्थंकर जयकार; सर्व विश्व शासन प्रभु, परब्रह्म सुखकार. ॥ १ ॥ प्रणमी वंदी पूजीने, गावुं पंचाचार, पंचाचारे वर्ततां, मुक्ति लहे नरनार. ॥ २ ॥ द्रव्यभाव आचार छे, साधन साध्य प्रकार; सापेक्षे साधन सकल, आत्मशुद्धि करनार. ॥ ३ ॥

प्रथम ज्ञानाचार पूजा.

दुहा.

मोहनजी मोकलोरे मोसाळुं अथवा श्रोहि जिन पूजीए मनरंगे—ए राग.

प्रभु महावीर जगहितकारी, प्रतिबोध्यां नरने नारी, धन्य महावीर जग उपकारीरे, आज मनोरथ

मुज फळीया. मनवंछित मेळा मळियारे. आज० ॥१॥ ज्ञानाचारने समजाव्यो, ते में मनमांही लाव्यो. द्रव्यने भावथकी भाव्योरे. आज० ॥ २ ॥ काल विनयने बहुमाने, गुरुगम पामो उपधाने, अनि ह्नवताना तानेरे. आज० ॥ ३ ॥ शब्दार्थ तदुभय धारो, श्रुत जणतां सुख निर्धारो, तजीए आठे अति-चारोरे, आज० ॥ ४ ॥ आगम शास्त्र श्रवणयोगे, गुरुसेवा स्वार्पण भोगे, ज्ञान वधे मन आरोग्येरे, आज० ॥ ५ ॥ गुरु श्रद्धा प्रीति भक्ति, प्रगटे ज्ञान तणी शक्ति, प्रगटे परम प्रभु व्यक्तिरे. आज ॥६॥ ज्ञानावरण सकल दूर नासे, आगम अनुभव अभ्यासे, भावथी आतम उल्लासेरे. आज० ॥ ७ ॥ तुज आगम गुरुमुख सुणतां, कर्म सकल वेगे टळतां, बुद्धिसागर, अनुसरतांरे. आज० ॥ ८ ॥



ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय ज्ञानाचारपूजनाय.

जलादिकं–यजामहे स्वाहा.

द्वितीय दर्शनाचार पूजा.

दुहा–

दर्शनाचारने पाळीए, आठ तजी अतिचार; द्रव्यभाव बे भेदथी, समजो दर्शन सार, ॥ १ ॥ निश्चयने व्यवहारथी, दर्शनना बहु भेद; दर्शनना, आचारने, पाळी टाळो खेद, ॥२॥ देवगुरुने धर्मनी, भक्ति करतां भव्य, आत्मिकदर्शन प्रगटतुं, करतां शुभ कर्तव्य, ॥ ३ ॥

विनति धरजो ध्यान जगपति विनति ए–राग.

दर्शनना आचार, भवी भजो, दर्शनना आचार निःशंकित बे निःकांक्षित बे, रुडो धरो व्यवहार. भवी० ॥ १ ॥ वितिगिच्छा दोष निवारी, साधीए धर्माचार. भवी० मूढपणानी दृष्टि त्यागी, धरो प्रभु-पर प्यार. भवी० ॥ २ ॥ उपबृंहणथी दर्शन पुष्टि,

जिनशासन जयकार. भवी० सकल संघनी सेवा भक्ति, निष्कामि आचार. भवी० ॥ ३ ॥ जिनशासनना आठ प्रभावक, सेवो नरने नार, भवी० उपयोगी थै दर्शनाचारे; रहेतां कर्म संहार. भवी० ॥४॥ लज्जा खेदने द्वेष निवारी, निर्भय थैने उदार. भवी० तनमन धननुं अर्पण करवुं, संघोन्नति हितकार. भवी० ॥ ५ ॥ अर्पाइ जाओने जैनो, त्यागी देहाध्यास, भवी० देवगुरुने जैन धर्मनो, तजो नहीं विश्वास. भवी० ॥ ६ ॥ स्थिर करीए धर्मे सर्वने, यथाशक्ति नरनार, भवी० साधर्मिकनी भक्ति करीए, करी प्रभावना सार. भवी० ॥७॥ निश्चय शुद्धातम अनुभवतां, रहे न दर्शन दोष, भवी० बुद्धिसागर दर्शन पामे, सहु रीते संतोष. भवी० ॥ ८ ॥

तृतीया चारित्राचार पूजा.

दुहा.

द्रव्यभाव चारित्र छे, निश्चयने व्यवहार,
[illegible] [illegible]ारे रमो, आठ तजी अतिचार. ॥ १ ॥

समिति गुप्ति पासेरे, ज्ञानी सर्वे कर्मो करतो, ज्ञाने गुप्ति उपासेरे ॥ प्रभु ॥ ६ ॥ ज्ञानी समिति धारे ज्यां त्यां, द्रव्यभावथी जाणीरे, उत्कृष्टाजंगे क्षण मुक्ति, भाखे केवल ज्ञानीरे ॥ प्रभु ॥ ७ ॥ समिति गुप्ति साधे सर्वे, योग सधाता जाणोरे, बुद्धिसागर आतम उजागर, प्रगटे भाव प्रमाणोरे ॥प्रभु ॥८॥

चतुर्थी तपआचार पूजा.

दुहा.

बार भेदे तप भलो, बाह्य अभ्यंतर वेश; तप तपतां नासे घणा, कर्म निकाचित कलेश. ॥ १ ॥
अशुभ शुभ इच्छा सकल, सर्व क्रिया फलत्याग. निश्चय तप ते जाणवुं, तपता महा सौभाग. ॥ २ ॥
बारे अतिचारो तजी, धारो तप आचार, दुःख सही आतम चहो, तप तपशो नरनार. ॥ ३ ॥

चोमासी पारणुं आवे–ए राग.

प्रभुमहावीर जिनजयकारी, तप तपिया बनी अ· नगारी, बन्या केवली जगहितकारी, भाख्युं तपवर्तन सुखकारीरे, तप सेवो सकल नरनारी, जाउ तपि·

करशो; लब्धि सिद्धि प्रकटता करशो, बुद्धिसा-
गर मंगल वरशोरे. तप० ॥ ९ ॥

पांचमी वीर्याचार पूजा.

दुहा–

आतम शक्ति फोरवो, त्रण तजी अतिचार,
सर्व प्रमादो परिहरो, धर्म करो नरनार, ॥ १ ॥ देव
गुरुने धर्मना, आराधनमां शक्ति, फोरवतां शक्ति
वधे, प्रगटे प्रभुपद व्यक्ति, ॥२॥ टींटोडी उत्साहथी,
अनंत गुणो, उत्साह, धारी आतम शुद्धिनो, राखो
मनमां चाह. ॥ ३ ॥

ध्यान क्रिया मनमां आणी जे–ए राग.

प्रभु महावीर जिन उपदेशे, वीर्याचारने धारोरे.
धर्ममां शक्ति फोरवो लोको, करशो पर उपकारोरे.
प्रभुव ॥१॥ दुःख पडतां नहिं मुंझाशो, परनी व्हारे
धाशोरे, संकट पडता भागी न जाशो, करवा धर्म

उजाशोरे॥ प्रभु० ॥२॥ व्रत तप भक्तिमां ढीला न थाशो, उत्साहे सुख पाशोरे; कायर थै थाओ नहीं दासो, चूको न निज विश्वासोरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ अनंत शक्तिनो स्वामी आतम, कायरथी न पमातोरे; जीवंतां मरजीवा ज्ञानी, तेथी आत्म लहातोरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ देहाध्यासथी मरतां मुक्ति, पडे न पाछा नीतिरे, शूराजननी एवी रीति, धरे न क्यांये भीतिरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ गोपवो नहीं वज्रवीर्यने धर्मे, उत्साही सत्कर्मेरे; थैने रहेशो आतम शर्मे, पडो न मिथ्या भर्मेरे. प्रभु० ॥ ६ ॥ भावीभाव हशे ते थाशे, कर्मे लख्युं ते थाशेरे; एकांत मिथ्या एवी बुद्धि, टाळी रहो उल्लासेरे; प्रभु० ॥ ७ ॥ आतमना पुरुषार्थे सर्वे, थातुं निश्चय राखोरे; प्राण पडे पण कार्य न मूको, आतम सुखने चाखोरे. प्रभु० ॥ ८ ॥ वीर्याचारे कर्म टळे सहु, आतम शक्तियो प्रगटेरे; आतम ते परमातम थावे, मिथ्या कर्मो विघटेरे. प्रभु० ॥ ९ ॥ सर्व प्रकारे धर्म प्रवृत्ति, करतां धैर्यने

धारेरे; बुद्धिसागर आनंद मंगल, सिद्ध प्रभु निर्धारेरे. प्रभु० ॥ १० ॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो—

पंचाचार सदाचार जगमां, ते गातां दरसायो वीर प्रभु वचनामृत पीतां, तृप्ति न मनमां पायोरे महावीर० ॥१॥ पंचाचारना धारक पूजो, पंचमी गति सुखकारी; वीर प्रभुए समकित पामी, पाळ्या दुर्गति हारीरे. महावीर० ॥२॥ दर्शन ज्ञानने चारित्रमांही पंचाचार समाया; पंचाचारने पाळे मुक्ति, सहजानंद सुहायारे. महावीर० ॥ ३ ॥ अंतर आतम पंचाचारे, पूजो वीरने भावे; परमातम पोते घट थावे, ध्याता ध्येय सुहावेरे. महावीर० ॥४॥ सानंद दहेरे आनंद लहेरे, पूजा रची गुण दावे; ओगणीश सतोत्तर आशो वदि, बीज दिने बहु भावेरे. महावीर० ॥ ५ ॥ भणतां गणनांने सांभळतां, पामो शिव नरनारी; संघ

चतुर्विध मंगल पामो, समकिती व्रती अवतारोरे. महावीर० ॥ ६ ॥ चउनिक्षेपे सातनये में, पंचाचारने जाण्या; गुरु सुखसागर पूर्ण कृपाथी, घटमां भावे आण्यारे. महावीर ॥७॥ गावो जाणो मनमां आणो, आचारने आचारो; बुद्धिसागर आनंद मंगल, ऋद्धि वृद्धि अपारोरे. महावीर० ॥ ८ ॥

अथ विंशतिस्थानक पद लघुपूजा प्रारंभ.

प्रथम अरिहंतपद पूजा.

श्री महावीर जिनेश्वरा, चोवीशमा जिनराज; त्रिशलानंदन जयकरा, प्रणमुं जिनशिरताज. ॥ १ ॥ बहुविध तपशास्त्रो जण्या, कर्म दुरित हरनार; विंशति स्थानक तप वडुं, सहु तपमां शिरदार. ॥ २ ॥ विंशस्थानक पूजा रचुं, पूज्यपणुं दातार; पूज्यनी पूजा भक्तिथी, तीर्थंकर पद सार. ॥ ३ ॥

प्रथम अरिहंत पदपूजा.

परमेष्ठीमां प्रथम छे, अरिहंत जगवंत. नय निक्षेपे ध्याइए, आविर्भावे संत. ॥ १ ॥

संभव जिनवर विनति. ए राग.

प्रभु अरिहंत जिन पूजीए, बारगुणे जयकारीरे, चोत्रीश अतिशयवंत जे, केवलज्ञानना धारीरे॥ प्रभु० ॥ १ ॥ पांत्रीश वाणी गुणोवरूं, जग बोधे

मृत्यु न जेने, हृदय धरीने रीजीए. शुद्ध गुण पर्यायो अनंता, आविर्भावे ते लीजीए. सिद्ध० ॥ २ ॥ पूर्णानंदमयी परमेश्वर, आदि न अंत न पाइए, आतम सत्ताए परमातम. सत्ताध्याने सुहाइए. सिद्ध० ॥ ३ ॥ आतम गुण पर्यायथी अस्तिनास्ति परखी जाणीए. उत्पत्तिव्यय ध्रुवतारामी, समये समये चित्त आणीए. सिद्ध० ॥ ४ ॥ सिद्ध प्रभुथी गावो ध्यावो, प्रभु आज्ञा शिर धारीए. बुद्धिसागर सिद्ध प्रभु विभु, थैने जन्म सुधारीए. सिद्ध० ॥ ५ ॥

तृतीया प्रवचन पदपूजा.

प्रवचन पूजनां वंदतां, ध्यावतां मंगलमाल. प्रवचन पद दिलमां वस्युं–सर्व पाप हणनार. ॥१॥

विमल जश करशो उद्धार ए–राग.

प्रेमे प्रवचन पूजो गावो. मनमां धारशोरे. भावे तीर्थ संघ सेवाथी, संकट टाळशोरे. प्रेमे० सेव

चतुर्विध सेवा भक्ति. करतां प्रगटे सघळी शक्ति. करीने शासन सेवा. आतमने उद्धारजोरे ॥ प्रेमे० ॥ १ ॥ तीर्थंकर पण तीर्थने नमता, तीर्थ नमे ते भव नहि भमता. भावे प्रवचन श्रुतने मनमांही अवधारशोरे. प्रेमे० ॥२॥ धर्मक्षेत्र साते शुभ पोषो, टाळो संशय आदि दोषो. आतम उपयोगी थै कर्म कटक संहारशोरे. प्रेमे० ॥३॥ जैन धर्म फेलावो करशो, तीर्थंकर गणधर पद वरशो. प्रभुनी वाणीने जगमां सर्वत्र प्रचारशोरे. प्रेमे० ॥ ४ ॥ प्रवचन सेवा माटे सर्वे, मळ्युं गणो नहि रहेशो गर्वे. जाने बुद्धिसागर आप तरो परतारशोरे. प्रेमे० ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थ आचार्य पद पूजा.

नमो नमो श्री सूरिवर, गणधर संघ प्रधान;
तीर्थंकर पाछळ प्रभु, अर्हन्‌सम भगवान्. ॥ १ ॥

जीवलडा घाट नवा शीद घडे. ए राग.

सूरिवर शासन शक्ति भर्या, हृदयमां ते में अंगीकर्या, देशकाल अनुसारे शासन, धर्म प्रचारक

ए गुण वीर तणो न विसारुं ए राग.

मुनिवर देखी प्रणमो वंदो, पूजो ध्यावो भावोरे; मुनिवरनी संगत करवामां, श्रद्धा प्रीति लावोरे. मुनिवर० ॥ १ ॥ वर्तमानमां तरतम योगे, वर्ते साधु जेहरे; तेनी सेवा भक्ति करतां, थाशो स्वयं गुण गेहरे. मुनिवर० ॥ २ ॥ मुनि आशातना हेलना त्यागो, वर्ततानी संगरे; करशो गुणरागी थै लोको, गुणनो धरो मन रंगरे. मुनिवर० ॥ ३ ॥ सर्वे जीव उपकारी साधु, क्षांति आदि धरे धर्मरे; शुद्धातम उपयोगे वर्ती, करता धर्मनां कर्मरे. मुनिवर० ॥ ४ ॥ अप्रतिबद्धपणे जे वर्ते, गुरु निश्राअे संतरे; बुद्धिसागर मुनिवर सेवा, अनंत पुण्य मळंतरे. मुनिवर० ॥ ५ ॥

अष्टम ज्ञानपद पूजा.

ज्ञानने पूजो भविजना, सकल धर्म आधार;
ज्ञान प्रकाशी आतमा, परमातम निर्धार. ॥ १ ॥

सिद्धचक्र पद सेवा कीजे. ए–राग.

सर्व गुणोमां ज्ञान छे मोटुं, ज्ञाने परमानंदोजी; आत्मज्ञान ते सर्वमां मोटुं, टाळे जे भवफंदो; ज्ञानने भजीएजी, ज्ञान ते आतम रूप; निजगुण सजीएजी. ॥ १ ॥ ज्ञानोपयोगे आत्मरमणता, स्वरूप क्रिया ते साचीजी; ज्ञानोपयोगे ध्यान क्रियाथी, रहेशो निजगुण राची. ज्ञान० ॥ २ ॥ ज्ञानोपयोगे सहज समाधि, निर्लेपे सहु करणीजी; नयनिक्षेपे ज्ञानने जाणो, जे छे भवमां तरणी. ज्ञान० ॥ ३ ॥ निजपरने उपकारी श्रुत ते, जाणे छे स्याद्वादीजी; अनेकान्तपणे सहु जाणो, थाओ नहीं उन्मादी. ज्ञान० ॥ ४ ॥ ज्ञाने सर्व कर्म क्षय क्षणमां, करे ततां नहि कर्ताजी; बुद्धिसागर सद्गुरु सेवो, ज्ञानी भवोदधि तरता. ज्ञानने० ॥ ५ ॥

नवमी दर्शनपद पूजा.

द्रव्य भाव दर्शन नमु, निश्चयने व्यवहार; सम्यग् दर्शन पामीने, मुक्ति लहे नरनार. ॥ १ ॥

तपपदने पूजीजे हो प्राणी. ए राग.

दर्शन दिल प्रगटावो हो सुखकर, दर्शन दिल प्रगटावो॥उपशम क्षयोपशमने क्षायिक, द्रव्यने जाव सुहावो; व्यवहार निश्चय समकित पावो, अजरामर थइ जावो हो. सुखकर ॥ दर्शन० ॥ १ ॥ सम्यग् दर्शन योगे मिथ्या, शास्त्रो पण होय सवळां. मिथ्या दर्शन योगे सम्यक्–शास्त्रो पण होय अवळां हो. सुखकर॥ दर्शन० ॥ २ ॥ सम्यक्पणे सघळुं परिणमतुं, समकितीने जावे. अल्पबंधने निर्जरा झाझी, प्रवृत्तिमां थावे हो. सुखकर ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ सात आठ त्रण चार भवोमां, समकिती लहे मुक्ति. उत्कृष्टुं अंत मुहूर्तमां, पामे मुक्ति झटिति हो. सुखकर. दर्शन० ॥ ४ ॥ समकितीनी सेवा जक्ति, करवा स्वार्पण करवुं. बुद्धिसागर आतम शुद्धि, मंगल पदने वरवुं हो. सुखकर. दर्शन० ॥ ५ ॥

दशमी विनयपद पूजा.

बाह्याभ्यंतर विनयने, सेवो नरने नार. सर्व धर्मनुं मूळ छे, सद्गुणमां शिरदार ॥१॥

जीवलडा घाट नवा शीद् घडे. ए राग.

विनयनी वाटे जे जन चडे, जगत्मां पाछो ते नहीं पडे. देव गुरुने संत विनयथी, मारग धर्मनो जडे; विनये विद्याज्ञानने पामे, संसारे नहि सके. विनयनी ॥ १ ॥ पांचने दशविध तेरने वावन, भेदे विनयने करे. शमदम आदि गुणने पामे, वांछित वेळा वळे. विनयनी ॥ २ ॥ आहारी पण उपवासी छे, विनयी मुक्ति वरे. गुरु विनये ज्ञानादिक पामे, श्रद्धा प्रीति वळे. विनयनी० ॥ ३ ॥ सर्व संघ गुणीजनना विनये, मोहनी वृत्ति टळे. शुद्धातम उपयोगे करणी, थावे निजगुण जळे. विनयनी ॥ ४ ॥ सर्व शक्तिनुं मूळ विनय छे, जक्तोने सांपडे. बुद्धिसागर मंगल माला, अनंत सुखमां मळे. विनयनी ॥ ५ ॥

अग्यारमी चारित्रपद पूजा.

सर्वगुणी चारित्रथी, मुक्ति लहो नरनार; चारित्र सम जग को नहीं, पूर्ण मुक्ति दातार. ॥ १ ॥

कानुगो न जाणे मोरी प्रीत. ए राग.

चेतन धारो हे चारित्र, दुर्गुण दोष हरीनेरे, चेतन॥ द्रव्यने जावथी धारे, कर्मो सघळां संहारे; एवुं रुडुं धर चारित्र, शाने मोह धरे छे रे. चेतन० ॥ १ ॥ सर्व प्रमादो वारी, चेती ले आत्म सुधारी; एही वा त्यागीनुं चारित्र, धरी ले स्वाधिकारेरे. चेतन. ॥ २ ॥ मोह कादवमां खूंच्यो, भूंडनी पेठे मुंझ्यो, रागद्वेषे पडियो मूंढ, शीदने निज विसरेछेरे. चेतन० ॥ ३ ॥ हजी ठे हाथमां बाजी, हारे थुं थैने पाजी; जीवो मुक्ति पाम्या अनंत, शाने वार करेछेरे. चेतन० ॥ ४ ॥ शुद्ध स्वजावमां रमवुं, एथी न जवमां जमवुं; बुद्धिसागर गुरु चारित्र, पामी जव्य तरेठेरे. चेतन० ॥ ५ ॥

बारमी ब्रह्मचर्य पद पूजा.

रत्न मणिमय मंदिरो, प्रतिमाओ करनार; तेथी अनंतु फल लहे, ब्रह्मचर्य धरनार. ॥ १ ॥

धनधन ते जगमां नरनार, विमलाचलके जानेवाले. ए राग.

धन्य धन्य जगमां ते नरनार, निर्मल ब्रह्मचर्य धरनार; पूजो ब्रह्मचारी नरनार, धारो ब्रह्मचर्य सुखकार ॥ रत्नमणि कंचननी प्रतिमा, चैत्य करावणहार; अनंत गणुं फल तेथी पामे, ब्रह्मचर्य धरनार. धन्य० ॥ १ ॥ सहस चोराशी मुनिवरदाने, जे फल नकी थनार; ते फल विजयने विजयानको, अयुं धन्य अवतार. धन्य० ॥ २ ॥ द्रव्यथी कायिक वीर्यनी रक्षा, आत्म रमणता सार; भावथी ब्रह्मचर्य छे एवुं, सहु शक्ति दानार. धन्य० ॥ ३ ॥ सर्व प्रकारे विषयनी वांछा, त्यागी जे रहेनार; अनासक्तिए करे कृत्य सहु, ब्रह्मचारी शिरदार, धन्य० ॥ ४ ॥ देशथकी ने सर्वथकी जे, ब्रह्मचर्य धरनार; इन्द्रादिक तेना पद पूजे, देवो सहाये थनार, धन्य० ॥ ५ ॥ दिव्य औदारिक त्रिकरण योगे, सर्व काम हरनार, [illegible] ब्रह्मचर्यनी, अनंत शक्ति उदार, धन्य० ॥ ६

———

सेवो समाधि विचारीरे. भविजन० ॥२॥ हठ आदि अज्ञान समाधि, वीश दोष परिहरीए; गृहस्थने त्यागी भेदे संयम, व्यवहार निश्चय धरीएरे. भवि-जन० ॥ ३ ॥ चार निक्षेपे सात नये नव, तत्त्व सामायिक धारो; मन वश करतां आत्मसमाधि, शुद्ध थता आचारेरे. भविजन० ॥ ४ ॥ संयमीनी सेवा भक्तिथी, शक्तियो प्रगटावो; बुद्धिसागर आतम संयम, आविर्भावे लावेरे. भविजन० ॥ ५ ॥

अष्टादशमी अभिनवज्ञानपद पूजा.

प्रतिदिन अभिनवज्ञानने, पामो नरने नार;
अभिनव ज्ञान विना कदा, रहीए नहि क्षणवार. १

सिद्धचक्र पद सेवा कीजे. ए राग.

अभिनव ज्ञान भणो भवी भावे, गुरुगम लही सुखकारीजी, स्वर्ग अने शिवसुख झट लहीए, स्वाध्याय पंचविध धारी; श्रुतने भणिएजी—त्यागी सर्व प्रमाद, नव श्रुत गणीएजी. ॥ १ ॥ बुद्धिना

गुण आठ वधारो, आठ दोषने टाळोजी; सर्वथकी आराधक ज्ञानी, क्रिया रहित पण ज्ञाळो, श्रुतने. त्यागी० ॥ २ ॥ देश आराधक किरिया भाखी, ज्ञाननी किरिया दासीजी; ज्ञानि ज्ञान आशातना टाळो, शुद्ध स्वरूप उल्लासी. श्रुतने. त्यागी० ॥३॥ ज्ञानथी आतम शुद्धि अनंती, कार्य करंतां थावेजी; अज्ञानी संवरने आस्रवने-रूपे मन प्रणमावे. श्रुतने. त्यागी. ॥ ४ ॥ अनुभव ज्ञानी सूरि वाचक मुनि, संग निशदिन रहेशोजी; बुद्धिसागर आतम प्रभुता, चिदानंदपद लेशो. श्रुतने. त्यागी० ॥ ५ ॥

आगणिशमी श्रुतपद पूजा.

पंच ज्ञानमां श्रुत छे-स्वपरोपकारक वेश, चउ मुंगां श्रुत बोलतुं, टाळे सर्वे क्लेश. ॥ १ ॥

चंद्र प्रभुजीसे ध्यानरे मोंये लागी लगनवा,

ए राग.

श्रुत स्वपर उपकारीरे, भवी भावथी सेवो-भवी भावथी सेवो; जगमां छे जयकारीरे. भवी० केवलज्ञा-

वीरकुमरनी वातमी कोने कहीए. ए राग.

संघ चतुर्विध तीर्थ छे जयकारी, पंच परमेष्ठी हितकारी; सर्व विश्वविषे उपकारी, सेवो नरने नार. संघ० ॥ १ ॥ जंगम तीर्थ आराधना शिवकारी, श्रद्धा प्रीतिथी सवा सारी; जाउ संघनी जग बलिहारी, सेवे नासे पाप. संघ० ॥ २ ॥ स्थावर तीर्थने रक्षतो संघ शर्के, रहो संघनी निशदिन नचे; संघथी जैन शासन वर्ते, जीवो संघना हेत. संघ० ॥ ३ ॥ स्थावर जंगम तीर्थपर प्रेम लावो, मोति पुष्पे संघ वधावो; भावे तीर्थंकर पद पावो, बनो संघना दास. संघ० ॥ ४ ॥ सूरि वाचक मुनि सेवजो सुखकारी, करी स्वार्पणने दोष वारी; बुद्धिसागर तीर्थनी यारी, करे मंगलमाल. संघ० ५

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो. ए राग.

गायुं गायुंरे वीशस्थानक पद तप गायुं; गातां पूजतां ध्यातां दिलकुं, आनंदथी उभरायुंरे. वीश०

अथ दशविधयति धर्मपूजा प्रारंभ.

प्रणमुं श्री परमातमा, महावीर जगदाधार; चोवीशमा तीर्थंकरा, शासनपति सुखकार. ॥ १ ॥ जेणे संघने स्थापियो, सर्व धर्म आधार; प्रभु महावीर जग जयो, अनंत गुण दातार. ॥ २ ॥ यति धर्म दशविध कह्यो, आतमशुद्धि करनार; जगजय श्री महावीर जिन, वंदु वार हजार. ॥ ३ ॥ समवसरणमां बेसीने, कीधो तीर्थ प्रचार; जंगम तीर्थ ते मुनिवरा, तेना दश गुण धार. ॥ ४ ॥ दश गुणथी मुनि शोभता, पूजो दश विध धर्म; दश विध धर्मे आतमनुं, प्रगटे ज्ञान ने शर्म. ॥ ५ ॥ ते माटे दश धर्मनी, रचुं पूजा सुखकार; अष्ट प्रकारे पूजशो, वीर प्रभु जयकार. ॥ ६ ॥

प्रथम क्षमापूजा.

प्रभु महावीर भावना, धर्म क्षमा सुखकार; आराधो भवी भावथी, अनंत सुख दातार. ॥ १ ॥

सहियर सुणिएरे भगवती सूत्रनी वाणी. ए राग.

प्रभु महावीर विभु उपदेशे, सर्व जगत् हितकारी; धर्म क्षमा धागे नरनारी, क्रोधकषायने वारी.

आत्म स्वभावनेरे, समजी क्षमा गुण धारो; क्षमावंत साधुरे, वाकी वेषाचारो. आत्म० ॥ १ ॥ अपकारे उपकारे क्षमाने, धारे बहुला लोको; धर्म क्षमा सहजे घट प्रगटे, ज्ञाने क्रोधने रोको. आत्म० ॥ २ ॥ कूरगडु खंधकना शिष्यो, धन्य मेतार्य मुनीन्द्रा; काने गोपे खीला मार्या, सहिया वीर जिनेन्द्रा. आत्म० ॥३॥ अचंकारी भट्टा मोटी, धन्य क्षमा गुण दरिया; अहंवृत्ति ममता नहि जेने, क्षमा गुणी मुनि तरिया. आत्म० ॥ ४ ॥ वेष क्रिया तप जप सहु साधन, धर्म क्षमाथी सफळां; शुभ अशुभ वृत्ति नहि रहेतां, साधन नहि छे खपनां. आत्म० ॥ ५ ॥ देहादिक अध्यासो छंडी, आतमना उपयोगे; रहेतां धर्म क्षमा गुण प्रगटे, समताना संयोगे. आत्म० ॥ ६ ॥

आतम प्रगटावो, असंग ध्यानम ध्यावो; बुद्धिसागर पूर्णानंदे, रमता मुनिवर ध्यावो. आतम० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय क्षमा लाभार्थं जलं, चंदनं पु० धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया मार्दव धर्मपूजा.

द्रव्यभाव अहंकारना, त्याग थकीछे त्याग; मुनि श्रमणी लघुता धरो, थावो प्रभु वडभाग. ॥ १ ॥ आठ जातिना मद तजो, थावो निरहंकार; अगुरु लघु निज आतमा, समजोने सुखकार. ॥२॥ मान अने अपमानमां, वर्ततां समभाव; अनंत गुण प्रगटे खरा, साधो मार्दवदाव. ॥ ३ ॥

श्रावक व्रत सुरतरु फळियो. ए राग.

परमेश्वर वीर उपदेशे, रहो न मुनि रागद्वेषे; मान तजे ते सुख लेशेरे, मुनिवर मान परिहरशो.

क्षण क्षण आतम गुण स्मरशोरे, मुनि० भवसागर वेगे तरशोरे. मुनिवर० ॥ १ ॥ आठ जाति मद परि हरता, आतम शुद्धि ते करता; परम ब्रह्म वेगे वरतारे. मुनिवर० ॥ २ ॥ रावण मानथकी हार्यो, भीमे दुर्योधन मार्यो; मन पेसे मद अणधार्योरे. मुनिवर० ॥ ३ ॥ ज्ञानने ध्यानना अहंकारे, तरे नहीं पर नहि तारे; गारवे जीव करे भारेरे. मुनिवर० ॥ ४ ॥ उंच नीच भेदे आवे, अज्ञानो मनमां फावे; मद केफे निज भूलावेरे. मुनिवर० ॥ ५ ॥ हुं मारुं ज्यां नही जागे, त्यांथी मद दूरे भागे; जयडंको घटमां वागेरे. मुनिवर० ॥ ६ ॥ हुं त्यांथी प्रभु छे आघा, बाहुबली समजी जाग्या; केवल ज्ञानी वीतरागारे. मुनिवर० ॥ ७ ॥ मद वण मनकुं रहे ज्यारे, आतम प्रभु प्रगटे त्यारे; आप तरे मुनि पर तारेरे. मुनिवर० ॥ ८ ॥ प्रभु महावीर कथे एवुं. समजी लक्ष्य विषे देवुं; बुद्धिसागर सुख लेवुंरे. मुनिवर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० प० मार्दव गुण लाभार्थं जलं०—यजामहे स्वाहा ॥

शोभे आतम आविर्भावे, शुद्ध सरलता आत्म स्वभावेरे. एवो० ॥ ३ ॥ दुनिया भले वंदे निंदे, करे हेलना रागी छंदे; वध बंधन मारवा मंडे, त्होये पडशो नहीं मुनि फंदेरे. एवो० ॥ ४ ॥ मर्या पहेलां माया मारो, निर्मायी बनी निज तारो; मळ्यो मानव भव नहि हारो, मन कपटवृत्ति संहारोरे. एवो० ॥ ५ ॥ माया संगे क्षण क्षण मरवुं, कदि दंभथी होय न तरवुं; माया मारी जीवन धरवुं, पछी मरवुं नहीं अवतरवुंरे. एवो० ॥ ६ ॥ त्यागो सर्व प्रकारे माया, बूरा तेना छे पडछाया; माया त्यागथी प्रभु पटळाया, समजी संतो सुख पायारे. एवो० ॥ ७ ॥ वसे कपट त्यां दुःखना दरिया, माया त्यागी मुनि गुण भरिया; बुद्धिसागर मुनि केशरिया, निष्कपटी केवल वरियारे. एवो० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं०—आर्जवप्राप्त्यर्थं जलादिकं. यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थी मुक्तिधर्म पूजा.

लोभ तजे सर्वे तज्युं, लोभ टळंतां मुक्तिः; जरू लोभे नहीं मुंझता, तेने नहीं छे भीति. ॥१॥ लो॰

लाख चोराशीमां लटक्यो; संत पासे जतां पण अ-टक्यो, धर्यो नहि प्रभु प्रेम. लोभ० ॥ ५ ॥ लोभे लक्षण जाय छे सत्य नासे, दुर्बुद्धि रहे दिल पासे; हिंसादिक पाप प्रकाशे, लोभे सर्व विनाश. लोभ० ॥ ६ ॥ लोभी पापो सहु करे एम जाणो, अनासक्तिने मनमां आणो; धरो संतोष दिल मझानो, करो उपयोगी काज. लोभ० ॥ ७ ॥ देवगुरु संघ भक्तिनो लोभ करशो, निज फर्ज श्रद्धा करी फरशो; धर्म्य लोभने पहेलां धरशो, पछी निर्लोभभाव. लोभ० ॥ ८ ॥ मुक्तिने भवमां समपणुं दिल धारो, सर्व संगे छतां लोभ वारो; शुद्ध आतम परिणति धारो, बुद्धिसागर गाय. लोभ० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० मुक्ति गुण प्राप्त्यर्थं जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

पंचमी तपोधर्म पूजा.

मोह टळे शुद्धि वधे, तप ते धर्मने मान; दुर्गुण दोषो सहु टळे, तप करवुं गुण खाण. ॥ १ ॥ परो-

भोगो पण सहु रोग समा गणेरे, वर्ते योगे अयोग. निष्कामे० ॥ ४ ॥ कार्य करे पण अक्रिय जे रहेरे, धरो आतम उपयोग; सर्व विषयनो वांछावण रहेरे, शोचे न हर्षे भोग. निष्कामे० ॥ ६ ॥ मुनिने मन दमतां तप छे सदारे, करतां सर्व प्रवृत्ति; अन्तर तप अज्ञा नहि जाणतारे, मनमां नहीं आसक्ति. निष्कामे० ॥ ७ ॥ मुनिनी सर्व प्रवृत्ति तपमयीरे, देशकाल अनुसार; बाह्यथी अंतर अनंत गणु भलुंरे. टाळे कर्म विकार. निष्कामे० ॥ ८ ॥ ज्ञानोने सहु बंधन कारणोरे, निर्जरहेते थाय; बुद्धिसागर तपतो पूजतांरे, ध्यातां तप प्रगटाय. निष्कामे० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० तपोगुण लाभार्थं जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

छठी संयम धर्म पूजा.

संयम साधो संयमी, वश करी मन वच काय; संयमथो इष्ट सिद्धि छे, ऋद्धि सकल प्रगटाय.

भक्ति करीने ज्ञानेरे, संयम शक्ति वधे; शुद्ध आत्मो पयोगेरे, साधन सत्य सधे. साधो० ॥ ३ ॥ उपचारिक धर्मज भजो, संयम रूपी सर्व; तेनां पण संयमीजनो, करो न क्यारे गर्व. हठ धर्म निवारीरे, संयम सहेजे सजो; बुद्धिसागर प्रेमेरे, महावीर देव भजो. साधो० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० संयम लाभार्थं वस्त्रादिकं यजामहे स्वाहा ॥

सातमी सत्यधर्म पूजा.

द्रव्यभाव सापेक्षथी, सत्य असंख्य प्रकार; सत्य समो नहीं धर्म छे, सत्य ग्रहो नर नार. ॥ १ ॥ सत्य वदीने आचरो, जैन धर्म छे सत्य; प्राणांते नहि छंडशो, सत्य धर्मनां कृत्य. ॥ २ ॥ ज्ञानथकी साचुं ग्रहो, करो असत्यनो त्यागः पक्षपात छंडी करी, धरो सत्यनो राग. ॥ ३ ॥

तेजे तरणिथी वडोरे. ए राग.

वीर प्रभुए भाखियोरे, सत्य धर्म जयकार; मिथ्या जूठने परिहरोरे, सत्य धरो आचार हो भवि-

मूर्च्छा त्यागी; अंतर बाहिर ममता रहित थे, वर्ते छे वडभागी हो. मुनिवर ॥ परिग्रह० ॥ १ ॥ नवविध परिग्रहमां नहि ममता, वर्ते सकल परसमता; देहादिक गच्छ संगी छतां पण; निःसंग ज्ञाने रमता हो. मुनिवर० ॥२॥ साधन उपयोगी उपधि सहु, ज्ञानी न त्यां बंधाता; तारु तरे जेम सरवरमांही, संवर जावे सुहाता हो. मुनिवर० ॥ ३ ॥ मूर्च्छा ए छे सर्वे उपाधि, मूर्च्छावण निरुपाधि; ज्ञानीने आस्रव पण संवर, उपयोगे नहि व्याधि हो. मुनिवर० ॥ ४ ॥ जडमां शुभाशुभ भाव रहित जे, ते नहि जग बंधातो; बाह्य परिग्रह तेने करे शुं ? जे नहीं पुद्गले रातो हो. मुनिवर० ॥ ५ ॥ ममतावण नहीं कर्मबंध छे, ममता त्यागे त्यागी; जडनी ममता त्यागी सुज्ञाने, थाशो आतमरागी हो. मुनिवर० ॥ ६ ॥ *यावत् मूर्च्छा अंतर तावत्, कोइ न मुक्ति पामे;* मूर्च्छावण मणि पर्वत उपर, बेठो ठरे शिव ठामे हो. मुनिवर० ॥ ७ ॥ परिग्रह त्यागी मुनिवर सेवा,

भक्ति करो बहु भावे; क्षण एक साधुनी संगत करतां, निश्चय मुक्ति थावे हो. मुनिवर० ॥ ८ ॥ अणुसम गृहीने मेरु सरीखा, मुनिवर मोटा जाणो; सतोषे नहीं कोनी परवा, आनंद भोगी मानो हो. मुनिवर० ॥ ९ ॥ निश्चयने व्यवहारथी त्यागी, सेवो पूजो ध्यावो; बुद्धिसागर शुद्धातम पद, पूर्णानंदी पावो हो. मुनिवर० ॥ १० ॥ ॐ०–अकिंचन धर्म लाभाय जलादिकं यजामहे स्वाहा.



दशमी ब्रह्मचर्य धर्म पूजा.

ब्रह्मचर्य सम को नहीं, सर्व धर्ममां श्रेष्ठ, द्रव्य-भाव ब्रह्म आगळे, अन्य सकल छे हेठ. ॥१॥ नेमि सुदर्शन जंबुने, स्थूलिभद्रज अनगारः गावो पूजो ध्यावो, ध्यावो नरने नार. ॥ २ ॥ ब्रह्म मळे ब्रह्म-चर्यथी, भाखे वीर जिनेशः द्रव्यभावथी धारतां, नासे सघळा क्लेश. ॥ ३ ॥



ब्रह्म जगायोरे. महावीर ॥६॥ गुरुकृपाने आशीर्वादे, जगमां धर्म फेलायो; बुद्धिसागर आनंदमंगल, जंगम संघ वधायोरे. महावीर० ॥ ७ ॥



तृतीया माध्यस्थ भावना पूजा.

दुहा.

माध्यस्थ त्रीजी भावना, आदरे जे नरनार; सर्व प्रकारे सत्यने, पामे शांति अपार. ॥ १ ॥ मिथ्या दुर्बुद्धि टळे, पक्षपात दूर जाय; दुराग्रहो सर्वे टळे, रागने रोष पलाय. ॥ २ ॥ ज्यां त्यां सत्य प्रकाशतुं, रहे नहीं अज्ञान; नय निक्षेपे धर्मने, जाणंतां ते ज्ञान. ॥ ३ ॥

धन धन संप्रति साचो राजा. ए राग.

जेम जेम राग अने द्वेष विघटे, तेम प्रगटे समताइरे; दृष्टि रागनो त्याग थतां दिल, प्रगटे मध्यस्थ तासरे. वीर प्रभुए ए गुण साध्यो, आदरो नरने नारीरे; माध्यस्थ भावे सत्य प्रकाशे, आनंद अपरंपारेरे. वीर० ॥ १ ॥ पक्षपात दाय रागने द्वेषे, मानव स्वार्थे अन्धरे; मिथ्याबुद्धियोगे होवे अवळी दृष्टि बन्धरे. वीर० ॥ २ ॥ सर्व [illegible]

दूर नासे, प्रगटे सत्य प्रकाशरे; सत्यने माटे सर्व
समर्पण, शुद्धातम विश्वासरे. वीर० ॥ ३ ॥ द्रव्य
क्षेत्रने कालने भावथी, सत्यासत्य जणायरे; सत्यनां
सर्व दृष्टि बिंदुओ, प्रगटे सत्य सहायरे. वीर० ॥ ४ ॥
सत्यने न्याय ग्रहे मध्यस्थो, पकडे न गद्धापुच्छरे;
तकु ते साचुं नहीं माने, सत्य आगळ सहु तुच्छरे.
वीर० ॥ ५ ॥ नय निक्षेपने भंग प्रमाणे, जैन धर्म
छे सत्यरे सर्व नयोनी सापेक्षाए, समजो दर्शन कृ-
त्यरे. वीर० ॥ ६ ॥ ज्ञानी संतनी सेवा भक्ति, करतां
सत्यस्थ तारे प्रगटे सर्व कर्म व्यवहारे, समजाता
सत्य द्वारे. वीर० ॥ ७ ॥ काल स्वभावने नियति
कर्म, उद्यम पांचे कारणे; पंचना समवाये छे कार्यनी-
सिद्धिनुं साम्राज्यरे. वीर० ॥ ८ ॥ माध्यस्थभावे
वर्तो लोको करशो धार्मिक कर्मरे; सुणशो वांचशो
जोशो चिन्तशो टळशो प्रगटशे शर्मरे. वीर० ॥ ९ ॥
बाह्यथी सत्य नयोमां, करो मध्यस्थे काजरे;
ज्ञान चरणनी प्राप्ति, प्रगटे शिव साम्राज्यरे.





दान शीयल तप भावनी पूजा.

प्रथम दान पूजा.

जय जगमां महावीर जिन, वर्ते विश्व आधार; परम दया तीर्थंकरा, परमेश्वर जयकार ॥ १ ॥ केवल-ज्ञानी जिनपति, सुरनर पूजे पाय; वीतराग परमा-तमा, सेवंतां सुख थाय. ॥ २ ॥ समवसरणमां देशीने, सत्य जणाव्यो धर्म; दान शीयल तप भा-वना, सत्य जणाव्यां मर्म. ॥ ३ ॥ दान शीयल तप भावथी, मुक्ति वरे नरनार; एना सीवय नहि अन्य, समजाव्युं निर्धार. ॥ ४ ॥ ते माटे पूजा कहुं, दान शीयल तपभाव; हृदयमां धरवी पूजना, प्रगटे गुण सद्भाव. ॥ ५ ॥

प्रथम दान पूजा.

दान समो नहि धर्म जग, दान दियो नरनार. दानथी जावे दलिद्र रे, दानथी थाय उद्धार. ॥ १ ॥ शील तपस्या भावना, भाविक दे हार, दानथी विस्तर

जावे, तेनी घेंन खुमारी न जावेरे. भाव० ॥ ९ ॥ जेथी भाव वधे ते करशो, एवुं सांभळो व्रत आच-रशो; भावरस ज्यां त्यां मन धरशो, तेथी आतम जीवन वरशोरे. भाव० ॥ १० ॥ शुद्धभाव आनंद रस व्यापे, क्षणमां मुक्तिरस छापे; कर्म अनंत भवनां कापे, बुद्धिसागर आनंद आपेरे. भाव० ॥११॥ ॐ० भाव लाजाय ज० य० स्वाहा ॥

गीत कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

दान शीयल तपभाव पूजाए, अतिशय आनंद पायो; द्रव्य पूजाने भाव पूजानो, ए अधिकार रचायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ द्रव्य पूजाने भाव पूजानो, गृहस्थ छे अधिकारी; भाव पूजाना अधि-कारी मुनि, शुद्धातम सुखकारीरे. महावीर० ॥ २ ॥ दानशीयल तप भावना योगे, मुक्ति लहे नरनारी; सर्व साधारण धर्म ठे जगमां, सर्व जीव हितकारी रे.

अष्टांग योगनी पूजा.

प्रणमुं तीर्थंकर विभु, चोवीशमा जिनराज; परमेश्वर महावीर देव, योगेश्वर सम्राट. ॥ १ ॥ योगनां अंगो आठ छे, तेह प्रकाश्यां येश; समवस रणमां बेसीने, दीधो शुभ उपदेश. ॥ २ ॥ द्रव्यनां अंगो चार छे, राजनां अंगो चार; निश्चय ने व्यवहा- रथी, समजो अहो नरनार. ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञानने चरणमां, अंगो आठ समाय; पंचाचारने समितिमां, गुप्तिमांही सुहाय. ॥ ४ ॥ स्याद्वादी समकितीने– सम्यक्पणे प्रणमाय; साधननी उपयोगिता, स्वाधि- कारे जणाय. ॥ ५ ॥ त्यागी गृहस्थने योगनुं, आरा- धन सुखकार; असंख्य योग वीरे कह्या, मुक्ति हेतु निर्धार. ॥ ६ ॥ ज्ञानी गुरुगमने लही, जैन शास्त्र अनुसार; योगाष्टक पूजा रचुं, स्वर्गने शिव दातार. ॥७

प्रथम यम योग पूजा.

अहिंसा सत्य यम कथ्या, अस्तेय छे जयकार

रोगने क्लेश. भवी० ॥ ५ ॥ भावयकी ब्रह्मचर्य छेरे, मोह परिणति त्यागः शुद्धब्रह्ममां म्हालवुंरे, सर्वयाग शिर याग. भवी० ॥ ६ ॥ मूर्च्छा परिग्रह त्यागथीरे, मन चंचलता जाय; द्रव्य परिग्रह पण टळेरे, आत्मानुभव थाय. भवी० ॥ ७ ॥ भोगोपभोगथी विरमतांरे, पाप कर्मनो अंत; यमयमे प्रभु पूजोनेरे, मुक्तिवर्या बहु संत. भवी० ॥ ८ ॥ देहनी शुद्धि यमथकीरे; मनवच कायनी शुद्धि; बुद्धिसागर आत्मनोरे, प्रगटे चिदानंद ऋद्धि. भवी० ॥९॥

ॐ ०प० यमयोग लाभायज० य० स्वाहा ॥

द्वितोया नियम पूजा.

बीजी नियमनी पूजना, करतां दुःखनो नाश; मन इन्द्रिय वशमां रहे, नियम ते जाणो खास. ॥ १ ॥ जे जे उपाये मन तनु, आतम वश वर्ताय; नियम ते जाणो सही, पाळंतां सुख थाय. ॥ २ ॥ नियम योगने आदरी, पाम्या मुक्ति अनंत; नियम

सिद्धि वे यमथकी, नाखे वीर नदंन. ॥ ३ ॥

सुत सिद्धारथ भूपनोरे, सिद्धारथ भगवान–ए राग.

शुभ नियम बहु जाननारे, द्रव्यने भावथी जाण; मोह पशुबळ झट टळेरे, आदरनां गुण खाणरे; नियमने पाळशो, टाळो विषय कषायने, दोषो टाळशो. ॥ १ ॥ बाह्यान्यंतर तप तपेरे, षट् आवश्यक कर्म; सहज कर्म सदोपीनेरे, करतो साधे धर्मरे. नियम० ॥ २ ॥ घोर अभिग्रह धारतोरे, गुर्वादिकनीरे भक्ति; परोपकारी कार्यमांरे, फोरवतो निज शक्तिरे. नि० ॥३॥ देवगुरुने साधुनांरे, दर्शननी शुभ टेक; आवश्यक सहु फर्जनेरे, धारे धरीने विवेकरे. नियम० ॥ ४ ॥ सकल साधन नियमनांरे, द्रव्यने भावथी जेह, साध्योपयोगे धारतोरे, देह छतां निर्दे शांति रूम० ॥ ५ ॥ द्रव्यभावथी शौचनेरे, धारे नहि पाप.निन्दादिक दुर्गुण त्यजेरे, धरी गुण नववाडो धरी'म० ॥ ६ ॥ धर्म कर्म करवां घटेरे,

ते ते करतोरे सर्व; दुष्ट जे कामनी वासन
प्रगटथो गर्वरे. नियम० ॥ ७ ॥ सुरिवाच
सेवतारे, करतो हर्षोल्लास; ज्ञिन प्रतिमा
तोरे, प्रभु वचने विश्वासरे. नियम० ॥ ८ ॥
कितवण हठयोगथीरे, पामे नहि कोइ
सम्यग्ज्ञाने नियमनीरे, पाळे जे शुभ
नियम० ॥९॥ हटयोगी अज्ञानथीरे, निष्कामं
थाय; सम्यग् ज्ञानी नियमनेरे, पाळंतो शिव
यरे. नियम० ॥ १० ॥ द्रव्यक्षेत्रने भाव
सातनयोथीरे जेह; जाणी नियमने आदरेरे,
चने छे तेहरे. नियम० ॥ ११ ॥ पाळो नियम
योगनेरे, जेथी आस्रव जाय; बुद्धिसागर आतमा
परमेश्वर पद पायरे. नियम० ॥१२॥ ॐ ०प० नियम
योगलाभाय ज य० स्वाहा ॥

तृतीया आसन योग पूजा.

आसनथी आरोग्यता, देहनो पुष्टि थाय; रो-
गादिक दूरे टळे, देहथी धर्म सधाय. ॥ १ ॥ ते

यक्तने ज्ञानी, शुद्ध समाधि पामेजी; असंख्य योग यता अहीं भेळा, घाती कर्म विरामे. जिनवर० ॥ १२ ॥ ज्ञानानंदे शुद्ध समाधि, पामे केवल प्रगटेजी; बुद्धिसागर आनंद मंगल, पामे माया विवटे. जिनवर० ॥ १३ ॥

कलश गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

अष्टांग योगनी पूजा रचीने, वीर जिनेश्वर ध्यायो; अष्टांग योगना भाव पूजनथी, आतम शुद्धि पायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ सम्यग् ज्ञानीने आठे अंगो, प्रणमे सम्यग् भावे; मिथ्यात्वीने मिथ्या स्वरूपे, निज दृष्टिना स्वभावेरे. महावीर० ॥ २ ॥ जैनागम अनुसारे अंगो, हेमसूरिए प्रकाश्यां; ज्ञानी गुरुगमथी महतां ए, सम्यग्भावे विकास्यांरे. महावीर ॥ ३ ॥ देशथकी गृही छे अधिकारी, सर्वथकी मुनि त्यागी; गुरुगमथी अधिकार लहीने, थाशो योगना रागीरे. महावीर० ॥ ४ ॥ पाशव आसुरी

यज्ञने हणवा, योगांगो हितकारी; सत्ताए आतम परमातम, व्यक्त करे निर्धारीरे. महावीर० ॥ ४ ॥ तिरोभावीय ज्ञानादि गुण, आविर्भावने माटे; योजे निजगुणमां ते योगो, धुर छे तेमां थाटेरे. महावीर० ॥ ६ ॥ आतम गुणने आतममां जे, योजे ते योग कहेवो; ज्ञानादि शक्तियो योगज, सम्यग अर्थने सेवोरे. महावीर० ॥ ७ ॥ अनंत ज्ञानानंदनी प्राप्ति—कारक योग ते जाणो; सात नयोथी योगने जाणी, निश्चय अनुभव आणोरे. महावीर. ॥ ८ ॥ निमित्त उपादान बे भेदे, द्रव्यने भावथी जाणी; शुद्धातम प्रगटावो संतो, एवी वीरनी वाणीरे. महावीर. ॥ ९ ॥ म्हारेतो गुरु सेवा पसाये, सम्यग् अनुभव आव्यो; नय निक्षेपादिकथी तत्त्वो, जाणी स्याद्वाद चाव्योरे. महावीर० ॥ १० ॥ प्रभु महावीर पट्ट परंपर, श्वेतांबर मुनिराया, तपगच्छ जगगुरु हीर विजय सूरि, अकबरे पूज्या पायारे. महावीर० ॥ ११ ॥ तस पट्टसागर शाख परंपर, रविसागर गुरुराया; तस शिष्य संत शिरोमणि गुरुवर, सुख

सागर नमुं पायारे. महावीर० ॥ १२ ॥ ओगणिश सत्तोत्तर आश्विननी, वदि दशमी बुधवारे; पुजा रचीने पूरण कीधी, लाभ घटिका सवारेरे. महावीर० ॥ १३ ॥ संघनी श्रद्धा प्रीति भक्ति, आग्रहथी चोमासुं; सानंद शहेरे कीधुं भावे, धर्म स्वरूप प्रकाश्युंरे. महावीर० ॥ १४ ॥ योगनी पुजा भणे ने गणे ते, पामो उत्तम शक्ति; बुद्धिसागर संघमां मंगल, प्रगटो ऋद्धि भक्तिरे. महावीर. ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं० समाधि योगज्ञानाय ज० य० स्वाहा ॥

अथ नवधा क्रिया भक्ति पूजा.

परम प्रभु परमातमा, चोवीशमा जिनराज; वर्धमान महावीर नमुं, विश्वपति शिरताज. ॥ १ ॥ नवधा भक्ति पूजना, पूज्यनी करतां सार; पूजक पूज्यपणुं वरे, पूज्य बनो निर्धार. ॥ २ ॥ नवधा भक्तिनी जलो, पूजा शिवदातार; आतम ते परमातमा, व्यक्त बने नरनार. ॥ ३ ॥ नक्तिनी पूजा रचुं, हृदय शुद्धि करनार; शुद्ध हृदयथी ज्ञाननी, प्राप्ति छे जयकार. ॥ ४ ॥ देवगुरुने धर्मनी, संघनी भक्ति वेश; करतां मुक्ति थाय छे, नासे सघळा क्लेश. ॥ ५ ॥

प्रथम श्रवण क्रिया पूजा.

प्रभु महावीर देवनां, वचन सुणो नरनार; गुरु संत उपदेशने, सुणतां ज्ञान धनार. ॥ १ ॥ श्रवणयको श्रुत ज्ञान ठे, श्रुति ते हंत कयाय; प्रभु वचनामृत सांजळे, सम्यग्ज्ञान सुहाय. ॥ २ ॥ ब्राह्मी सुंदरी मुखयको, सुणी वचनामृत सार;

वाहुवली जिन केवली. धन्या धन्य अवतार. ॥ ३ ॥ श्रवण करे जे शास्त्रने ते पामे श्रुतज्ञान. माटे श्रवण क्रियावंत, प्रणो प्रभु भगवान. ॥ ४ ॥

राग केदारो अथवा आशावरी.

प्रभु महावीरना वचन सुणो नरो. जेथी प्रगटे ज्ञानरे. रोहिणीयो जेम स्वर्गने पाम्यो. सफल करो निज कानरे. प्रभु० ॥ १ ॥ प्रभु गुरु वचनामृत सुणतां जे धारे मन [illegible] समकिती ते मि- [illegible] प्रभु० ॥ २ ॥ [illegible] सांभळी प्रभु [illegible] टाळ्या [illegible] रोहिणीयो स्वर्गने पाम्यो, [illegible] क्रियावण मुक्ति नहीं [illegible] प्रभु० ॥ ४ ॥ विनय अने बहुमान पुरःसर सांभळो प्रभुनी वाणीरे. सर्व प्रमादो दूर करीने सांभळो धारो

क्रोधादिक त्यजी दोष; हिंसादिक अव्रत तजीजी, सत्य वचन करो पोष. महावीर० ॥ ४ ॥ स्वाधिकारे सत्य वचनने, वदतां धर्म अपार; सापेक्षाए जाणशोजी, सत्यासत्य प्रकार. महावीर० ॥ ५ ॥ सत्यअसत्य वचन सकळजी, देश कालादिसापेक्ष; अधिकार समज्या विनाजी, वचन सकल निरपेक्ष. महावीर० ॥ ६ ॥ अनेकनयनी दृष्टिएजी, वदो सापेक्ष वचन; वचन भलामां वापरोजी, आशय शुभ धरो मन्न. महावीर० ॥ ७ ॥ परमार्थे उपयोगथीजी, सर्वदा वचन व्यापार; करशो निर्भयता धरीजी, करशो जग उपकार. महावीर० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावथी देवगुरुनी-धर्मनी सेवा काज; बुद्धिसागर सत्य वचनने, वदतां सुख साम्राज्य. महावीर० ॥ ९ ॥

ॐ ०प० वचनक्रिया लाभाय ज० य० स्वाहा.

पंचमी वन्दन क्रिया पूजा.

अरिहंतादिक वंदतां, भावथी मुक्ति थाय;

नवपदने वंदन करे, अपर्कीर्ति दुःख जाय. ॥ १ ॥ द्रव्यने तावथी वांदीए, गुरुने धरी बहुप्रेम; ज्ञान चरण आनंद गुण, प्रगटे योगने क्षेम. ॥ २ ॥ सात्विक वंदन श्रेष्ठ छे, मोहनी करे चकचूर; वंदक वंद्यपणुं वरे, सुख पामे भरपूर ॥ ३ ॥

संभव जिनवर वीनति, अवधारो गुण

ज्ञातारे–ए राग.

)

प्रभु महावीर वंदना, द्रव्यने तावथी होशोरे; तारे एक तुं शरण छे, म्हारो एक भरोसोरे. प्रभु० ॥ १ ॥ वन्दन आवश्यक क्रिया, केवल ज्ञाने प्रकाशीरे; देवगुरुने वंदतां, नासे सकल उदासीरे. प्रभु० ॥ २ ॥ सातनये छे वंदना, चार निक्षेपे धारोरे; शुद्धोपयोगे घटविषे, प्रगटे छे उजियारोरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ श्रद्धा प्रीति उल्लासथी, विनयने बहुमानेरे; गुर्वादिकने वंदतां; भक्तो शोभे

ज्ञानेरे. प्रभु० ॥४॥ एकवार जो भावथी, प्रभुने वंदन थावेरे; तो क्षणमां घाती हणी, केवलघट प्रगटावेरे. प्रभु० ॥५॥ प्रभु महावीरमय बनी, आतम महावीर जाणोरे, शुद्धोपयोगे वंदतां, आतम केवल ज्ञानीरे. प्रभु० ॥६॥ अरिहंतादिक वंदना, आतम प्रति ते होवेरे; आपो आपने वंदना, आपो आपने जोवेरे प्रभु० ॥ ७ ॥ व्यवहार निश्चय पूज्यने, पूर्ण प्रेमे वधावोरे; गीतार्थादिक संतने, वंदन करी त्यो स्ट्र.वोरे. प्रभु० ॥ ८ ॥ रोमराजी विकसे घणी हैडे हर्ष न मावेरे; आनंद अश्रु आखमां, गद गद वाणी सुहावेरे प्रभु० ॥ ९ ॥ पूज्यथी एक स्वरूपता, आनंदोदधि प्रगटेरे; ध्येय ध्यातानी एकता, घातां कर्मो विघटेरे. प्रभु० ॥ १० ॥ एकवार महावीरने, अमृत वंदन थावेरे बुद्धि सागर आतमा, सद्जानंदने थावेरे. प्रभु० ॥११॥

ॐ स्त० वन्दन क्रियालाजाय जः च० स्नारा.

षष्ठी ध्यान क्रिया.

आत्म शुद्धि जेथी थती, ते छे उज्वल ध्यान; धर्म शुक्ल बे ध्यानथी, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ १ ॥ मनथी ध्यान क्रिया थती, ध्यानथी कर्म विनाश; कर्म विनाशथी मुक्ति छे, मुक्ति अनंत सुखवास. ॥ २ ॥ पिंडस्थादिक ध्यानथी, अक्रिय थावो भव्य; रागद्वेषादिक विना, अक्रियता कर्तव्य. ॥ ३ ॥

ध्यान क्रिया मनमां आणीजे. ए-राग.

ध्यान करो भवी भाव धरीने, प्रभु महावीर प्रकाशेरे; अरिहंत आदि ध्यान धरतां, गुण पर्याय विकासेरे. ध्यान० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येयने ध्याननी एकता, योगे पूर्ण समाधिरे; नामने रूपनो मोह रहे नहीं, विघटे उपाधि आधिरे. ध्यान० ॥ २ ॥ शुद्धोपयोगे प्रभु महावीर, रंगरसे जे रसियोरे; क्षण क्षण प्रभुरसरंगे रीझी, चढता भावे उल्लसि-

पारे. ध्यान० ॥ ३ ॥ कर्म करे पण अक्रिय आतम,
शुद्धोपयोगे रसियोरे; पर परिणतिने दूर करीने,
निज आतममां वसियोरे. ध्यान० ॥ ४ ॥ पिंडस्था-
दिक चार प्रकारे, ध्याने आतमखुमारीरे; घटमां
प्रगटे स्वाद न उतरे, ध्यानीनो बलिहारीरे. ध्यान०
॥ ५ ॥ क्षण क्षण ध्यानीने छे महारसव, आनंदनो
वहे हेलीरे; जीवन्मुक्ति प्रभुमय जीवन, करतो नि-
जगुण केलिरे. ध्यान० ॥ ६ ॥ बाहिर अंतर सर्व-
मयी ते, सर्वथकी ते न्यारोरे; कर्ता अकर्ता योगी
अयोगी, जोगी अजोगी धारोरे. ध्यान० ॥ ७ ॥
जलपंकजवत् निर्लेपज्ञानी, आतममां मस्तानीरे;
रहे दशा नहीं प्रगटी छानी, अनुभव ज्ञाननी वा-
णीरे. ध्यान० ॥ ८ ॥ अंतरमां मन राखी वर्ते,
होय न सेश उदासीरे; कर्मविपाके सुख दुःख
वेदे, आत्मानंद विलासीरे. ध्यान० ॥ ९ ॥ श्रुत-
ज्ञाने ध्यानने ध्यातां, आतम ज्ञान प्रकाशेरे; कर्म
विपाकोदधिपर तरतो, आपोआप विलासेरे. ध्या०

सावो. लघुताए प्रभुता पावेरे. लघु० ॥ १ ॥ आठ प्रकारे मद त्यागो, देहाध्यास तजी जागो; शुद्धातम भावे लागोरे, लघुता० ॥ २ ॥ सेवक ने स्वामी थावे, ए अनुक्रम ज्ञानी पावे; मानदशा मन नहीं लावेरे. लघुता० ॥ ३ ॥ जडपुद्गलमदमां मुंझे, तेने प्रभु दिल नहीं सूझे, आत्मप्रभुने शुं पूजेरे. लघुता० ॥ ४ ॥ रस ऋद्धि गारव पडिया, शातागारवे लडथडिया, जीवोने प्रभु नहीं जडियारे. लघुता० ॥ ५ ॥ इन्द्रादिकपदवी सर्वे, रहेवुं नहीं तेहना गर्वे; प्रभु मळता नहि मन भर्मेरे. लघुता० ॥ ६ ॥ गुरुता लघुता जगमाया, मोहदशाना पडछाया, अगुरु लघु आतमरायारे. ॥ लघुता० ॥७॥ अगुरु लघु गुण उपयोगी, षट्कारक आतमयोगी, धातां न मोहे संयोगीरे. लघुता. ॥ ८ ॥ यावत् जगगुरुता आवे, तावत् लघुताना भावे, रहेशो अगुरुलघु दावेरे. लघुता० ॥ ९ ॥ दीनभाव लघुता छंडो, आत्मप्रभुता रढ मंडो, ढंगो मानतणो छंडोरे. लघुता० ॥ १० ॥

निर्विकल्पता जाणे हो. भविजन० ॥ १ ॥ गुणपर्याये अनेकता आतम,-मांही समावे ध्याने; राग रीस रूप मनकुं मरेने, शोजे केवलज्ञाने हो. भविजन० ॥ २ ॥ ज्ञाताज्ञेयने ध्याताध्येयनी, एकता अनुभव थातां; पूरण आत्म प्रतीति प्रगटे. कर्मो सकल दूर जातां हो. भविजन० ॥ ३ ॥ सत्ताए महावीर प्रभुनी, साथे एकता ताने; रहेतां आतम आनंद स्वादो, अनुभव अनुभवी जाणे हो. भविजन० ॥ ४ ॥ रागद्वेषनुं द्वैत टळयाथी, निज गुण पर्याय योगे; आतम एकता थावे नक्की, रहे न भिन्नता भोगे हो. भविजन० ॥ ५ ॥ जड द्रव्योना गुण पर्यायो, तेथी आतम न्यारो; आपोआप स्वभावे खेले, एकता एह विचारो हो. भविजन० ॥ ६ ॥ अनंत ज्ञानानन्दथी आतम, एक स्वरूप सुहायो; गुणगुणीनी एकता एवी, लीनता आनंद पायो हो. भविजन० ॥ ७ ॥ आदि अंत न आतम एवो, भावो ध्यावो गावो; परमातम महावीर प्रभुथी

एकमेक थइ जावो हो. भविजन० ॥ ८ ॥ एकलो आव्यो एकलो जाशे, कोइ न साथे जाशे; प्रभु महावीर जिन उपदेशे, चेते ते सुख पाशेहो. भविजन० ॥ ९ ॥ तत्त्वमसिसोऽहं पदध्याने, अेकता अनुभव आवे; बुद्धिसागर आतममहावीर, आपोआप सुहावेहो. भविजन० ॥ १० ॥ ॐ० एकता लाभार्थे ज० य० स्वाहा ॥

नवमी समताक्रिया पूजा.

समताथी पूजो प्रभु, विभुमहावीर जिनेश; ज्यां समता प्रगटी खरी, त्यां नहि रागने द्वेष. ॥१॥ सकल साधना सिद्धता, समता प्रगटे थाय; क्षायिक समता प्रगटतां, बाकी न कार्य रहाय. ॥ २ ॥ आतम ते परमातमा, समभावे प्रगटाय; आपो आपनी पूजना, अेकता अनुभव पाय. ॥ ३ ॥

मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार.

ए राग.

समतारस सागर प्रभुजी, वीर जिनेश्वर देव;

समभावे प्रभु सेवतांजी, नासे कर्म कुटेव. महावीर जिनेश्वर, धन्य धन्य तुम उपदेश, ॥ १ ॥ जडचेतनमय विश्वमांजी, समभावे उपयोग; विषमपणुं प्रगटे नहींजो, समता आनंद भोग. महावीर० ॥ २ ॥ खंधक शिष्यो पांचशेजी, प्राणांते समभाव, मोहने मार्यो छेवटेजी, धन्य ओ समता दाव. महावीर० ॥ ३ ॥ मुनि मेतार्ये समपणुंजी, धार्युं छंडयो देह, शुभाशुभ बुद्धि विनाशी, पाम्या मुक्तिगेह. महावीर० ॥ ॥ ४ ॥ समता भावने आदर्योजी, गज सुकुमाल मुनीश, देहनी ममता परिहरीजी, सोमिलपर नहि रीस. महावीर० ॥ ५ ॥ अन्य तीर्थियो पण लहेजी, समता जोवेरे मुक्ति, समता ते पाम्या पछीजी, नहीं तप किरिया रीति. महावीर० ॥ ६ ॥ दर्शन ज्ञान चरण सकलजी, समतामांही सुहाय, समता प्रगटे सिद्धताजी, अेक पलकमां थाय. महावीर० ॥ ७ ॥ काने खीला मारि-

याजी, पगपर राखीरे खीर; तो पण समभावे रह्याजी, परमेश्वर महावीर, महावीर० ॥ ८ ॥ पार्श्व प्रभु समता धरीजी, कमठे कोधोरे रोप; नासापर जल आवियुंजी, तोपण रोप न तोप. महावीर० ॥ ९ ॥ वृत्ति शुभाशुभ नहीं रहेजी, प्रगटे केवलज्ञान; आपोआप प्रभु विभुजी, चिदानंद भगवान्. महावीर० ॥ १० ॥ ग्रहण त्याग इच्छा नहींजी, वर्ते पूर्व प्रयोग, समभावे शुद्धातमाजी, चिदानंद गुणभोग. महावीर० ॥ ११ ॥ शुभाशुभ वृत्ति विनाजी. कर्म निकाचित जोग; जोगवतां तनु वर्ततांजी. केवळ ज्ञाननो योग. महावीर० ॥ १२ ॥ हर्षशोक सुखदुःखमांजी, समता भावेरे वर्त; बुद्धिसागर आत्ममांजी, अनंत आनंद शर्त. महावीर० ॥ १३ ॥

कलश–गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.
नवविध किरिया भक्तिथी पूज्यो, आतम अनु-

भव पायो; एकता लीनता समतायोगे, सहज स्वभावे सुहायेरे. महावीर ॥ १ ॥ श्रद्धाप्रीति पूजन अर्चन, स्पर्शनभाव सहायो; दास्यने सख्यने आतमऐक्ये, अमृत किरयाए छायोरे. महावीर ॥२॥ नवधाभक्ति सापेक्षाए, अनेकभेदे ध्यायो; अभेदभावे अर्हत्भक्ति, करतां सुख प्रगटायोरे. महावीर ॥३॥ सम्यग्दृष्टिए भक्तिनां अंगो, ग्रहीने सापेक्षभावे; आतमशुद्धि करीए रंगे, सहेजे आत्मस्वभावेरे. महावीर ॥ ४ ॥ भक्तिना तानमां भेद न भासे, आतमज्ञाने प्रकाशे; नवविध किरिया अक्रियपदने, आपे परनोल्लासेरे. महावीर ॥ ५ ॥ अन्यो अन्यने विषगरलथी, विश्वभ्रमणता थावे; तद्धेतु अमृत किरिया योगे, परमानंद सुहावेरे. महावीर ॥ ६ ॥ म्हारे तो गुरुकृपा पसाये, अमृत आनंद आयो; आपोआप स्वरूप सुहायो, अक्रिय अनुभव पायोरे. महावीर ॥ ७ ॥ ओगणिश अठोत्तरनी साले, ज्ञान पंचमी शुक्रवारे: नवधा किरिया पजा रची शुभ,

भव्य जीवोने तारेरे. महावीर० ॥ ८ ॥ सानंद सं-
घनी शुभ भक्तिअे. कर्युं चोमासुं जावे; पूजा रचंतां
अनुभव आनंद, प्रगट्यो भक्ति प्रभावेरे. महावीर०
॥ ९ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, श्वेतांबर मुनि
राजा; तपगच्छ जगगुरु हीर विजय सूरि, संयमी गुण
शिरताजार. महावीर० ॥ १० ॥ पट्टपरंपरा श्री नेमि-
सागर, रविसागर गुरुराया; श्रीसुखसागर समता
दरिया, संवेगी शिरसुहायारे. महावीर० ॥ ११ ॥
गुरु कृपाअे पूजा रची शुभ, संघ सकल हितकारी;
बुद्धिसागर मंगल माला, आनंदघन अवतारीरे.
महावीर० ॥ १२ ॥ ० समता लाभार्थे ज० य० स्वाहा ॥

अष्टकर्मसूदनार्थे अष्ट प्रकारी पूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, तीर्थंकर जगदेव; परमप्रभु परमातमा, भावे करीये सेव. ॥ १ ॥ अष्ट कर्मना नाशहेत, पूजा अष्ट प्रकार; रचतां गुण अठ संपजे, प्रगटे शांति अपार. ॥ २ ॥ ते माटे पूजा रचुं, संक्षेपे हितकार; प्रभु महावीर देशना, अनुसारे सुखकार. ॥ ३ ॥

प्रथम ज्ञानावरणीयसूदनार्थे जलपूजा.

न्हवणनी पूजारे निर्मल आतमारे, ए राग.

न्हवणनी पूजारे भवि भावे करोरे, प्रभु महावीरनी सत्य; ज्ञानविना अज्ञाने प्राणियारे, करता आस्रव कृत्य. न्हवण० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणे ज्ञान न संपजेरे, भवमां भमवुं थाय; ज्ञानावरणनी पांच प्रकृतिछेरे, ज्ञानाच्छादन न्याय. न्हवण० ॥ २ ॥ क्षयोपशमने क्षायिक भावथीरे, ज्ञानावरण विनाश; मति श्रुत अवधि मनपर्यव अनेरे; प्रगटे केवल खास.

द्वितीया दर्शनावरणीयकर्मसूदनार्थं चंदनपूजा

दर्शनावरण हठाववा, चंदनपूजा सार; दर्शनावरणनी प्रकृति, नव कीजे परिहार. ॥ १ ॥ चक्षुआदि चारनां, आवरणो छे चार; पांचे निद्रा त्यागता, दर्शन गुण जयकार. ॥ २ ॥ देवगुरुने धर्मनो, आशातनथी कर्म, बंधातां ते जाणीने; सेवो जिनवर धर्म. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयम रागे–ए राग.

चंदनपूजाए प्रभु चर्चो, निजआतमने अर्चोरे; दूर करो झट कर्मनो फडचो; राखो न भेदनो कर्चो रे. चंदन ॥ १ ॥ दर्शनावरणना क्षयोपशमथी, क्षायिकथी गुण प्रगटेरे; चक्षु अचक्षु अवधि केवल, दर्शनथी दुःख विघटेरे. चंदन ॥ २ ॥ दर्शननुं आवर्ण करे ते, दर्शनावरणी जाणोरे; दर्शनावरणने हणवा माटे, सेवाभक्ति प्रमाणोरे. चंदन ॥ ३ ॥ गुरुनो भला प्रीतियोगे; आशातनने वियोगेरे; सद्गुण गणना पूर्णप्रयोगे, वर्ते न हर्षे शोकेरे. चंदन ॥ ४ ॥

दुःखमां समभावथी, आतमछे निर्बंध. ॥ २ ॥ आतम सुखने वेदवा, पुष्पे पूजो राज; आत्ममहावीर प्रगटतां, सकळां सर्वे काज. ॥ ३ ॥

इडर आंबा आवलीरे. ए राग.

पूजो प्रभु महावीरनेरे, जेणे जणाव्यो धर्म; पुष्पमाल प्रभु कंठमांरे, स्थापतां शिवशर्मरे. भवि-जन. पूजो महावीर देव, फळती प्रभुनी सेवरे, भवि जन!!! पूजो० ॥१॥ शाताअशाता वेदतांरे, समभाव पुष्पनी माळ, धारंतां प्रभु कंठमांरे, रहे न मोहनी जाळरे. भविजन पूजो० ॥ २ ॥ छाया ताप परे आ-वर्तुरे, सुखदुःख वाराफेर; पुण्यपापकर्मो फळेरे, करो न राग न वेररे. भविजन! पूजो महावीर देव० ॥३॥ सुखदुःख वेदे समपणेरे, अधिकारे करे काज; सहज समाधि ते योगछेरे, प्रगटे शिव साम्राज्यरे. भवि० पूजो० ॥ ४ ॥ शुद्धोपयोगे वर्ततांरे, वर्णादिक करे कर्म; बाहिर व्यवहार साधतांरे, वर्ते आतम धर्मरे. भवि. पूजो० ॥ ५ ॥ बाहिर वर्ते बाह्यमांरे, अंतरमां





मांहे थाय; नामरूपनिर्मोहथीरे, केवल ज्ञान सुहायहो. जिनवर० आतम० ॥११॥ आतम आतमने दियेरे, प्रभु भक्ते निज मुक्ति; बुद्धिसागर आत्मनारे, उपयोगे नहि भोनिद्रो. जिनवर० आ० ॥१२॥
ॐ० प० मोहनीय कर्ममूदनार्थ धूपं य० स्वाहा ॥

पंचम आयुःकर्मसूदनार्थ दीपपूजा.

सुरनर तिर्यच नरकनुं, आयुः चार प्रकार: चार गतिमां आयुथी, तनु स्थितिने निर्धार. ॥ १ ॥ चारगतिमां आयुथी, बंधावानुं थाय; अनंतजीवन पामतां, आयु बंधन जाय. ॥ २ ॥ ज्ञानदीप प्रगटावीने, पूजो प्रभु जिनराज; अनंत शाश्वत जीवनने, पामो सिद्धे काज. ॥ ३ ॥

मल्लिजिननाथजी व्रतलीजेरे ए राग.

प्रभु महावीरपर धरो प्रीतिरे, टाळो दुष्टाचार अनीति. प्रभु० द्रव्य दीपक धरी भाव दीवोरे, प्रगटावी अनंतुं जीवोरे; प्रभु वचनामृतने पीवो. प्रभु०

॥ १० ॥ मनुजभवमां थायछे मुक्तिरे, ज्ञान वैराग्य व्रत धरो नीतिरे; टळे सर्व प्रकारनी भीति. प्रभु० ॥११॥एवी प्रभुमहावीरनीवाणीरे,ज्ञानवैराग्यथी दिल आणीरे; प्रभुपूजा करो गुणखाणी. प्रभु० ॥ १२ ॥ ज्ञानानन्द अनंतपद वरवारे, भवपाथोधि वेगे तरवारे; बुद्धिसागर गुरु अनुसरवा. प्रभु० ॥ १३ ॥

ॐ प० आयुः कर्म सूदनार्थं दीपं य० स्वाहा ॥

षष्ठनाम कर्म सूदनार्थ अक्षत पूजा.

नामकर्मनी प्रकृति, एकसोत्रण छे सर्व; देहादिकमां मोह वा, करवो नहि कंइ गर्व. ॥ १ ॥ नाम कर्मना क्षयथकी, अरूपपद प्रगटाय; रूपीपणुं नहि आत्मनुं, रूपादिक जडमांय. ॥ २ ॥ अक्षयरूप छे आतमा, अक्षत करवा हेत; व्यवहारे अक्षतथकी, प्रभु पूजा संकेत. ॥ ३ ॥

सनेही संत एगिरि सेवो. चउदभुवनमां
तीर्थ न एवो.—ए राग.

प्रभु महावीरजी जयकारी, पूजो अक्षतथी

॥ ७ ॥ नामकर्म अघातीते जाणो, ज्ञान
बंध प्रमाणो; निर्मोही आतमराणो, नि
खेले मझानो. प्रभु० ॥ ८ ॥ नाम कर्मने प
वापरो जैन धर्म प्रचारे; वापरे ते धर्म न ह
कर्तव्य निज अधिकारे. प्रभु० ॥ ९ ॥ ए
प्रभुनी वाणी, सर्व नयथी यथातथ्य जाणी;
रीतिए मनमां आणी, कर्म तलने पीलवा
भु० ॥ १० ॥ नामरूपमां नहीं मुंझाशो, शुद्ध
ोगथी सुख पाशो; बुद्धिसागर दिल हरखाशो,
नंद स्वरुप प्रकाशो. प्रभु० ॥ ११ ॥
ॐ० प० नाम कर्म नाशार्थे अक्षतं य० स्वाहा

सप्तमी गोत्रकर्मसूदनार्थ नैवेद्यपूजा,

उच्च नीच व्यवहारथी, निश्चयथी नहीं को
ानीच जडमोहथी, आतमस्वरुपे न जोय. ॥
ने नीच बे गोत्रछे, यश अपयश करनार; मा
अपमानना, हेतुछे व्यवहार. ॥ २ ॥ प्रभु मह



मानी शुं फूलोरे, छाजे नहि कोइ अवस्था गर्वनी. आतम० ॥ ४ ॥ आतमदे भरिया जीव दुःखने धरि- यारे, स्वप्नानी वाजीरे जूठी जागतां; उच्चने नीच पणुं स्वप्नानी वाजीरे; आतमरे अगुरुलघु घट लागतां. आतम० ॥ ५ ॥ कुल विद्या लक्ष्मी सत्ता हिणाइरे, पामतां हर्ष न उद्वेगे रहो; उच्च नीचनी माया स्वप्ना जेवीरे, जाणीरे समभावे जीवन वहो. आतम० ॥ ६ ॥ मान अने अपमानने लाभाला- भेरे, समताने धारी कर्तव्यो करो; योगी भक्तजीवन एवुं आतमनुंरे, परमातम प्रगटावी मुक्ति वरो. आतम० ॥ ७ ॥ उच्चने नीचना भेदे नहि मुंझा- शोरे, खत्तारे खाशो पडती पामशो; आतमने कदि नीच न मानो भव्योरे, बाहिरनी वृत्तिथकी विरामशो. आतम० ॥ ८ ॥ उच्चने नीचनी भ्रांति कर्मनी दृष्टिरे, आतमनी दृष्टिए कशुं छे नहीं; आतम दृष्टि जीवनथी संचरशोरे, परमानंद पामोरे अधिकारे वही. आतम० ॥ ९ ॥ उच्चनीचना भेदे सुखदुःख वृत्तिरे, स्वप्नामां गुटे जागतां नहीं; कर्म अज्ञानी ठेला ज्ञानी जाण्यारे,

सर्व इच्छाओ करीने निरोधरे, निजातम रीजीए;
गुणपर्यायदान निज दीजीए, चिदानंदनो लाभज
निजरे. फले॥गुणपर्याय भोगोपजोगमां, परपुद्गलनी
नही खीजरे. फले० ॥ १ ॥ शुद्ध आतमवल प्रग-
टावीए, दुष्ट टाळीए पशुबळ वेगरे. फले॥ मन इन्द्रि
योमां पशुवल वसे, तेथी करीए नहिं अविवेकरे.
फले० ॥ २ ॥ लब्धि शक्तिओने प्रगटावीए, नहीं
रीजीए खीजीए वाझरे. फले. परमार्थमां तनमन
वापरो, करो विश्वमां सारां काजरे. फले० ॥ ३ ॥
जैन धर्मने संघनी उन्नति, करवामां होमशो सर्वरे,
फले० अणशक्तिए खेद न कीजीए, होय शक्ति
छतां नहि गर्वरे. फले० ॥ ४ ॥ देवगुरुने धर्मनी भ-
क्तिमां, मृत्यु थतां न हठीए लगाररे, फले. ॥ खेद
भय अने द्वेषने त्यागीए, करो परमार्थो नरनाररे.
फले० ॥ ५ ॥ समभावथी कर्मांतरायनो, क्षयोपशमे
क्षय झट थायरे, फले.॥ दानलाभादि वापरो भावथी,
थतां निष्काममुक्ति सुहायरे. फले० ॥ ६ ॥ जोव

षडावश्यकपूजा.

श्री परमेश्वर वीरजिने, चोवीशमा जिनराज;
त्रिशलानंद जगधणी, सर्वदेव शिरताज. ॥ १ ॥
समवसरणमां बेसीने, भाख्यो साचो धर्म; षट् आवश्यक भाखियां, गृही साधुनां कर्म. ॥ २ ॥ षट् आवश्यक कर्मथी, चित्तनी शुद्धि थाय. मनशुद्धिथी आतमा, केवल ज्ञानने पाय. ॥ ३ ॥ सामायिक चउविश जिन, स्तव गुरुवंदन वेश; प्रतिक्रमण आवश्यके, नासे कर्मना क्लेश. ॥ ४ ॥ कायोत्सर्गने आदरे, करतां प्रत्याख्यान; आत्मशुद्धिथी प्रगटतुं, सहेजे केवलज्ञान. ॥ ५ ॥ षडावश्यकनी रचुं, पूजा द्रव्यने भाव; जेदे उपयोगे भली, भवोदधिमा नाव. ॥ ६ ॥ अष्टप्रकारे पूजना, प्रत्येक पूजा दीठ; आत्मानुभव पामवा, ज्ञान क्रियाथी मिष्ट. ॥ ७ ॥

प्रथम सामायिक आवश्यक पूजा.

सामायिक करतां थकां, रागद्वेष विनाश; क्ष-

उपयोगे धर्म महाय छे, चंचळता मननी दूरे जाय छे; वैराग्ये भाव भलो परखाय छे, धन्य धन्यरे समताभाव सुहाय छे. अंतर०॥१॥ गुरुमुखथी सामायिक उच्चरे श्रावकरे, लाखचोराशी जीवयोनिने खमावतो; दश मनना दश वचनना द्वादश कायारे, बत्रीश दोषो टाळी आतम चावतो. अंतर० ॥ २ ॥ पिंडस्थादिक चार ध्यानने धरीएरे. धरीएरे धर्म शुक्ल बे ध्याननें; आर्त रौद्र बे ध्यान वूरां परिहरीएरे, तजीएरे माया ममता मानने. अंतर० ॥ ३ ॥ धर्मग्रंथने भणीए गणीए भावेरे, विकथानी वातो सेश न कीजीए; द्रव्य गुण पर्याये वस्तु विचारीरे, वस्तु स्वभाव धर्म महीने रीझीए. अंतर० ॥ ४ ॥ स्थिर उपयोगे ध्यान समाधि वरीएरे, झळकेरे ज्योति आतमरामनी; श्वासोश्वासे अजपाजाप स्मरीएरे, वाटेरे चालो अविचळ धामनी. अंतर० ॥५॥ आत्मज्ञानथी सत्य समाधि पामेरे, पामेरे रागद्वेष बे दोषने; मैत्री प्रमोद करुणा माध्यस्थ विचारेरे;

मळवुं, प्रभु ज्योते ज्योतथकी मळवुं; पछी जगमां नहिंरे अवतरवुं, प्रभु प्रार्थी निश्चय पद वरवुं. जग० ॥ ९ ॥ प्रभु वीर बोध मनमां वसियो, चोविश जिन स्तवनानो रसियो; बुद्धिसागर प्रभु उल्लसियो, शुद्धातम भावे विकसियो, जग० ॥ १० ॥
ॐ० प० चतुर्विंशति स्तव आराधनार्थं जलं० य० स्वाहा॥

तृतीया गुरुवन्दन आवश्यक पूजा.

दुहा.

आवश्यक गुरुवन्दना, प्रतिदिन प्रणये काल, करतां ज्ञानादिक गुणो, प्रगटे मंगलमाल. ॥ १ ॥ श्रद्धा प्रीति भावथी, गुरु वंदंतां ज्ञान; गुरुवण ज्ञान न थाय छे, गुरुवण होय न सान. ॥२॥ विधिपूर्वक गुरुवन्दना, करतां नासे कर्म; शुद्धातम घट उल्लसे, प्रगटे साचो धर्म. ॥ ३ ॥ गुरुदीवो गुरुदेव छे; गुरुनो सत्याधार; गुरुवण मुक्ति न कोइनी, समजो नरने-नार. ॥ ४ ॥ वंदो पूजो सद्गुरु, प्रणमो वारंवार; सूरिवाचक यतिसंयमी, भक्ति सदा फळनार. ॥ ५

॥ ४ ॥ मोहीना मन मीठो कहेणी, पण कडवीछे रहेणी; कहेणी प्रमाणे थातां रहेणी, चढशो मुक्ति निसरणी हो. जगपति० ॥ ५ ॥ मनवचनकाया प्रतिक्रमणथी, मनवचन काया शुद्धि; क्षण क्षण उपयोगे पडिक्कमणुं, करतां चिदानंद ऋद्धिहो. जगपति० ॥ ६ ॥ आतमना उपयोगे ध्याने, नहि आवश्यक करणी; शुभाशुभपरीणाम निवृत्ति, भवपाथोधितरणीहो. जगपति० ॥ ७ ॥ चउनिक्षेपे सातनयोथी, प्रतिक्रमण अवधारो. निज निज अधिकारे प्रतिक्रमतां, शुद्ध थता आचारोहो. जगपति० ॥ ८ ॥ अप्रशस्य कषाय प्रवृत्ति, प्रतिक्रमता संसारी; प्रतिक्रमणथो क्षणमां मुक्ति, पाम्या घणा नरनारीहो. जगपति० ॥ ९ ॥ पंच पडिक्कमणां व्यवहारे, निश्चय निज उपयोगे; जाणीने वर्ते जे भावे, रहे न भवभय रोगेहो. जगपति० ॥ १० ॥ पश्चात्तापथी भूलो खमावो, खमो दुर्गुणने हटावो; बुद्धिसागर सद्गुरु संगे, आनंद मंगल पावोहो. जगपति० ॥ ११ ॥

ॐ० प० प्रतिक्रमणाराधनार्थं ज० य० स्वाहा ॥

कह्यां, सुख. ते लहिये अनुकूल. दुःख. कुसुम० ॥ ३ ॥ वणिक सुता लीलावती, सुख. पामी जिम शिवस्थान, दुःख. तिम भवि भावे कीजीए, सुख. पूजा श्रीभगवान्. दुःख. कुसुम० ॥ ४ ॥

वीरजिणेसर उपदिशे—ए देशी.

सत्य शौच कुसुमे करी. जे निज चेतन पूजेरे; कर्म कलंक अनादिनुं, तेहथकी झट धूजेरे. सत्य० ॥१॥ सत्य जे आत्मस्वरूपनी, श्रद्धा मनमां कीजेरे; उपनीतादिक भेदने, जाणी सत्य वदीजेरे. सत्य० ॥ २ ॥ कूडकपट त्यागी करी, आप स्वभावे रहीएरे; त्याग करो परभावनो, शिवसुख सहेजे लहीएरे. सत्य० ॥ ३ ॥ मन व्यापार निवृत्तिथी, शान्ति चेतन पामेरे; आतम अनुभव जागतां, कर्मरोग झट वामेरे. सत्य० ॥ ४ ॥ परपुद्गल संयोगथी, चेतन चउगति जटकेरे; तेहतणा त्यागे करी, समतो चेतन अटकेरे. सत्य० ॥ ५ ॥ स्वगुणे करी सत्यछे, आत्म-

धूपपूजा० ॥ ३ ॥ भवि भावे विनयंधर सुख पा
तोरे, धूपपूजाथी विस्तार; तिम भवि भावे कर
थकोरे, वुद्धि शिवसुख निरधार. धूपपूजा० ॥ ४ ॥

गिरुआरे गुण तुमतणा–ए देशी.

ध्यानधूपनी पूजना, करीए भविजन भावे
परपुद्गलदुर्गंधता, तेहथकी दूर जावेरे. ध्यानधूप प्र
टावीए ॥ १ ॥ आर्त्त–रौद्र दुर्ध्यान छे, धरतां दुः
बहु सहीएरे, तेनो त्याग करो भवि, आप स्वभा
रहीएरे. ध्यान० ॥ २ ॥ धर्मध्यान शुभगति दी
शुक्लध्यान शिव आपेरे; गुणठाणे गुण उपजे, भ
भवनां दुःख कापेरे. ध्यान० ॥ ३ ॥ आत्मध्या
धरतां थका, दुर्गंधी दूर नासेरे; योग समाधि लग
वतां, चढीए मोक्ष आवासेरे. ध्यान० ॥ ४ ॥ अ
स्थिर आ संसारमां, जीवे बहु दुःख सहियांरे; न
कतणां दुःख भोगव्यां, ते नवि जाए कहियांरे. ध्यान
॥ ५ ॥ चेतन नरक–निगोदमां, वार अनंती भमि
योगे; चारगति संसारमां, अज्ञाने जीव रमियो

सुतारीना बेटा तुने विनंवुंरे लोल—ए देशी.

भवि भावे दीपकली पूजनारे लोल, जिन
गळ करीए नित्यजो; मिथ्यात्व अनादि निवा-
एरे लोल, प्रभु पूजीए चोखे चित्तजो. प्रभु दी र
ना रळियामणीरे लोल, ज्युं पूजा करे सुर-इंद्रजो
म पूजो भवि जिनचंदजो, लहो शाश्वत शिव
ख कंदजो. प्रभु० ॥ १ ॥ धूम अज्ञान नासे वेग-
रे लोल, शुद्ध आत्मरूप प्रगटायजो; रजत—कनक
ताम्रनां कोडियांरे लोल, तेमां घृत धरो हित ला-
जो. प्रभु० ॥ २ ॥ जिनमंदिर वासण मांजियेरे
ोल, घृत कोडिया मांजिये खासजो; दीवा उघाडा
वि मूकीएरे लोल, चित्त होय जो शिवसुखघ्या-
जो. प्रभु० ॥ ३ ॥ दीपपूजाथी जिनमति धनसि-
रे लोल, जिम पामी शाश्वत सुखठायजो; तिम
किजावे जिन पूजीएरे लोल, इम बुद्धिसागर
ण गायजो. प्रभु० ॥ ४ ॥

खुरमां खाजां सार; फेणी जलेबी ख
करो मनोहारहो भ. नै. ॥ ३ ॥ गुंदवड
शाल दाल घृत गोळ; प्रभु भक्तिथी पु
ज्युं रंग चोलहो भ. नै. ॥ ४ ॥ इणीय
नारे, जे करशे नरनार; बुद्धि शिवसुखसं
लहे भवपारहो भ. नै. ॥ ५ ॥

(वीर जिणेसर उपदिशे–ए देशी.

भावनापूजा भावथी, नैवेद्यनो जे क
इणसम छे भावना, भावे ते शिव वरशेरे.
आ संसार अनित्य छे, संध्यारंगसम देखो
जन्ममरण कर्यां, आवे नहि तस लेखोरे.
रण नहि संसारमां, मरता जीवने कांइरे;
या जीवने, नहि कोइ जगमां सखाइरे. ना
ण भुवनमां प्राणियो, भटक्यो अनंतिवाररे;
टनापणे हुवे, पिता पुत्र विचाररे. ना. ॥
प स्त्रीपणे पावतो, ए संसारस्वरूपरे; संसार
शे, ते पडशे भवकूपरे ना. ॥ ॥

परिवारने, मारुं मारुं मानेरे; सत्यवचन जिनवरतणां,
सांभळतो नहि कानेरे. भा. ॥ ६ ॥ शरीरपंजरमां
रह्यो, चेतन एक मन आणरे; एकलो आव्यो एकलो,
जाइश परभव जाणरे. भा. ॥ ७ ॥ तन धन मंदिर
मालीआ, पुत्र कलत्रने भाइरे; ताराथी ए भिन्न छे,
नहीं आम सगाइरे. भा. ॥ ८ ॥ सातधातुथी नी-
पनी, अशुचिमय छे कायारे; विष्टा मूत्र शरीरमां,
करवी शी [illegible] तस मायारे. भा. ॥ ९ ॥ जीव माताना
पेटमां मलमूत्रमां रहियोरे; दुःख अनंतु त्यां सह्युं,
[illegible] वहेयोरे. भा. ॥ १० ॥ समये समये
रमन, रागादिकथी बांधेरे; शिवसुखकारण धर्मने,
केम मनथी नवि साधेरे. भा. ॥ ११ ॥ जेथी कर्म
[illegible] नहीज संवर जाणोरे; करवो आदर
तेहना [illegible] धर्म वखाणोरे. भा. ॥ १२ ॥ तप
[illegible] चित्त धारीने, लोकस्वभावने समजोरे;
आपस्वभाव स्थिर थइ, परपुद्गल मन रमजोरे.
भा. ॥ १३ ॥ बोधिदुर्लभ जाणीने, जिनआणा शिर

चित्तधारीरे; द्रव्यभावथी धर्म जे जाणे, जाउं तेहनी बलीहारीरे. शा. ॥१॥ सातनयो उचर तस भेदो, आगमथी जे जाणेरे; सप्तभंगी जे शुद्धि जाणे, ते मुक्तिसुख माणेरे. शा. ॥ २ ॥ षड्द्रव्यगुणपर्याय जाणे, जाणे आतमस्वरूपरे; उपादेय आतमने जाणे, ते न पडे भवकूपरे. शा. ॥ ३ ॥ नवतत्त्व जिनेश्वर भाखे, बोध तास जे करशेरे; हेय ज्ञेय उपादेय समजी, समकित-श्रद्धा धरशेरे. शा. ॥ ४ ॥ श्रद्धाथी समकित शुद्ध प्रगटे, तेथी विरति लहियेरे; विरतिथी क्षय कर्मनो करतां, शिवपुरमारग वहियेरे. शा. ॥ ५ ॥ बाहिर अंतर परम ए तीन, आत्म परिणति समजोरे; परमातम पद लक्ष्य विचारी, अंतर आतम रमजोरे. शा. ॥ ६ ॥ शरीर वाणी मनथी जूदो, आत्मद्रव्य चित्त धरतोरे; अरूपी निःसंग आतम निर्मल, तास ध्यान मन करतोरे. शा. ॥ ७ ॥ राग द्वेष मोहरायना योद्धा, हेलो साथे वढतोरे; आतमा आप स्वरूपे खेलो

सर्वोपरी गीतं.

(नमो नमोभवियण भावशुं ए–ए देशी.)

अष्टप्रकारी पूजना ए, द्रव्य भाव मनोहार; भविजन पूजोए ए. जिनप्रतिमा जिनसारिखी ए, भाखी शास्त्रमजार. भवि.॥१॥ दर्शन दीठे देवनुं ए, पापपंक दूर थाय; भवि. भगवतीमांहो मुनिवराए, प्रतिमावंदन जाय. भावि. ॥२॥ नामनिक्षेपो उच्चरेए, स्थापना किम न मनाय; भवि. शुद्धभावथी पूजतांए, जन्ममरण दूर जाय. भवि. ॥३॥ सांकळचंदसुत जाणीएए, चुनीलाल उदार; भवि. नथुभाइसुत जाणीएए, जेठाभाइ हितकार. भवि. ॥ ४ ॥ जेठालाल नरोत्तम कारणेए, मूळचंदभाइना काज; भवि. डाह्याभाइनी विनतिए, करतां शिवसुख राज. भवि. ॥ ५ ॥ शासन वीर जिनेश्वराए, हीरविजय सूरि राय; भवि. सहेजसागर उपाध्यायजीए, तास शिष्य वखणाय. भवि. ॥६॥ तास शिष्य उपाध्याय-

कलश.

एम सकलसुखकर द्रव्य भावे, पूजा अष्टप्रक
री ए; भणे भणावे सुणे जे भवी, ते शिवसुख ल
भारी ए. तपगच्छशाखा गगनमंडळ–दिवाकरपे
छाजता; वैराग्यरंगे व्याप्युं जस मन, महिमा ज
जस गाजता. ॥१॥ रविसागर गुरु प्रेमे प्रणमुं, संवेग
सिरदार ए; जस नाम देतां सकलमंगल, पामे भवी
नरनार ए. तस पदपंकजभृंगसम श्री–सुखसागरगु
यास ए; एम बुद्धिसागर शिव सनातन, पा
मंगलमालए. ॥ २ ॥

इति अष्टप्रकारीपूजा संपूर्णा.

राजा अजिरामरे; वामामाता सुरजविश्राम. संखेश्वर. ॥१॥ प्रभु मातकुखे जब आयारे, इंद्र चोसठ सुरगिरि लायारे; सुरासुर मनमा हरखाया. संखेश्वर. ॥ २ ॥ एक लाखने साठ हजाररे, आठजाति कळश मनोहाररे; प्रभु न्हवण करे जयकार. संखेश्वर. ॥ ३ ॥ इंद्राणीयो हस्ती गातीरे, जिनदर्शन करो हरखातीरे; नाटक करी मनमां माती. संखेश्वर. ॥ ४ ॥ एवा पार्श्वप्रभु घर लावोरे, शुभ सिंहासन पधरावोरे; प्रभु न्हवण करी सुख पावो. संखेश्वर. ॥५॥ रोगशोग सहु दूर नासेरे, प्रभुश्रद्धा मनमां वासेरे; शाश्वतपद बुद्धि जासे. संखेश्वर. ॥६॥

मंत्रम्–ॐ नमो भगवते श्री संखेश्वरपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय जन्मजरामृत्युनिवारणाय क्षुद्रोपद्रपशमनाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजमाहे स्वाहा.

आतमारे, तेम भोक्ता हृदये धार. श्री संखे. ॥ ५ ॥
शुभाशुभकर्म ग्रही भोगी आतमारे, वेदे शाता अशाता दोय; देव मनुज नारक तिरिरे, चउगतिमां भटके जोय, श्री संखे. ॥६॥ जीवे कीधां पुण्य पाप ते भोगवेरे, परपुद्गलसंगे खास; राच्यो माच्यो पुद्गलमां वस्योरे, बन्यो पुद्गलनो जीव दास; श्री संखे. ॥ ७ ॥ प्रभुपूजा करतां प्राणिया सुख लहेरे, नासे कर्माष्टकपाश; स्वामीवच्छल नवकारशीरे, हेतु सुखनां दीसे खास. श्री संखे. ॥८॥ शुभभावे नैवेद्य थाळमां मूकीनेरे, प्रभु आगळ धरीए चंग; रत्नत्रयी कमळा वरेरे, बुद्धिशाश्वतपदरंग. श्री संखे. ॥ ९ ॥
मंत्रम्—ॐ नमो भगवते—जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

चतुर्थपूजा.

दुहा.

शरीरपुद्गलमां वस्यो, पुद्गल मानो गेह; परभव साथ न आवतुं, क्षणमां नाशी तेह. ॥१॥ देह

अनंतां छंडियां, जटकी आ संसार; लाख चोराशी हुं भम्यो, तार तार प्रभु ! तार. ॥२॥

(सांभळजो मुनि संयम रागे, उपशम श्रेणि
चढीआरे–ए राग.)

श्री संखेश्वरपार्श्वप्रभु नित्य, मनमंदिरमां धरीएरे; ध्यावी गावी पाप गमावी; श्रद्धा समकित वरीएरे. श्री संखे. ॥१॥ यादवलोकनी जरा निवारी, षड्दर्शन विख्यातरे; वामानंदन, जगजन रंजक नमतां पावन गात्ररे. श्री संखे. ॥२॥ परपरिणतिथी अष्टकर्म ग्रही, परभावीपरकर्तारे; अनुलवसीपण कर्मपिंजरमां, वसियो निजगुण धरतारे. श्री संखे. ॥३॥ औदारिक वैक्रिय आहारक, तेजस कार्मण पंचरे; पंचशरीर घर मानी वसियो, करतो कर्मनो संचरे. श्री संखे. ॥४॥ सुरापानी थकतां फेर वळी, धत्तुरभक्षक जेमरे, अवली परिणतिथी अहो आतम, स्वरूप भूल्यो तेमरे. श्री संखे. ॥ ५ ॥ भवमां भमतां पुण्योदयथी, सद्गुरु सहजे मळियारे; बुद्धि शिवसुख पामे अविचल, सकळ मनोरथ फळियारे. श्री संखे. ॥६॥

एक कळश ग्रहण करे, बीजो केशरनी वाटकी ग्रहण करे, त्रीजो फुलनो हार वा छुटां फुल ग्रहण करे, चोथो धूप, पांचमो दीपक, छठो रकेबीमां अक्षतनो स्वस्तिक लइने उभो रहे, सातमो नैवेद्य लइ उभो रहे, आठमो फळ लइ उभो रहे. दरेक पूजाए अभिषेक करी पूजा करवी.

५ कळश, ५ केशरनी वाटकी, ५ फुलना हार, धूपधाणुं, ५ दीपक, ५ चोखाना साथीआ, ५ नैवेद्य, ५ फळ.

वास्तुकपूजा जेनुं घर करे, अने तेमां प्रवेश करे ते भणावे. तेने घेर आ पूजा भणावतां आनंद मंगळ थाय. रोग, शोक, वहेम सर्वे नाश पामे. नवस्मरण, कुंभनी स्थापना करी अने दीवो करी जणवां. शक्ति होय तो स्नात्रीयाने जमाडवा. इंद्राणीओ छोकरीओने करे तो करवी.

इति वास्तुकपूजा संपूर्ण

रु उपर प्रभुने लाव्या, जलथी इन्द्रे न्हवराव्या;
चिरूप धरी गुणगायारे, तेम स्नात्र करी नरनारी,
करे समकित शुद्धि अपारी. प्रभु. ॥ २ ॥ जाव
समकित जल अभिषेके; मिथ्यामेल रहे न विवेके;
पूजो महावीरजिनने टेकेरे, त्यजी जूठी दुनिया-
दारी; प्रभु शरण ग्रहो हितकारी. प्रभु. ॥ ३ ॥ मों-
घाफाले नयने दीठा, लाग्या आतमरूपे मीठा; थया
कुदेव मोहो अनीठारे, लागी तुजथकी एक तारी;
लागी ताहारी मूर्ति प्यारी. प्रभु. ॥ ४ ॥ तुज उपर
जग सहु वारी, प्रभु ताहारो साची यारी; मरुं मर्या
पहेलां मोह मारीरे, एवी पूजा थनो हितकारी; करो
करुणा एहवी सारी. प्रभु. ॥ ५ ॥ प्रभु पूजा करुं
प्रभुरंगे, निज आतम शुद्ध उमंगे; कदि पडुं न
मिथ्या ढंगेरे, बुद्धिसागर प्रभु अवधारो; लही आ-
तम सुखनी खुमारो. प्रभु. ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं प० जलं यजामहे स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं. परम० चंदनं, य० स्वाहा॥

तृतीया पुष्प पूजा.

द्रव्यजीवथी पुष्पनी, पूजा प्रभुनी वेश; करतां दुर्गुण दुःखडां, नासे सघळा क्लेश. ॥ १ ॥ भावथी पंचाचार छे. गुणकरपुष्प प्रधान; तेथी जिनवर पुजतां, बनो स्वयंभगवान् ॥ २ ॥ काल अनादि न ओळख्यो, ओळख्यो ज्ञाने आज, पंचाचारना पुष्पथी, पूजुं जिनराज ॥ ३ ॥

सांभळजो मुनि संयम, रागे-उपशम
श्रेणि चढियारे ए. राग.

पूजुं महावीर जिन जयकारी, चिदानंदरूप-धारीरे; तुज उपयोगे क्षणक्षण जीवुं, भक्तिभाव वधारीरे. पूजुं ॥ १ ॥ ज्ञानने दर्शन चरणाचारे, तपने वीर्याचारेरे; रहेतां द्रव्यने भावथी आतम, धर्मसुगंधी प्रसारेरे. पूजुं. ॥ २ ॥ क्षयोपशमने उपशम क्षायिक, भावनी शुद्धि वधारेरे; पंचाचार सुपुष्पे पूजा, करतां

शिवपद धोरे. पुजुं ॥ ३ ॥ मैत्रीप्रमोद मध्यस्थ करुणा, माध्यिक पुष्पनी माळारे; प्रभुना कंठे प्रेमे चढावी, पीवुं प्रभुरस प्यालारे. पूजुं. ॥ ४ ॥ प्रभु गुण गावे समरे ध्यावे, आतम प्रभुरूप थावेरे; जेवी भावना तेवी सिद्धि, अंतरमां सुख पावेरे. पूजुं. ॥ ५ ॥ हाथे चढियो आंखे देखायो, हवे न छोडुं क्यारेरे; बुद्धिसागर आतमउजागर, उपयोगे निज-तारेरे. पूजुं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं प० पुष्पं य० स्वाहा.

चतुर्थ धूप पूजा.

द्रव्य भाव बे भेदथी, धूपनी पूजा श्रेष्ठ; करतां आतम बळ वधे, पडतुं पशु बल हेठ. ॥ १ ॥ चारे ध्यानना धूपथी, पूजतां जिनराज; मोहनी दुर्गंधी टळे, सिद्धे शिवपद काज. ॥ २ ॥ भावथी प्रभुनी पूजना, आतम पूजा जाण; सम्यग्दृष्टि जीवनी, करणी सर्व प्रमाण. ॥ ३ ॥

झुंमखणानी देशी.

धन्य प्रभु महावीरनेरे, सत्य जणाव्यो धर्म; महावीर पूजीए; चार वर्षना ध्यानथीरे, टाळ्यां घातीकर्म. महावीर. ॥१॥ पिंडस्थने पदस्थथीरे, रूपस्थ रूपातीत; महावीर. चारध्यानरूप धूपथीरे, आतम शुद्ध प्रतीत. महावीर. ॥ २ ॥ आर्त रौद्रदुर्गधनेरे, टाळो वेगे दूर, महावीर. एकता लीनतायोगथीरे, प्रभुजी हजराहजूर. महावीर. ॥ ३ ॥ धर्म शुक्ल वे ध्यानथीरे, आपोआप प्रकाश; महावीर. ध्यानधूपे प्रभु पूजतांरे, व्यक्तानंद विलास. महावीर. ॥ ४ ॥ इयल भ्रमरी संगथीरे, भ्रमरीरूप सुहाय. महावीर. बुद्धिसागर आतमारे, प्रभुध्याने प्रभु थाय. महावीर, ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीं० प० धूपं० यजामहे स्वाहा

पंचमी दीपक पूजा.

पंचमी दीपक पूजना, करतां आतमप्रकाश; मतिश्रुत ज्ञानना दीपके, मिथ्यातमनो नाश ॥१॥

सम्यग् ज्ञानी जीवने, सघळुं सह्नु प्रणमाय; आस्रव ते परिश्रवपणे, थावे आतममांह्य. ॥ २ ॥ दीपक सोमे ज्ञाननो, दीपक जो प्रगटाय; आतम जाणे विश्वनो, ज्ञानी निश्चय थाय. ॥ ३ ॥

जिनपद जगमां यावुं जाणो स्वरूप रमण
सुविलासी. ए राग.

धन्य प्रभु महावीर जिनेश्वर, अनंतगुणा उपकारीजी; जेनुं संप्रति शासन वर्ते, भावदया भंडारी; जिनवर भजीएजी; पामी सम्यग्ज्ञान, दीपके यजीएजी. ॥ १ ॥ दर्शनमोह टळ्याथी सम्यग्,–भावे ज्ञान प्रकाशेजी; मतिश्रुत अवधिने मनपर्यव, केवलज्ञान विकासे जिन० ॥ २ ॥ मति अठ्ठावीश त्रणसो चालीश भेदे वीरे प्रकाश्युंजी; चउद वीश श्रुत भेद प्रकाश्या, समकितमां विकास्युं. जिन० ॥ ३ ॥ अवधि असंख्यप्रकारे प्रगटे, मनपर्यव बे भेदेजी; क्षयोपशमभावे ए चार, ज्ञान ज तमने छेदे. जिन०

लगनी. ॥ २ ॥ फलपूजा करतां भावे, उपयोगे शिवफल पावे; भक्ति नकामी नहि जावेरे. लगनी. ॥ ३ ॥ समकितोनी सहु करणी, मोक्षमहेलनी निस्सरणी; पूजादिक निर्जर वरणीरे. लगनी.॥ ४ ॥ तुज श्रद्धा प्रीति साची, जडनी माया सहु काची; साची रहो तुजमां राचीरे लगनी. ॥ ४ ॥ निष्कामे सेवाशक्ति, करतां प्रभु प्रगटे शक्ति; बुद्धिसागर प्रभुव्यक्तिरे. लगनी. ॥ ६ ॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो, त्रिशलानंदन शासन नायक; परमेश्वर जगरायो; अष्टप्रकारी पूजा रचीने, भावथी गायो ध्यायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ चउनिक्षेपे सातनयोथी, पूजा पूज्यने जाणी; द्रव्यने भावथी पूजा करतां, पामे मुक्ति निशानीरे ॥ महावीर. ॥ २ ॥ सम्यग् दृष्टिने द्रव्यने भावथी, पुजा शिवसुखकारी; चढतेभावे निर्जरा-

चारे महियां, शुद्धभावे गहगहिगारे. श्रावक. ॥ ४॥ षडावश्यक भावे साधे, गुरुने मुनि आराधेरे; चढता भावे निशदिन वाधे, प्रगट्या गुण न विराधेरे. श्रावक. ॥ ५ ॥ देवगुरुने धर्मनी सेवा, करता मुनि व्रत इच्छारे; गुरुने विनवे आपो मुझने, सर्व विरतिनी दीक्षारे. श्रावक. ॥ ६ ॥ सर्व विरति लेवानी इच्छा, श्रावकने होय नक्कीरे; बुद्धिसागर आतमवलथी, पामे दीक्षा पक्कीरे.

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्सद्गुरुभक्तये, धूपं य. स्वाहा ॥

पंचमहाव्रत सर्वविरतिग्रहणरूपा पंचमीदीपपूजा.

देशथी सर्वविरतिविषे, अनंती आतमशुद्धि, प्रगटे आत्मानंदता, क्षयोपशमगुणऋद्धि. ॥ १ ॥ छट्ठागुणस्थानकतणो, क्रिया द्रव्य चारित्र; भावथी विरतिपरिणति, प्रगटे आत्मपवित्र. ॥ २ ॥ एहनप-धको त्यागी मुनि, अनंतगुण छे महान्; वंद-मंदरने सुरगिरि, चारित्रगुण पडवान् ॥ ३ ॥ दरश·

ज्ञानने चरणमां, वर्ते सहज समाधि; आतम आनन्दफलतणा, स्वादे रहे नहि आधि. ॥ २ ॥ आतम आनन्द पामवा, ध्यान समाधि योग; उपादान कारण कह्युं, निमित्त गुरु संयोग. ॥ ३ ॥

जिनपद जगमां जाचुं जाणो–ए राग.

सर्व विरतिधर गुरु जयकारी, नमुं पूजुं उपकारीजी, समकित चारित्रदायक गुरुनो, जगमां छे बलिहारी; गुरुजी जजीए जी, पामी गुरु उपदेश, मोहने तजीएजो ॥१॥ आर्त रौद्रने प्रगटयां त्यागे, धर्मध्यानमां जागेजी; वर्ते आतमगुणना रागे, रहेता जे वैराग्ये. गुरु० ॥ २ ॥ वर्ते आतमगुण उपयोगे, आतम आनंदभोगेजी; दिलमां रहे नहि हर्षे शोके, क्षण न रहे जे ढोंगे. गुरु० ॥ ३ ॥ आतमना उपयोगे म्हाले, आतम गुण अजुवाळेजी; मोहासक्तिनां घो घाळे, चारित्र एवुं पाळे. गुरु० ॥ ४ ॥ ध्यानसमाधि योगे रमता, मोहवने नहि भमताजी;

समकितचारित्र गुण प्रगटाया, आतम अनुभव पायारे. एम. ॥२॥ गुरुने गातां गुरुगुण प्रगटे, निश्चय एह जणाया; ओगणिश अठ्योतर चैतरनी, पूर्णिमा पूजा रचायारे. एम. ॥ ३ ॥ गुर्जरदेश विजापुरमांही, पूजा रची सुखकारी; संघ चतुर्विध मंगलकारी, शांति पुष्टि करनारी रे. एम. ॥ ४ ॥ गुरुने गातां प्रगटी-खुमारी, उतरे ते न उतारी; बुद्धिसागरगुरु जयकारी, पूजो भवी नरनारी रे. एम. ॥ ५ ॥

श्री सद्गुरु सुखसागर गुरुपूजा.

प्रथम सेवारूप जलपूजा.

दोहरा.

प्रणमुं श्री परमातमा, तीर्थंकर महावीर; गोतम आदि सूरिवरा, अनेकगुण गंभीर. ॥ १ ॥ श्वेतांबर तपगच्छमां, अनेक मुनि गुणवंत; संप्रति जे जग विचरता, तेमां उत्तम संत. ॥२॥ श्री सुख-सागर मुनि गुरु, थया जगत् विख्यात; सर्व गच्छ

मुनिवृन्दर्थी, वखणाया जगत्रात ॥ ३ ॥ गुरु गातां स्तवतां धर्तां. पूजंतां सुख थाय; ते कारण गुरु पूजना, रचना मुक्ति सुहाय. ॥४॥ गुरु चरण स्थापी करी, पूजा अष्ट प्रकार; द्रव्य भावथी जे करे, ते तरतां नरनार. ॥ ५ ॥

मेरु शिखर न्हवरावे हो सुरपति, ए राग.

सद्गुरु जग उपकारी हो, सद्गुणी; सद्गुरु जग उपकारी; समकित चारित्र दायक सद्गुरु, जगमां तुज बलिहारी; सर्व भावे तुजमां अर्पाचुं, सद्गुरु सेवा ए मारी हो. सद्गुणी. स० ॥ १ ॥ नाम रूपनो मोह निवारी, आतम जाव समारी; व्हालुं सहु तुज उपरे वारी, सेवा करुं सुखकारी हो. स० ॥ २ ॥ पवित्र सेवा जलथी पूजुं, तुज चरण उपकारी; पुष्ट निमित्त गुरुजी कलिकाले, आतम शुद्धिकारी हो. स० ॥ ३ ॥ कुंने बांध्युं वारि रहे पण, घटवण होय न पाणी; ज्ञाने मनवश पण गुरु मळतां, ज्ञान प्रगट

गुणखाणी हो. स० ॥ ४ ॥ गुरुजी मळिया फेरा ट-ळिया, गुरुसेवामां हालिया; सुखसागर गुरु पूजा करतां, बुद्धि वंछित फळियां हो. स० ॥ ५ ॥
ॐ अर्हं श्री सद्गुरु चरण पूजार्थ जलं. य. स्वाहा.॥

द्वितीया गुरु समतारूपा चंदनपूजा.

आतमने शीतल करे, समता चंदन मान; स-मता चंदन पामीने, पूजुं गुरु गुणखाण. ॥ १ ॥ भव-दव ताप शमाववा, समता चंदन वेश; गुरु हृदयमां जो वसे, तो प्रगटे नाहि क्लेश. ॥ २ ॥

ध्रुवपद गोडी राग.

लगनी श्री सद्गुरुथी लागी, शांति प्रगटी भा-गीरे; रंगायो रागी पे रंगे, जोयुं हवे घट जागीरे. लगनी० ॥ १ ॥ गुरुथी महावीर जाप जपंता, आ-तमना उपयोगीरे. सरल हृदयने समता गुणमय, भासक निजगुणभोगीरे. लगनी० ॥ २ ॥ प्रेमो देने परस्पर पूरा, निश्चय निर्मलनुरागे; सजाए पर-

गुरुनी रीझमां विश्वनी रे, खोज न गणवी लगार; गुरुरागे रंगाइयारे, ते धन्य धन्य नरनार. गुरु. ॥२॥ नगुरा नास्तिक लोकथीरे, जेह नहीं भरमाय; शिरसाटे गुरु सेवनारे, पामे करुणा सहाय. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरु कृपा ते जन लहेरे, गुरुरूप थै जाय; निष्कामी थै गुरु भजेरे, गुरुथी अलगो न थाय. गुरु. ॥४॥ गुरुरागी गुरुगुण ग्रहीरे, सुखसागर महाराज; गुरुगुणप्रेमसु पुष्पथीरे, पूजे शिव साम्राज्य. गुरु. ॥ ५ ॥ द्रव्यभाव गुरु रागियारे, करता आतमशुद्धि; बुद्धिसागर आतमारे, आविर्भावे ऋद्धि. गुरु. ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गुरुपद पूजार्थं पुष्पं यजामहे स्वाहा॥

चतुर्थी गुरुनाम मंत्रजापरूप धूपपूजा.

सद्गुरुनामने स्थापना, द्रव्यभाव निक्षेप; साचा ते अवलंबतां, रहे न कर्मनो रेख. ॥ १ ॥ सद्गुरु नामना जापथी, मोह न आवे पास; प्रभु महावीर नामना, जापे सद्गुण वास. ॥ २ ॥ सद्गुरु, नामना

पंचमी गुरुगम ज्ञानरूप दीपकपूजा.

गुरुथी ज्ञान प्रकाश छे, गुरुवण छे अज्ञान; गुरुगम वण शास्त्रो भणे, थाय न सम्यग्ज्ञान. ॥ १ ॥ जैनागम शास्त्रो सकल, गुरुगमथी समजाय; गुरुनी सेवा शक्तिथी, सबलुं सहु प्रणमाय. ॥ २ ॥ नयगम भंग निक्षेपथी, षड्द्रव्यादिक ज्ञान; गुरुमुखथी श्रवणे सुणी, करीए प्रगटे सान. ॥ ३ ॥

ध्यानक्रिया मनमां आणीजे ए राग.

गुरुनी सेवा भक्ति करंतां, सम्यग्ज्ञान सहीजेरे; सम्यग् मति श्रुत ज्ञान प्रगटतां, आतमरूपे वहीजेरे; गुरुगम ज्ञान करो नरनारी. ॥ १ ॥ गुरु विनये ने गुरु बहुमाने, गुरु आणाने पाळेरे; गुरुमाटे स्वार्पण भक्तिए, प्रगटे ज्ञान सुचालेरे. गुरु. ॥ २ ॥ गुरु कृपाथी सम्यग्दृष्टि, प्रगट सर्व छे सवळुंरे; गुरु कृपा वण आपमतिने, मिथ्यादृष्टिए अवळुंरे. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरुकृपा प्रगटे एम वर्ते, विनयी जे नर-



स्तिभारी, जयजयगुरु तुज जग बलिहारी; द्रव्यभावथी पंचाचारी, उपयोगी गुरुजी हितकारी. अक्षत. ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत पालनकारी, प्रतिबोध्यां बहुलां नरनारी; एकांते गुरुजी सुखकारी, अंतर आत्मप्रदेश विहारी. अक्षत. ॥ ३ ॥ आतम सुखसागर गुरुयारी, रोमेरोमे लागी यारी; बुद्धिसागरगुरु अनगारी, आनंद मंगलप्रद अविकारी. अक्षत. ॥ ४ ॥

ॐ अर्हं महावीरजिनेश्वरपट्ट परंपर प्रवर्तित श्री गुरुपूजार्थं अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तमी ध्यानरूपा नैवेद्यपूजा.

ध्यानरूप नैवेद्यथी, गुरुपूजा करनार; उपशम क्षयोपशम अने, क्षायिकगुण वरनार. ॥१॥ असंख्य प्रदेशी आतमा, प्रतिप्रदेशे अनंत; गुणपर्यायनाध्यानथी, प्रगटे शिवपदकंत. ॥ २ ॥ बाह्य नैवेद्यना रसवडे, नित्य तृप्ति नहि थाय; आतमरस नैवेद्यथी, जडरस रुचि विणशाय. ॥ ३ ॥

अष्टमी ज्ञानानन्दानुभवरूपा

आतम आनंद पामीने, जडर
रमदशाना अनुभवी, जय जय गुरु
आतम अनुभवफलतणो, आनंद
आतमरसी ज्ञानी गुरु, पामे भव
द्रव्यभाव फल पामवा, फलथी पूजे
सुखरस लहे, पछे न पाछो तेह ॥

निशदिन जोउ म्हारी वाटडी, घेर

ए राग.

आतम अनुभव फलवडे, ३
द्रव्य थकी भाव संपजे, निज गुण ३
॥ १ ॥ संत गुरुनो पूजना, नहीं
कारणे कार्यनो सिद्धि छे, प्रभुता
॥ २ ॥ गुरु हृदयमां छे प्रभु, तेम
गुरु पूजे प्रभु पूजिया, श्रद्धा तेथे

साले, चैत्र वदि बीजने गुरुवारे. गुरु. मधु
मां भक्ति विचारे, पूजा रची शुभ भाव
॥२॥ गुरु पूजा जे भणे नरनारी, पामो
अपारी; घर घर आनंद प्रगटो भारी, गु
शांति घनारी. गुरु. ॥३॥ गुरु भक्तोनी चढ
धर्म कमाणी सत्य कमाशो; गुरुभक्ते
जाशो, गुरु नामे ए थाशो सुहाशो. गुरु
द्रव्यथी भावथी महा उपकारी, श्री सुखसाग
कारी. बुद्धिसागर गुरु बलिहारी, व्हारे श
डली तारी. गुरु. ॥ ५ ॥

भक्तिथी, पूजा रची जवी तारेरे. गुरु.॥२॥ गुरुभक्तिथी पातिक शापो, आधि व्याधि प्रणाशो; गुरुभक्तिथी संघमां घर घर, मंगल सुखडां प्रकाशोरे. गुरु. ॥३॥ गुरुभक्तिथी भक्तजनोनी, वळशो सुखनी वेळा; गुरु भक्तिथी प्रभुपद पामो, मळशो वांछित मेळारे. गुरु. ॥ ४ ॥ गुरुभक्तिरसियां नरनारी, सुखसागर गुरु धारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि—कीर्ति जयपदकारीरे. गुरु. ॥ ५ ॥

गुरुपूजा भणाववानी विधि.

उपाश्रयमां अगर बीजी जग्याए गुरुनां पगलां स्थापवां; केशरचंदननी बेपादुकाकरवी, अगरचोखानी पण बे पादुका करवी. गुरुनी छबी होयतो ते स्थापवी, स्नात्र भणाववानी जरूर नथी; जलपूजानो कलश, जलपूजा भणावीने आगल स्थापन करवो. पाषाणधातु आदिनी गुरुमूर्ति होयतो तेनापर जलनो अभिषेक करवो, तथा चंदननी पूजा वगेरे जिनप्र-

तिमानी माफक करवी, पगलां पाषाणनां होयतो पर जल अभिषेक तथा चंदन पुष्प वगेरे प्रतिमान पेठे चडाववां, धूपदीप आगल करवो. पगलां अगर मूर्तिनी आगळ, स्वस्तिक नैवेद्यफलने ढोकवां; केशरचंदननी पादुका करी होयतो तेनी आगळ जल कलशादिक मूकवा. जिनमन्दिरमां गोखलामां गुरु-मूर्ति अगर पादुका होयतो श्रीजिनप्रतिमानो मूळ गभारो बंध करीने गुरु पादुका अगर मूर्ति आगळ पूजाभणाववी, अरिहंत जेम परमेष्टी छे तेम आचार्य उपाध्याय अने मुनि ए त्रण पंचपरमेष्टीमां छे तेथी तेमनी मूर्ति पादुका छे ते जिनमूर्ति वा पादुकानी पेठे पूजवा योग्य छे जे दिवसे सूरिवाचक साधुए देहोत्सर्ग कर्यो होय ते दिवसे गुरुपूजा भणाववी. स्नात्रियाओने जमाडवा. तेमने लाडु आदिनी प्र-भावना करवी. पूजामां आवनार सर्वनी प्रभावनाथी भक्ति करवी. शक्ति होयतो जमण पण करवुं. पा-दुकां अगर मूर्ति आगळ टलव करवो. सांजे

योरे. जिन० ॥ ३ ॥ गंगादिक निर्मल जल स्नाने भावथी भक्तिकामेरे; बुद्धिसागर पूजा करतां, आतम निज गुण पामेरे. जिन० ॥ ४ ॥

द्वितीया चंदनविलेपनपूजा.

द्रव्यभावथी कीजीए, चंदनपूजा वेश; भावथी समचंदनवरे, पूजे विघटे क्लेश. ॥ १ ॥

धन्याश्री रागेण गीयते.

द्रव्यने भावथी चंदनपूजा, जिनवरनी जयकाररे; सत्य सुगंधी चूर्ण विलेपन, समता चंदन साररे. द्रव्य० ॥ १ ॥ प्रभु नवअंगे चंदन चर्चे, भाव धरी नरनाररे; श्रद्धा प्रीति प्रभुपर वधतां, परपरिणति परिहाररे. द्रव्य० ॥ २ ॥ तुजमां राचुं तुजपर माचुं, भूली दुनिया भानरे; बुद्धिसागर प्रभुमय जीवन; रंगे थयो गुल्तानरे. द्रव्य० ॥ ३ ॥

तृतीया चक्षुर्युगलपुजा.

द्रव्य भावथी चक्षुनी, युगलपूजा सुखकार; चढता प्रीति भावथी, करतां शिवसुख सार. ॥१॥

दीपचंदी ताल सोरठ.

जिनदर्शन मोहनगारा, ए राग.

तुज मूरति प्रभु !!! मुज व्हाली, आंखे देखी धारीरे. तुज० सम्यग् मति श्रुत चक्षु युगलथी, पूजा जयकारी; केवल दर्शन ज्ञान प्रगटतां, पूजा प्रकारीरे. तुज० ॥ १ ॥ शब्दनये तुज मूरति री, देखे तस बलिहारी; नयव्यवहारे स्थापना], जविजीवने हितकारीरे. तुज० ॥ २ ॥ तुज क शिवपुरनी बारी, मिथ्यामत संहारी, सम्यग् नी करनारी, अनंत कर्म संहारीरे. तुज० ॥३॥ थी पूजंतां नरनारी, आनंदनी लहे पयारी; ब्धिसागर जिनगुण धारी, पूजा छे सुखकारीरे. ज० ॥ ४ ॥



चतुर्थी वासपूजा ॥

चंदन घसी घनसारने, मेळवी पुष्प सुवास;
वासथकी प्रभु पूजीए, नावथकी विश्वास. ॥ १ ॥

प्रभुगुण अमृत पीजीए, जिनराजने प्रेमे पूजीए; द्रव्यथकी शुभगंधी पुष्पे, प्रभुनी पूजा कीजीए, भावथकी व्रतपंचाचारना, पुष्पे पूजीने रीझीए. जिनराज० ॥ १ ॥ क्षयोपशम उपशमने क्षायिक, आतमगुणे प्रकटीजीए; आतमगुण अनुयायी चेतना, प्रगटावी सुख लीजीए. जिनराज० ॥ २ ॥ प्रभु तुजथी मुज लगनी लागी, मुज पर करुणा कीजीए; बुद्धिसागर आतम आनंद, रसभर प्याला पीजीए. जिनराज० ॥ ३ ॥

षष्ठी पुष्पमाला पूजा.

पुष्पमालथी पूजता, प्रभु गुण प्रकटे अंग;
ईयल भमरी ध्यानथी, भ्रमरी पद लहे रंग. ॥१॥

चेतन अब मोहे दरिशन दीजे. ए राग.

प्रभुजी महावीर तुज रट लागी, थयो तुज गुण अंतर रागी. प्रभुजी० तुज गुण गणतां पार न आवे, कोटी वर्ष वही जावे; तुज अनुभव झांखी

घट प्रगटे, आनंद जगमां न मावे. प्रभु० ॥ १ ॥
आतमगुण पंच पुष्पनो माला, जावथो पूजा प्यारी;
जिनपूजा ते आतमपूजा, निश्चयथो सुखकारी.
प्रभुजी० ॥ २ ॥ आतम द्रव्यना गुण पर्याये, आ-
त्मोपयोग समारी; बुद्धिसागर आविर्भावे, प्रभु
प्रकटे जयकारी. प्रभुजी० ॥ ३ ॥

सप्तमो कुसुम आंगी रचनारूपपूजा.

देव गुरुने धर्मनो, श्रद्धा भक्ति प्रकार;
कुसुम आंगी पूजाभली, करतां जवी नरनार. १

राग विरुओ अथवा पीलु ॥

सोवे सोवे सारी रेंन गुमाइ. ए राग.

कुसुम आंगीनी पूजा सारो, द्रव्य भावथी
जवि हितका... ० स-... सड सठ ... वि-
कुसुम... आंगी ... री. कु... देव
धर्मनो जक्ति, कर ... ०
...मकित वण व्रत तप ... हि

भवनो चीति. कु० ॥ २ ॥ तुज आगमनी श्रद्धा धारी, तुजपर तन मन जाउ वारी; कु० ॥ तुज संतोनी साचो यारी, बाकी जूठी दुनियादारी. कु० ॥ ३ ॥ श्रावक साधु गुणगण भारी, भावथी पूजा ए निर्धारी; कु० ॥ बुद्धिसागर भक्ति प्यारी, भावथकी शिवसुख देनारी. कु० ॥ ४ ॥

अष्टमी चूर्णपूजा.

घनसारादिक चूर्णथी, जिनपति पूजा एह; भावथी उपशम चूर्णथी, पूजे जिनवर तेह. ॥ १ ॥

ध्रुवपद काफी रागेण गीयते.

प्रभु तुज दर्शननी बलिहारी, दर्शननी बलिहारी. प्रभु० द्रव्यने भावथी दर्शन पामे, धन्य ते नरने नारी; द्रव्यभाव चूरणथी पूजा, करता तस बलिहारी. प्रभु० ॥१॥ क्रोध मान मायाने लोभनो, उपशम जेटलो थावे; तेटलो प्रभु गुण अनुभव आवे, समकितीने ए सुहावे. प्रभु० ॥ २ ॥

राग फाग–सिद्ध जजो भगवंत, प्राण

ए राग.

जिनवर छे जयकार, जवी; भावथी
भावथको जिनपूजा, अमृतरस घ
आतम गुण पर्यायस्वजावे, धर्म प्र
भवी० ॥ १ ॥ जिनवर वाणीपुष्पना
शांति थनार. भवी० अनुजवपुष्पना
सुगंधनी बहु श्हार. भवी० ॥ २ ॥ म
दूरे नासे, समता शीतलता सार. भ
तुज उपदेश स्वरूपी–मेघे मोहुं अपार
पुष्पना मेघो तुज शिर उपर, वर्षावुं
भवी० बुद्धिसागर मुजपर वर्षो, जि
अपार. भवी० ॥ ४ ॥

त्रयोदशमी अष्टमाङ्गलिक पूज

स्वस्तिक ने श्रीवत्स ठे, घट व
नंदावर्तने वर्धमान, मीनयुग दर्पण

महावीर पट्ट परंपरा, तपगच्छ सागर शाखे, रवि-सागर गुरु सुखसागर गुरु, जिन आणा दिल राखेरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ मधुपुरीमां पद्मप्रभु जिन, गुरुनी पूर्ण कृपाए; आनंद मंगल ऋद्धि सिद्धि, पूजा करतां थाएरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ घर घर संघमां आनंद मंगल, पूजाथी सुख भारी. बुद्धिसागरसूरि ऋद्धि, वृद्धि कीर्ति जयकारीरे. प्रभु० ॥ ५ ॥

अथ नवपद लघु पूजा.

प्रथम अरिहंत पद पूजा.

परम प्रभु परमातमा, परब्रह्म महावीर; शासनपति अरिहंत जिन, सर्व धीर महाधीर. ॥ १ ॥ वंदी पूजी ध्याइने, नव पद पूजा सार; रचुं स्वपरहित कारणे, आत्म शुद्धि करनार. ॥ २ ॥ तीर्थंकर सर्वे प्रभु, अर्हत् पदमां समाय; चार निक्षेपे जाणतां, पूजे शिव सुख थाय. ॥ ३ ॥

राग. सोरठ.

अरिहंत द्रव्यभाव सुखकारी, साची लागी अरिहंत यारी. शुद्धातम उपकारी. अरिहंत. चोत्रीश अतिशय धारी जिनेश्वर—वाग्गुणे जयकारी; पांत्रीश वाणीगुणना धारक—तीर्थंकर हितकारी. अरिहंत ॥ १ ॥ संघ चतुर्विध तीर्थ स्थापक,—केवलज्ञानी निराकारी विश्वोद्धारक कर्म संहारक, शुद्धानंदना धारी अरिहंत. ॥ २ ॥ तुजपर पूरण प्रीति प्रगटी होवी न उतरे उतारी; निश्चयथी अरिहंत निजातम जाण्युं उपयोग धारी. अरिहंत. ॥ ३ ॥ सत्ता धर्मे ज्ञाने अरिहंत, निश्चय नय व्यवहारी; बुद्धिसागर अरिहंत आतम—शुद्ध बुद्ध अविकारी. अरिहंत ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं परम॰ अर्हन् पद पूजार्थं जलं०—य० स्वाहा.

द्वितीया सिद्धपद पूजा.

पूजुं प्रभु गुण भावथी, सिद्ध सदा जयकार; अष्टगुणी परमातमा, एकत्रिंश गुणधार. ॥ १ ॥ अनंत;

ज्योते झळहळे, अनंत आनंद धामः निराकार परब्रह्मने, हो उपयोगे प्रणाम. ॥ २ ॥

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो. सारंग वा.
राग—आशावरी.

निरंजन सिद्धप्रभु सुखकारी, कर्म रहित जयकारी. निरंजन० क्षायिक नवलब्धि गुणधारी, निराकार निर्धारी; अनंत ज्योते झळहळता विभु, पूर्णानंदी अपारी. निरंजन० ॥ १ ॥ अक्षय अरूपी जन्म मरण नहीं, गुणपर्यायाधारी; शुद्धातम परब्रह्म अखंडित, अविनाशी अविकारी. निरंजन० ॥ २ ॥ सकल सिद्धने वंदु पूजुं, शुद्धोपयोग समारी; सत्ताए निज आतम सिद्ध छे; समरंतां सुख भारी. निरंजन० ॥ ३ ॥ सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्रना, शुद्धोपयोगे विहारी, बुद्धिसागर सिद्ध स्वयं थै, पामे शिव नरनारी. निरंजन० ॥ ४ ॥

ॐ०॥ सिद्धपद पूजार्थे जलं० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी उपाध्याय पद पूजा.

द्रव्य भाव वाचक नमुं, पूजुं जग हितकार;
ज्ञानी पंच महाव्रती, सेवंतां सुखकार. ॥ १ ॥

आज सखी मुज व्हालमा, मन मंदिर आये.
ए राग. वेलावल. ॥

वाचक पदने वंदीए, पूजीए जयकारी; वाचक सेवा भक्तियो, निज शुद्धि थनारी. वाचक. ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भावथी, वर्ते जयकारी; निश्चय दृष्टि दिल धरी, वर्ते व्यवहारी. वाचक. ॥ २ ॥ धर्म शास्त्र पाठक प्रभु, विश्वजीवोपकारी; आतम उपयोगे रहे, ब्रह्म वाचक धारी. वाचक. ॥ ३ ॥ निश्चय वाचक आतमा, पचीश गुण धारी; बुद्धिसागर धर्मना,—वाहक हितकारी. वाचक. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं०—प० वाचक पदपूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

षष्ठी दर्शनपद पूजा.

सम्यग् दर्शन पद नमुं, पुजुं ध्यावुं सत्य, सम्यग् दर्शन पामतां, सफलां धर्मनां कृत्य.

राग. गोडी. निशानी कहा बतावुंरे. ए लय. ॥

अनुभव दर्शन पामोरे, गुरुगमथी नरनार. अनुभव० ॥

देवगुरुने धर्मनीरे, श्रद्धा प्रीति थाय; सडसठ बोले अलंकर्युंरे, प्रगटे दिलमां जणाय. अनुभव. ॥ १ ॥ द्रव्यभाव व्यवहारथीरे, निश्चय समकित जाण; सातनयोथी जाणतांरे, रहे नहीं अज्ञान. अनुभव. ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चरित्रनीरे, एकपरिणति थाय; निश्चय दर्शन आतमारे, शुद्धोपयोगे सुहाय. अनुभव. ॥ ३ ॥ सम्यग् दर्शन पामतांरे, निश्चय मुक्ति थाय; बुद्धिसागर आतमारे, परमातम पद पाय. अनुभव. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं० प० दर्शनार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

पशो नरने नारी; बुद्धिसागर शुद्धातम रस,—स्वाद
सह्यो तपधारी. महावीर० ॥ ४ ॥

कलश.

गाइ गाइरे नवपदनी पूजा गाइ०॥ ओगणिश अव्योत्तर आश्विन बीज, मेसाणामां रचाइरे, नवपदनी पुजा गाइ ॥ वीर प्रभुनी पट्ट परंपर, श्वेतांबर सुखदायी; तपगच्छ हीरविजय सूरि जगगुरु, पट्ट परंपरा आइरे. नव० ॥ १ ॥ नेमिसागर रविसागर गुरु, सुखसागर गुरु ध्यायी; नवपद पूजा रचतां ऋद्धि, वृद्धि कीर्ति सुहाइरे. नव० ॥ २ ॥ घट घट नवपद ऋद्धि सिद्धि, सत्ताए रही छे सुहाइ; बुद्धिसागर पुर्णानन्दनी, प्रगटी घटमां वधाइरे. नव०॥३॥

ॐ० प० तपः पदपूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

धार. योगने धारोजी; प्रथम गुरु देव सेव, धरीए आचारोजी. ॥ १ ॥ ओघे देव गुरु वृद्ध सेवा, पूजन थाय सुरागजी, सदाचार प्रवृत्ति प्रगटे, तपनी वृत्ति त्याग. योगने. ॥ २ ॥ उपकारीनी सेवा थावे, प्रभु दर्शन गुणरागजी; चारिसंजीवन दृष्टांते, धर्म कर्म वै-राग्य. योगने. ॥ ३ ॥ देव गुरुनी निन्दा न थाती, थाय सुपात्रे दानजी; परोपकार प्रवृत्ति थावे, गुण ग्रहणता तान. योग. ॥ ४ ॥ प्रभुता पामे गर्व न थातो, सत्य पथ्य हित बोलजी; सत्य तत्त्वनी इहा प्रगटे, सत्यासत्यनो तोल. योग. ॥ ५ ॥ साधु संतनी सेवा भक्ति, रुचे धर्मोपदेशजी; मार्गानुसारी नीतिरीत, मुक्तिपर नही द्वेष. योग. ॥ ६ ॥ प्रमाणिक व्यवहार प्रवृत्ति, सत्यप्रतिज्ञा पळायजी; चोरी व्यभिचार व्यसन निवृत्ति, कुआचार वर्ताय. योग. ॥ ७ ॥ मांस मदिरा त्यागने सज्जन,–रीतिनो व्यवहारजी; मात पिता गुरु वर्गनो आज्ञा, ऐवो सदाचार धार. योगने. ॥ ८ ॥ नास्तिक दुष्टनी ..

न रूचे, स्वा प्रगटे विचारता; योगनी दृढ भूमिका एथी, इमनणो परिहार. योगने. ॥ ९ ॥ अनन्य विषयरूपनी निवृत्ति, तद्धेतु शुभ थायजी; समाहित पूर्वक ज्ञानथी अमृत. शुभ अनुष्ठान सुहाय. ॥ १० ॥ योगनी पूर्व सेवा योगभूमि, चरमावर्ते पायजी; बुद्धिसागर योगना योग्य ज, नरनारी ते गणाय. योग. ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, योगभूमिका सेवार्थे जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

॥ प्रथमा अध्यात्मयोग पूजा ॥

प्रभु वचनानुसारथी, तत्त्वनी चिंता थाय; गृहीत्यागी बन युक्तने, मैत्र्यादि भाव सुहाय. ॥ १ ॥ आत्मज्ञानने आत्मनी, शुद्धिनुं अनुष्ठान, द्रव्यभाव अध्यात्मनो, योग भलो गुण खाण. ॥ २ ॥

न रुचे, रुडा प्रगटे विचारजो; योगनी दृढ भूमिका एवी, दंभतणो परिहार. योगने. ॥ ९ ॥ अनन्य विषगरलनी निवृत्ति, तद्धेतु शुभ थायजी; समकित पूर्वक ज्ञानथी अमृत, शुभ अनुष्ठान सुहाय. ॥ १० ॥ योगनी पूर्व सेवा योगभूमि, चरमावर्ते पायजी; बुद्धिसागर योगना योग्य ज, नरनारी ते गणाय. योग. ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, योगभूमिका सेवार्थं जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

॥ प्रथमा अध्यात्मयोग पूजा ॥

प्रभु वचनानुसारथी, तत्त्वनी चिंता थाय; शुद्धोपयोगी मन मुक्ने, मैत्र्यादि भाव सुहाय. ॥ १ ॥ आतमज्ञानने आत्मनो, शुद्धिनुं अनुष्ठान, द्रव्यभाव अध्यात्मनो, योग जलो गुण मान. ॥ २ ॥

संयम स्थिरता संपजे, ध्यानथी केवल ज्ञान. ॥ १ ॥ ध्याननो भेद समाधि छे, मति श्रुतज्ञाने ध्यान; साकारी उपयोगथी, अंतर्मुहूर्त प्रमाण. ॥ २ ॥ आतम आदि तत्त्वमां, उपयोगे एकतान; अंतर्मुहूर्त ध्यान छे, ध्यान प्रवाह बहु मान. ॥ ३ ॥ आर्तरौद्र बे परिहरी, धर्म शुक्ल बे ध्यान; ध्याइए उपयोगथी, जीव धने भगवान् ॥ ४ ॥

हे सुखकारी आ संसारथकी जो मुजने उद्धरे.

ए राग.

महावीर प्रभु तुज ध्याने लय लागी बीजुं नहीं गमे; हें ध्यान धर्युं बार वर्ष लगी तेमां मुज आतम रमे, त्हें ध्याने केवल प्रगटाव्युं; मुज मनमां ध्यान ते शुभ भाव्युं, ध्याने प्रगटे सुख समजायुं. महावीर. ॥ १ ॥ वायु वण दीप शिखापेरे, आतम ध्याने आनंद व्हेरे; रहेवुं शुद्धातम निज व्हेरे. म

हावीर. ॥ २ ॥ मेरुपरे स्थिर ध्याने थावुं, अंतरमां साक्षी थै जावुं; ध्याने आतम पोते ध्यावुं. महावीर. ॥ ३ ॥ पिंडस्थ पदस्थ ने ध्याइजे, रूपस्थने दिलमां पाइजे; रूपातीतथी शिव पाइजे. महावीर. ॥ ४ ॥ आतम ध्याने लगनी लागे, ऋद्धि सिद्धि लब्धि जागे, घातीकर्मो वेगे भागे महावीर. ॥ ५ ॥ शुद्धातम उपयोगे रहीए, आनंदोल्लासे गहगहीए; जीवंतां मुक्ति सुख लहीए. महावीर. ॥ ६ ॥ खेद उद्वेग भ्रमने परिहरीए उत्थानने क्षेपने झट हरीए; आसंग त्यजी ध्यान ज धरीए. महावीर. ॥७॥ अन्यत्र प्रेमने नहीं करीए, रागोदयमां स्थिरता धरीए; संकल्प विकल्पने परिहरीए. महावीर. ॥ ८ ॥ शुक्लध्याननी भावना भावीए, आतम ज्ञाली प्रगटावीए, आतम गुणपर्याय ध्यावीए. महावीर. ॥९॥ मनवचनतनुनी स्थिरता करीए, कदि मोहना मार्या नहीं मरीए; आतम महावीरदशा वरीए. महावीर. ॥ १० ॥ ध्याने ज्ञानादिक गुण सिद्धि, क्षायिक नव

प्रगटे षट लब्धि; बुद्धिसागर आनंद ऋद्धि. महावीर. ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ध्यानयोग पूजार्थं. जलं० य० स्वाहा.

चतुर्थी समता योगपूजा.

समताथी शिव संपजे, आठ कर्म दूर जाय; समता प्रगट्या वण कदि, कोइ न मुक्ति पाय. ॥१॥ सर्व योगशिरोमणि, समतायोग महान्, राग रोष छे विषमता, त्यजे स्वयं भगवान् ॥ २ ॥ सर्वधर्म दर्शनविषे, समभावे छे मुक्ति; समता दिलमां धारोए, सर्वयोग वर रीति ॥ ३ ॥

चगडानो वाशीरे मोरनिद नारियो. ए राग.

प्रभु महावीर समतागुणना दरियारे, रागने रोष विषमता परिहरी; समता गुणथी भरिया जोशे तरियारे, ममताने त्यागेरे समता छे खरी. समताधारे शिवसुख थाय छे, ममता ने अहंता दूरे —

दिक वासना टाळीरे, लोकादिक संज्ञारे टाळेरे समपणुं; पंचेन्द्रिय विषयोनी कामना टळतांरे, मनमांरे प्रगटे नहीं विषमीपणुं. समताने० ॥ ७ ॥ समताए आनमनुं सुख अनंतुंरे, तेनीरे आगळ जडसुख नहीं कस्युं; अहंपणुं ममता टाळतां ज्ञानेरे, ज्ञानीना दिल्मां अनुभव सुख वस्युं. समताने० ॥ ८ ॥ जडचेतनमां समभावी उपयोगीरे, एवोरे आतम हुं साक्षी रह्यो; कर्मविपाकमां मुंझुं नहीं समभावेरे, उपयोगे एवो निश्चय में लह्यो. समताने० ॥ ९ ॥ प्रभु महावीर!!! हुं तुज समता अनुसरतोरे, शुद्धातम महावीर पदने पामशुं; आतमज्ञाने शिवपुर दोडुं मीठुंरे, पामीशुं योगथकी त्यां ठामशुं. समताने० ॥ १० ॥ समतायोगने उपयोगे दिल धरीएरे, वरीएरे मुक्ति दशा जीव्याठले. बुद्धिसागर समतासंगी रंगीरे, मुक्तिरे सर्व धर्म समताछते. समताने० ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्री परम० समतायोग पूजार्थं जलं० य० स्वाहा ॥

॥२॥ धर्मार्थे शुभ परिणामे, काया वाणी धर्मनी ठामे; प्रशस्यकषायना ठामे, शुभ दर्शन चारित्र ठामेरे. महावीर. ॥ ३ ॥ सेवाभक्ति शुभ प्रवृत्ति, शुभ योगे आतम व्यक्ति; सात्विक परिणामनी शक्ति, शुभयोगमां शुभ आसक्तिरे. महावीर. ॥ ४ ॥ शुभ वृत्ति टळे शुद्धभावे, शुद्ध उपयोग ध्यान प्रभावे; संविकल्पता दूरे जावे, मनोवृत्ति व्यापार न थावेरे. महावीर. ॥ ५ ॥ टळे सर्व कषायो ज्यारे, प्रगटे केवल ज्ञान त्यारे; मनोवृत्ति रहे न लगारे, घाती कर्मो रहे नहीं पारेरे. महावीर. ॥ ६ ॥ शुभाशुभ चित्तवृत्ति विनाशे, शुद्ध उपयोग वीर्योल्लासे; श्रुत उपयोगना अभ्यासे, शुद्ध आतम ज्ञान विकासेरे. महा. ॥ ७ ॥ सयोगी गुण स्थान सुहावे, पछे अयोगी थे शिव जावे; साधन योग अभाव ज थावे, सिद्ध बुद्ध परम प्रभु थावेरे. महावीर. ॥ ८ ॥ एक एकज योगे अनंता, जीवो मुक्ति पदने वरंता; आतम शुद्धिमां सर्वे मळंता, जाणे सापेक्षज्ञाने संतारे. महावीर. ॥ ९ ॥

पंचपरमेष्ठी पूजा.

प्रणमु प्रभु महावीर जिन, चोवीसमा अरिहंत; वर्तमान शासनपति, परमेश्वर शिवकंत. ॥१॥ परमेष्ठी पूजा रचुं उत्तम आतम क्षेम; भणतां सुणतां आचरे, नासे सब क्लेश. ॥ २ ॥ अर्हन् सिद्धने सूरिजी, वाचक मुनि जयकार. परमेष्ठी मंगलकरा, सुख शांति दातार. ॥ ३ ॥

प्रथम अरिहंत पद पूजा.

षट् निक्षेपे ध्यावतां, स्तवतां पूजतां सार; अरिहंत प्रभु वंदतां, कर्म टळे निर्धार. ॥१॥ अरिहंत छे ध्यानमा, गुण पर्याये शुद्ध प्रभु भजतां निज ध्यानमा, थावे प्रभु जिन बुद्ध. ॥ २ ॥ दोष अढार रहित विभु, अरिहंत जिनराज; पूजतां प्रगटे प्रभु, त्रण भुवन शिरताज. ॥ ३ ॥

राग वेलावल. मेरु शिखर न्हवरावे हो जिन-
पति. ए राग.

अरिहंत जिनपति भजीए हो भावे, अरिहंत जिनपति भजीए ॥ द्रव्यने जावथी वीशस्थानक पद, हर्षोल्लासे आराधे; अनंतपुण्यमयी जिननामने, बांधी प्रभुपद साधे हो. अरिहंत जिनपति भजीए जावे० ॥ १ ॥ समवसरणमां जाव अरिहंत, जविजनने उपदेशे; त्रण्यकाल जिनवर पूजंतां; मनतुं न रहे जवक्लेशे हो. अरिहंत० ॥ २ ॥ द्रव्य गुण पर्याय अरिहंत, आतम आप स्वरूपी; बुद्धिसागर प्रेम प्रतीते; चिदानंदफलरूपी हो. अरिहंत० ॥ ३ ॥

ॐ० प० अर्हत्पद पूजार्थ ज० य० स्वाहा.

द्वितीया सिद्ध पूजा.

चउ निक्षेपे सिद्ध पद, सेवंतां नर नार; अष्ट कर्म क्षय झट करी, सिद्ध बने निर्धार. ॥ १ ॥ शुद्ध बुद्ध परमातमा, सिद्ध प्रभु जगवंत; परब्रह्म पर-

मेश्वरा, पूजंता भविसंत. ॥ २ ॥ आतम गुण पर्यायनो, पूर्ण शुद्धि जे थाय; ते निज पर्यव सिद्धता, आतममांहि समाय. ॥ ३ ॥

प्रभु दर्शन मोहनगारा. ए राग.

प्रभु परमातम रढ लागी, प्रभु सिद्धनी प्रीतडी जागीरे. प्रभु ॥ आठे कर्म रहित शुद्ध आतम, आठगुणे वडभागी; गुण एकत्रिंश अनंत गुणीजे, थयो प्रभुपद रागीरे. प्रभु. ॥ १ ॥ षडनिक्षेपे सातनये सिद्ध, जाणंतां लय लागी; आतम ते सिद्ध बुद्ध प्रभु छे, सत्ताए सोभागीरे. प्रभु. ॥ २ ॥ आतम पूरण शुद्धि सिद्ध ते, पूजंतां वैरागी; बुद्धिसागर निर्भय देशी, निर्मोही महात्यागीरे. प्रभु. ॥ ३ ॥

ॐ० प० सिद्धपद पूजार्थं ज० य. स्वाहा.

तृतीया आचार्य पद पूजा.

छत्रीशी छत्रीशी गुणवन्ते, गुणी जे ज्ञानी महंत; पंचाचारने पाळता, पूजु सूरि संत. ॥ १ ॥ द्रव्यादिक अनुसारथी, श्री सूरि गुणवंत; भावथी आतम सूरि छे, पूजो प्रणमो संत. ॥ २ ॥ नय निक्षेपथी सूरिपद, निजपरने हितकार; निश्चयने व्यवहारथी, पूजो नरने नार. ॥ ३ ॥

राग देशाख.

जगत्मां सूरीश्वर जयकारो. जिन शासननो शोभाकारो, प्रभु पेठे उपकारी. जगत्. ॥१॥ छत्रीशी छत्रीशी गुणगण शोभित, पंचाचारी विहारी; कलिकाले प्रभुपाटे प्रभुसम, संघ सकल आधारी. ज. ॥ २ ॥ जैनधर्म वर्तावे जगमां, निश्चयी जे व्यवहारी; शुक्लातम शुद्ध्यान समाधि, गता आनंदकारी. ज. ॥ ३ ॥ ज्ञानमज्ञानी जे मन्तानो, आतम

ाचक पूजानी बलिहारी. वाचक० ॥ १ ॥ ज्ञानानु-
ासमुखनो कपारी, पंच महाव्रत पंचाचारी. वा०
ुनिगण पाठक जगहितकारी, श्रुतरसिया संयम
ुणधारी. वाचक० ॥ २ ॥ पूजी वंदी वाचक पदने,
ानंद पामो नरनेनारी; बुद्धिसागर गुरु अवतारी,
वाचक जगमां छे सुखकारी. वा० ॥ ३ ॥

ॐ० वाचक पद पूजार्थं ज० य० स्वा०

॥ पंचमी साधुपद पूजा ॥

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रनी पदवी न इच्छुं छेक;
ुप पद साधु संगति, इच्छुं रहे न क्लेश० ॥ १ ॥
ुं मुनिपद प्रेमथी, इच्छुं मुनिवर संग; सच पन
ाधु संगनें, प्रगटे ज्ञान तरंग ॥ २ ॥ संयमी प्रभु
त्स्वाय छे, विनाशे मोहाविज्ञान; प्रभुदर्शन प्रभु
ाप्तिमां, साधु दयाल ज ज्ञान ॥ ३ ॥

कलश.

गाइ गाइरे पंच परमेष्ठी पूजा गाइ, ओगणेश अष्टोत्तर अक्षयबीज, चढते प्रहरे रचाइ: शांति तुष्टि पुष्टि सिद्धि,–देनारी सुखदाइरे. पंच. ॥ १ ॥ प्रभु महावीर पट्ट परंपरा, तप गच्छ जग सुखदायी; जगगुरु हीरविजय सूरिराजा, सहुगच्छमांही सवाइरे. पंच० ॥ २ ॥ सागर शाखा पट्ट परंपरा, रविसागर गुरुराजा; सर्व मुनि गणना शिरताजा, मुनि गुणगणनी माझारे. पंच. ॥ ३ ॥ रविसागर शिष्य-गण सुखसागर, शांत दांत सुखदायी; गुरुकृपाने आशीर्वादे, आतम स्थिरता पाइरे. पंच. ॥ ४ ॥ पंच परमेष्ठी पूजा रची शुभ, आनंद मंगलदायी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि कीर्ति जयगुण छायोरे. पंच ॥५॥

ॐ० मुनिपद पूजार्थं० ज० य. स्वाहा.

ते नियमा भव करेरे, टाळे कर्मना क्लेशरे. चेतन. ॥ ९ ॥ क्षयोपशम समकित भलुंरे, प्रगटे वार अ-संख्य; क्षायिक एकज वारथीरे, आतम करे निःशंके. चेतन. ॥ १० ॥ यदा समकित प्रगटे तदारे, देव गुरुपर राग; धर्मराग श्रद्धा घणीरे, मिथ्याचारनो त्यागरे. चेतन. ॥ ११ ॥ साधु संतना योगथीरे, भद्रक गुणी नयसार; समकित पाम्यो अंशथीरे, थन्यो प्रभु अवताररे. चेतन. ॥१२॥ तीर्थंकर महावीरनोरे, आतम चढ्यो गुण थान; ऋषभदेव पौत्रज थयोरे, पाम्यो बहुश्रुत ज्ञानरे. चेतन. ॥ १३ ॥ मरिचि नामे मुनि थयोरे, बीजा लह्या अवतार; एकार समकित लहेरे, पडे रहीये चढे साररे. चेतन. ॥ १४ ॥ समकित चारित्र करणीएरे, भवनो निश्चय अंत; बुद्धिसागर वीरनारे, गुणमहो मतिमंतरे. चेतन. ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय,

सांभळजो सखियां हमारी ए चाल.

नमुं नंदन मुनि जयकारो, धन्य मुनिवरनी बलिहारी ॥ करे मास खमण तप भारी, वीस स्थानक सेवना सारी; थया उत्कृष्टा अनगारीरे, भावे भावना शुद्ध विचारो; दउ विश्वजीवो उद्धारी. नमुं. ॥ १ ॥ करुं शासन रसी नरनारी, दुःख दृष्टि टळे दुःखकारी; सर्वजीवविषे उजियारो, करुं भावना एवी सारीरे; प्रगटी शुभ परिणति वधारी, बांध्युं तीर्थंकर पद भारी. नमुं. ॥ २ ॥ प्रत्याख्यानी कषाय विरामे, दुष्ट संज्वल परिणति वामे; धर्म ध्यानावलंबन ठामे, वधता उज्ज्वलपरिणामेरे; छट्टा गुणस्थानकना धारी, धन्य धन्य मुनि अनगारी. नमुं. ॥ ३ ॥ रागद्वेषनी परिणति टाळे, समता सुखमांहि म्हाले; शुभ अशुभ बुद्धिने खाळे, निज आतममां मन वाळेरे; जेणे कंचन कामिनी टाळी, जडथी मूर्च्छा उतारी, नमुं. ॥ ४ ॥ क्षयोपशम

ચારિત્ર પાળે, પ્રગટયા દોષો ઝટ ટાળે; પડાવશ્યકે ગુણ અજવાળે, કરે મોહથી યુદ્ધજ ભારેરે; નહીં દિલમાં અગ્નિ ધારી, ઉપયોગે રહે हितकारी. नमुं ॥ ૫ ॥ ચાર ભાવના દિલમાં લાવે, शुद्ध आतम રૂપને ધ્યાવે; સહે ઉપસર્ગો समभावे, एवा संत મળે શિવ થાવેરે; એવા સરાગ संयमधारी, धन्य नंदન મુનિ સુખકારી. નમું. ॥ ૬ ॥ धन्य चारित्री ગુણધારી, દ્રવ્ય ગુણપર્યાય विचारी; वन्या द्रव्य क्रिया વ્યવહારી. જે निश्चय उपयोग धारीरे; बुद्धिसागर મુનિ મહારાજા, મુરપતિ नरपति शिरताजा. नमुं. ॥ ૭ ॥

ૐ હ્રીં શ્રી ૫૦ શ્રીમતે મહાવીર जिनेन्द्राय, જલં, ચંદનં પુષ્પં, ધૂપં, દીપં, અક્ષતં, नैवेद्यं च संयमगुणलाभाय य० स्वाहा ॥

तृतीया प्राणांत स्वर्गगमनदशावर्णन पूजा.

आयु क्षये नंदन मुनि, दशमा स्वर्ग मझार, उपज्या वीश सागर उपम, आयुथी जयकार. ॥१॥ मति श्रुत अवधिज्ञानना,–धारक सुर सुखकार; पूर्व भवोने जाणता, शुभ परिणामो उदार. ॥२॥ जोगवे मनथी जोगने, पण नहि जोगी जेह; सम्यग्दृष्टि देवने, वर्ते नहि संदेह. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयम रागे–ए राग.

सांभळशो महावीर प्रभुनो, छवीशमो भव सारोरे; मतिश्रुत अवधिना उपयोगे, जातो सुर जन्मारोरे. सांभळशो० ॥ १ ॥ सराग संयम तप जप कर्मे, स्वर्ग गतिने पामेरे; सम्यग्दृष्टि, मुक्ति माटे, विचरे रहे विश्रामेरे. सांभळशो० ॥ २ ॥ वैक्रिय देही पुद्गल शक्ति,–धारक शक्तिधारीरे; धर्मीजीवोने सहाय करंता, कर्मयोगी उपकारीरे. सां० ॥३॥ शुक्र

ना.थइ, जेनी निर्मल ज्योत. ॥ ३ ॥ छप्पन दिशि कुमरी तुरत, आवी प्रभुने पास; सूति कर्म जावे कर्यु, माता हर्ष उल्लास. ॥ ४ ॥

॥ मेरु शिखर न्हवरावे हो सुरपति० ॥ ए राग ॥

प्रभु जन्म्या ते काले हो सुरपति, सघळा मळी झट आवे; प्रभुनी माता पासे आवी, प्रभु प्रणमीने वधावे हो; सुरपति सघळा मळी तिहां आवे. ॥ १ ॥ प्रभु बिंब मूकी प्रभुपासे, प्रभुने मेरु लेइ जावे; आठ जातिना कलश भरीने, स्नात्र करी गुण गावे हो; सुरपति प्रेमे प्रभु न्हवरावे. ॥ २ ॥ चोसठ इन्द्रो प्रभु गुण गावे, हैडे हर्ष न मावे; प्रण्य जगतना नाथने ध्यावे, भक्ते उल्लसित थावे हो; सुरपति प्रेमे प्रभु न्हवरावे. ॥ ३ ॥ चार निकायना देव देवीओ, इन्द्रो असंख्य त्यां आवे; विधिए पूजं प्रभुने मातनी,-पासे मूकी जावे हो. सुरपति. ॥४॥ प्रातःकाले जन्मने जाणी, सिद्धारथ नृप जावे; प्र

गे जाएयो जातो. प्रभु. ॥ २ ॥ गुण अनंत पर्याय रियोरे, चोत्रा सात्विक गुणगण भरियोरे. उपदेशेरे ार्या जीव करोडो, जडे नहीं तुज जगमां जोडो. प्रभु. ॥ ३ ॥ प्रभु देह छतां साकारारे, देहातीत रतां निराकारारे; थया सिद्ध ज रे पूर्ण असंख्यप्र- देशी, अरिहंत अलख ब्रह्म देशी. प्रभु. ॥ ४ ॥ जे आतम नहि ते शुं ? मागुंरे, मेंतो मागणपणुं हवे त्यागयुंरे;प्रभु परखीरे निष्कामी थै जाग्यो, तुज लगनी- ए घट जाग्यो. प्रभु.॥५॥ पूर्ण प्रभुथी पूर्ण रंगायोरे, पूर्ण आनंद घटमां छायोरे; बुद्धिसागररे पूर्णनी पूरण पूजा, उपयोगे महावीर पूज्या. प्रभु. ॥ ६ ॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय, चंदनं. य. स्वाहा.

॥ तृतीया पुष्पपूजा. ॥

प्रभु महावीर जकिथी, मुक्ति लहे नरना
प्रभु गुण पुष्पनी मालथी, पूजो प्रभु जयकार. ॥१

न आधार; एक आधार प्रभु तुंहिरे, आनंदमय निर्धार. प्रभु० ॥ ५ ॥ सेवा आदि गुणमयीरे, सात्विक पुष्पनी माल; प्रभु महावीर कंठमांरे, स्थापंता कल्याण. प्रभु० ॥ ६ ॥ वुज स्वरूप थइ वुजमुंरे, चडता जावोल्लास; बुद्धिसागर आतमारे, आनंद अनुजव खास. प्रभु० ॥ ७ ॥

ॐ प० महावीर जिनेन्द्राय पु० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी धूप पूजा.

देव गुरुने धर्मनी, श्रद्धा समकित खास; गुरु पासे समकित ग्रही, टालो मिथ्यावास. ॥ १ ॥ खेद भीति ने द्वेष पण, प्रजुने पूजे भक्त; देहादि जडसंगी पण, मन नहि जक आसक्त. ॥ २ ॥ प्रभु नामना जापनो-धूप करी नरनार; प्रभुने पूजे प्रेमथी, कर्म टले निर्धार. ॥ ३ ॥

॥ पंचमी दीपक पूजा ॥

मतिश्रुत ज्ञानना दीपके, पूजा महावीर देव; करतां दुर्गुण दोष सहु, नासे ते ततखेव. ॥ १ ॥ मिथ्या तम दूरेटळे, दीपक पूजा योग; केवल ज्ञानने दर्शने, मुक्तिपुरो संयोग. ॥ २ ॥ निरोभाव निज ऋद्धिनो, आविर्भाव जे थाय; आतममहावीर सिद्धता, देहछतां सोहाय. ॥ ३ ॥

आशा ओरनकी क्या कीजे. ए राग. आशाउरी. ॥

घटमां महावीर जिनवर भास्या, आपो आप प्रकाश्या. घटमां० चौदलोक आकारे मनुष्यनुं, तनु मन्दिर जयकारी; असंख्यप्रदेशी आतममहावीर, शोभंतुं सुखकारी. घटमां० ॥ १ ॥ गुरुगम ज्ञाननी कुंचीयोगे, समकित द्वार उघाडयुं; मतिश्रुत आवे अनंत ज्योति, प्रभुनुं रूप निहाळ्युं. घटमां० ॥ २ ॥ अनहद नादनो घंट वगाडयो, छठी रुठी नमो

प्रभु पाये; आनन्द प्रगट्यो अतिशय तारी, त्रण भुवन न समाये. घटमां० ॥ ३ ॥ दिल फानस मन कोडीयामां, प्रीति घृत प्रभु मांहे; सद्विचार दीवेट करी शुभ, ज्ञानाग्नि जगियाहे. घटमां० ॥ ४ ॥ धर्म बुद्धिनो दीपक प्रगट्यो, झळहळतो प्रभु ज्योते; प्रभु महावीर पासे शोभे, क्षयोपशम उद्योते. घटमां० ॥ ५ ॥ क्षयोपशमना ज्ञान दीपकथी, महावीर जिनवर पूज्या. बुद्धिसागर गुरुकृपाए, सत्य प्रकाशे सूझ्या. घटमां० ॥ ६ ॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय–दीपं य० स्वाहा.

षष्ठी अक्षत पूजा.

अक्षत महावीर रूपनी, अनंत झळहळ ज्योत; अक्षतथी प्रभु पूजतां, त्रण भुवन उद्योत. ॥ १ ॥ दया दान दमशीलने, संतोषे महावीर; पूजतां निज आतमा, शुद्ध थने महावीर ॥ २ ॥ सात्विकने जे

रसिपो, थातां प्रगटी खुमारी; कोटि प्रयत्नो कोइ करे पण, उतरे नहि ते उतारी. प्रभु तुज आनंद रस बलिहारी. ॥ २ ॥ तुज रस पामे विषयरस छूटे, मनडुं ठरे निर्धारो; सेवा भक्ति आतमज्ञाने, तुज रस मळतो भारो. प्रभु० ॥ ३ ॥ कोटि उपाय करे जन कोइ, सत्यानन्दने माटे; पण जड जगथी न आनंद पामे, आनंद छे तुज हाटे. प्रभु० ॥ ४ ॥ अमृत आस्वाया पछी विषना,–पाननो प्रेम न जागे; एकवार तुज रसने पामे, मन न रहे जडरागे. प्रभु० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम आतम रस पामी, क्षायिक आनंद माटे; सहेजे तुजमां मन रंगायुं, मारा छे शिरने साटे. प्रभु० ॥ ६ ॥ आनंदरस नैवेद्य पूजुं, बाह्य नैवेद्यथी पूजुं; बुद्धिसागर महावीर पामी, बीजे क्यांये न मुंझुं. प्रभु० ॥ ७ ॥

ॐ० प० महावीर जिनेन्द्राय–नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

विनतिपणे हुं विनवुं, घेर आवोने ढोला. ए [illegible]

क्षयोपशम उपशम फले, प्रभु पूज्या [illegible]
निमित्त साधन साधना, साधुं प्रीतिभावे. [illegible]
शम० ॥ ३ ॥ प्रभु पूजन फल ज्ञानने, आनंद [illegible]
लीधुं; प्रभु रीझे जग त्रीजमां, लेश चित्त न [illegible]
क्षयोपशम० ॥ ४ ॥ बाकी क्षायिक भावथी, [illegible]
फल रहियुं; शुद्धातम तुज रंगमां, [illegible]
हियु. क्षयोपशम० ॥ ५ ॥ उत्पत्ति [illegible]
सर्व द्रव्य प्रमाण्यां; सम्यग् दृष्टि [illegible]
पनो जाण्यां. क्षयोपशम० ॥ ६ ॥ [illegible]
भक्ति,—व्यवहारे; रहियो प्रभु [illegible]
विचारे. क्षयोपशम० ॥ ७ ॥ [illegible]
पडदामां रहेलो; बुद्धिसागर [illegible]
मेळो. क्षयोपशम० ॥ ८ ॥

श्री घंटाकर्ण महावीर पूजन विधि.

श्री शांति स्नात्र अष्टोत्तरी स्नात्र तथा प्रतिष्ठा प्रसंगे पूर्वाचार्य मुनियोए घंटाकर्ण महावीर मंत्रयंत्रनी थाळी थापवानुं जणाव्युं छे अने ते प्रमाणे वर्तमानमां प्रवृत्ति थाय छे. तथा देवप्रतिष्ठा शांति स्नात्र काले घंटाकर्ण महावीरना मंत्रनो १०८ वार जाप करीने सुखडी सहित मंत्रनी स्थाळी वांधो स्थापवामां आवे छे. घंटाकर्ण महावीरनी श्री महुडी (मधुपुरी) गाममां श्री पद्मप्रभु जिन मंदिरनी बहार देरी छे, तेमां घंटाकर्ण महावीरनी मूर्ति स्थापवामां आवी छे. घणा भक्तो ना आग्रहथी वीरनी पूजा रचवामां आवी छे, तथा आरती रचवामां आवी छे. गुरुगम पूर्वक पूजा जणाववी अने करवी. शासन रक्षक वीर तरीके पूर्वाचार्योए घंटाकर्ण महावीरने स्थाप्या छे. घंटाकर्ण महावीर कल्प ये ग्रन्थ जानिता छे. कलिकालमां शासन प्रभावक वीरना अनेक चमत्कारो थाय छे. सम्यग् दृष्टि वीर ते सम्यग् दृष्टिपोने स्वधर्मी तरीके

गमां स्थापेरे. घंटाकर्ण० ॥ ४ ॥ महिमा त्हारो जग गाजे, ज्यां त्यां जय डंको वाजे; समरे रहेशो हजरा हजूर, त्हारु विरुद न लाजेरे. घंटाकर्ण० ॥ ५ ॥ वनमां रणमां सागरमां, पृथ्वीतलमां अंबरमां; करोने धर्म कर्ममां लाज, दरबारे ने घरमांरे. घंटाकर्ण०॥६॥ धूपे पूजी गुण गावुं, सम्यग् दृष्टि दिल लावुं; बुद्धि-सागर शासन देव, जगमां स्थापी भावुंरे. घंटाकर्ण० ॥ ७ ॥

मंत्र—ॐ घंटाकर्ण महावीराय, सर्व रोगोपद्रव शमनाय, इष्ट लाभाय. शांति तुष्टि पुष्टयर्थं धूपं यजामहे स्वाहा.

द्वितीया दीपक पूजा.

सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव सुख आपो. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर बळिया धीर, शांति जगमां

मुज० बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि, कीर्ति जय जग पा-
वशोरे. मुज० ॥ ५ ॥

कलश गीत.

गायो गायोरे एम शासन वीरने गायो, पंच प्रकारे पूजा रचीने, समकित शुद्धिए छायोरे. एम० ॥ १ ॥ घंटाकर्ण महावीर पूजा, कीर्तनथी गुण पायो; सम्यग्दृष्टिदेवनी स्तुति, करतां हर्षे उमाह्योरे. एम० ॥ २ ॥ तपगच्छ सागर शाखा मांहि, नेमिसागर गुरु रायो; रविसागर गुरु सुखसागर गुरु, जैनधर्म फेलायोरे. एम० ॥ ३ ॥ साधु आदि सर्व संघनो, वृद्धि थाशो वसायो; सर्व प्रकारे उन्नति थाशो, आशीर्वाद सुहायोरे. एम० ॥४॥ ओगणिश अठ्योत्तर अक्षय त्रीज, विजापुर जयकारो; बुद्धिसागर चढते पहोरे, सुख पामो नरनारीरे. एम० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ घंटाकर्ण महावीराय, सर्व क्षुद्रापद्रव रोग निवारणाय, इष्ट फललाभाय फलं यजामहे स्वाहा ॥

ॐ अर्हं महावीर शांतिः

आत्म महावीर शासन राज्ये, सेवा कारक जगमां गाजे; बुद्धिसागर आतम काजे, क्षण क्षण व्हेलो सहाये थाजे. घं० ॥ ७ ॥

गुरुनी आरती.

जय जय गुरुवर जग जयकारी, आरती करतां आनंद भारी. जय० मही थाळीमां शशी सूरजनी, आरती कुद्रते प्रेमे उतारी. जय० ॥ १ ॥ पिंड अने ब्रह्मांडमां मति श्रुत,–आरती थाती जग उपकारी. जय० केवलज्ञाननो मंगल दीवो, थातो गुरुगम ज्ञान विचारी. जय० ॥ २ ॥ जड चेतन सौन्दर्य प्रसारी, सहेजे आरती करे हितकारी. जय० आगत टाळे आरती सारी, युगोयुग जीवो गुरु गुणकारी. जय० ॥ ३ ॥ आरती करनारां नरनारी, आनंद पामो मोह निवारी; समकित दाता गुरु सुखकारी, जग चिंतामणि जग उपकारी. जय० ॥ ४ ॥ सेवा भक्ति गुन

भर्यु नारी, कर्मयोग दीवेट ने मारी; बुद्धिसागर गुरु व्यवहारी, ताथरी जाउं सदा बलिहारी. जय० ॥५॥

॥ मंगल दीपक ॥

जग गुरु जग जय मंगल दीवो, चतुर गुरु जग चिरंजीवो. जग० चन्द्र सूरज ग्रह फरना फेरा, गुरुना प्रकाशे रहे न अंधेरा. जग० ॥ १ ॥ वेदागम तुज महिमा गावे, गुरु कृपाथडे मुक्ति थावे. जग० निश्चय भावथी मंगलरूपी, सदसद्रूपी रूपारूपी. जग० ॥ २ ॥ पंचभूत उपमा नहीं पावे, अलख कळा नहीं समजी जावे; बुद्धिसागर मंगल माला, पामो ऋद्धि वृद्धि विशाला. जग० ॥ ३ ॥

जिनेश्वर देवनी आरती.

अप्सरा करती आरती जिन आगे ए राग.

जय जिनवर जिनराजजी जयकारी, परमेश्वर जग उपकारी; जग जीवोने हितकारी, तार्या नरने नार. जय० ॥ १ ॥ चन्द्र सूरज तुज आरती रूप शोभे, तुज महिमाए जग थोभे; तुज महिमा अपार. जय० ॥ २ ॥ तुज आणाए विश्वमां द्रव्य वर्ते, ज्ञान आज्ञाएज प्रवर्ते; कोइ लोपे न आण. जय० ॥ ३ ॥ देव देवी नर नारीओ मळी नाचे, तुज रूप गुण देखी माचे; बनी भक्ति मगन्न. जय० ॥ ४ ॥ कोटि वर्ष कोटि जीभथी न गवाये, कोटि दिलमां न ध्याता समाये; परा पश्यंती पार. जय० ॥ ५ ॥ घनगर्जे मोर टहुकतो मन हर्षे, खुशी चातक घन जब वर्षे; तुज दर्शने मुज मन तरसे, देखी दिलडुं प्रसन्न. जय० ॥ ६ ॥ मही जलवायु अग्निने नभ पंच, तेनी उपमा न तुजने रंच; तुं तो निरुपम देव. जय० ॥७॥

सर्वमांही ने सर्वथी प्रभो न्यारा सदसद गुण पर्यायाधारा; वीतरागने सर्वज्ञ प्यारा सर्वदेवना देव. जय० ॥ ८ ॥ परमब्रह्म महावीरजी जगत्राता, तुंहि माता पिता ने भ्राता; बुद्धिसागर शां सुख शाता, संघ सकल साज. जय० ॥ ९ ॥

मंगल दीपक.

जय जिनवर तुज जग बलिहारो, विश्वोद्धारक जग उपकारी. जय० मंगलदीवो मंगलकारो, नेथी पूजुं जिन जयकारी. जय० ॥ १ ॥ द्रव्यभाव मंगल अवतारी, तुज भक्तें मंगल निर्धारी. जय० जगमां मोटो मंगल दीवो, विश्व जीवन तुं चिरंजीवो. जय० ॥ २ ॥ शक्ति अनंती अगम अपारा, सर्व जीव दि-लमां छो प्यारा; जय० नय निक्षेपथी निश्चय न्यारा, सर्व विश्वना छो आधारा. जय० ॥ ३ ॥ गुणपर्याय अनंता दरिया, अनंत शक्ति स्वभावे भरिया. जय० नवग्रह इन्द्रादिक तुज वंदा, निशदिन सेव करे सू-रचंदा. जय० ॥ ४ ॥ परमब्रह्म महावीर गवाया, अ-रिहंत परमेश्वर जिनराया; जय० बुद्धिसागर मंगल राया, पूजी प्रेमे तुज गुण गाया. जय० ॥ ५ ॥